सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''केंद्रित'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेन्ट्रलाइट
CENTRALITE

NET ZERO

खंड-48, अंक -3, दिसंबर, 2025

गौरवशाली
विरासत से
उज्ज्वल भविष्य
की ओर

माननीय केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण के साथ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री कल्याण कुमार की शिष्टाचार भेंट।

माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा अमरावती (आन्ध्र प्रदेश) में फाइनेंशियल सिटी के उद्घाटन के अवसर पर बैंक का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री कल्याण कुमार।

कवर पेज डिज़ाइन -
श्री हेमंत कुमार
क्षे. का. मुजफ्फरपुर

संपादक
कुशल पाल

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
डी.पी. खुराना
के.के. काला
हितेन्द्र धूमाल

संपादकीय सहायक
अमित कुमार झा
सुनील कुमार साव
संदीप यादव
शुभी ताम्रकार

Editor
Kushal Pal

Editorial Board
Vasti Venktesh
D. P. Khurana
K. K. Kala
Hitendra Dhumal

Editorial Assistant
Amit Kumar Jha
Sunil Kumar Shaw
Sandeep Yadav
Shubhi Tamrakar

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.
Articles Published in this magazine does not necessarily contain views of the Bank.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
A Quarterly In-house magazine of Central Bank of India
प्रकाशन तिथि - 27.01.2026 • खंड / Vol. 48 - 2025 • अंक - 3 • दिसंबर / December 2025

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 6
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश 7
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ई. रतन कुमार का संदेश 8
संपादकीय 9
श्री ई. रतन कुमार, कार्यपालक निदेशक का संक्षिप्त परिचय 10
जो भी कार्य करें, उसमें शत-प्रतिशत योगदान दें 11
एक सदी से अधिक राष्ट्रसेवा में समर्पित: सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया 13
Integrity: A Foundation for Success 15
भारत में सौर ऊर्जा क्रांति: पीएम सूर्य घर योजना 16
मेरा बैंक: मेरा परिवार 20
Cyber Fraud-Understanding the Types, Motives & Prevention 21
जन- जन का बैंक: सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया 24
ग्रीन डिपॉजिट और ग्रीन फाइनैन्स: चुनौतियाँ एवं अवसर 26
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई में आयोजित 115वें स्थापना दिवस कार्यक्रम के कुछ मनोहारी दृश्य 30
Continuous Clearing: Transforming India's Cheque Truncation Landscape 32
भारत का लक्ष्य: 2047 तक कम-से-कम दो सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों को वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र में शीर्ष स्थान दिलाना 36
नियमित प्रयुक्त अंग्रेजी नोटिंग का हिंदी अनुवाद 39
पदोन्नति 40
सेवानिवृत्ति 40
साक्षात्कार की तैयारी 41
Empowering Our Workforce: An Overview of the Staff Welfare Schemes for FY 2025-26 45
एक शताब्दी से अधिक की सेवा, विश्वास और राष्ट्र निर्माण 46
मेरी आत्मकथा - प्रिंटर 48
मिथिलांचल के दर्शनीय स्थल 50
काव्य कुंज 54
विभिन्न टाउन हॉल एवं मेगा आउटरीच कार्यक्रमों की झलकियां 55
स्थापना दिवस की झलकियां: विभिन्न अंचल 56
खाना खजाना 58

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : श्री कुशल पाल, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाउंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.
Designed, Edited and Published by Mr. Kushal Pal for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

Message from Managing Director & CEO

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष 2026 के आगमन पर, मैं आप सभी एवं आपके परिवारजनों को उत्तम स्वास्थ्य, सुख और सफलता से परिपूर्ण वर्ष के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ.

बीता हुआ वर्ष हम सभी के लिए वास्तव में विशेष रहा है. हमने सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के 115 गौरवशाली वर्षों का उत्सव बड़े गर्व के साथ मनाया. यह केवल एक महत्वपूर्ण उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह दूरदृष्टि, त्याग और समर्पण की वह प्रेरक गाथा है, जो हम सभी को आपस में जोड़ती है.

वर्ष 1911 में सर सोराबजी पोचखानावाला ने एक स्वप्न और गहरी आस्था के साथ हमारे बैंक की स्थापना की थी. तब से लेकर आज तक, अनेक पीढ़ियों के नेतृत्वकर्ताओं और कर्मचारियों ने इस महान संस्था को ईंट-दर-ईंट संवारते हुए आगे बढ़ाया है. मैं उन सभी महान विभूतियों के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ एवं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ। जिनके मूल्य और प्रतिबद्धता आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं.

मैं हमारे उन सम्मानित ग्राहकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जो वर्षों से सेन्ट्रलाइट परिवार का अभिन्न अंग रहे हैं और निरंतर अपने विश्वास, निष्ठा तथा सहयोग से हमें सशक्त बनाते रहे हैं. मैं आप सभी तथा आपके परिवारजनों का बैंक के प्रति अटूट समर्थन और अमूल्य योगदान के लिए हृदय से धन्यवाद करता हूँ.

प्रिय साथियों मैं आप सभी तथा आपके परिवारजनों के निरंतर समर्पण, व्यक्तिगत त्याग और असंख्य योगदान के लिए भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं, जो हमारे बैंक को प्रत्येक दिन और अधिक सशक्त तथा बेहतर बनाते हैं. आपकी प्रतिबद्धता मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और आप जो कुछ भी करते हैं, उसके लिए मैं दिल की गहराइयों से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ.

वर्ष 2026 में प्रवेश करते हुए हमारा आगे का मार्ग एक सरल किंतु अत्यंत प्रभावशाली मंत्र से प्रेरित होगा - C.A.R.E.

C.A.R.E. - ग्राहक प्रथम, राष्ट्र सर्वदा, जन-जन सदैव.

यह केवल एक मंत्र नहीं है. यह एक ऐसी सोच और दर्शन है, जो यह दर्शाता है कि हम कौन हैं, किन मूल्यों पर हम विश्वास करते हैं और हम

Dear Centralites,

As we welcome the New Year 2026, I extend my heartfelt wishes to each one of you and your families for a year filled with good health, happiness and success.

The year gone by has been truly special for all of us. We proudly celebrated 115 years of Central Bank of India. This is not just a remarkable milestone-it is an inspiring story of vision, sacrifice and dedication that connects us all.

In 1911, Sir Sorabji Pochakhanawala founded our Bank with a dream and deep conviction. Since then, generations of leaders and employees have nurtured and built this great institution brick by brick. I express my deep gratitude and respectful homage to all those stalwarts whose values and commitment continue to guide us even today.

I extend my heartfelt gratitude to our cherished customers, who have been an integral part of the Centralite family, for their continued trust, loyalty and partnership over the years. I sincerely thank each one of you and your families- for unwavering support and contributions to the Bank.

My dear colleagues, I also want to thank each one of you and your families-for your unwavering dedication, personal sacrifice and countless contributions that make our Bank stronger and better every single day. Your commitment means everything to me, and I am deeply grateful for all that you do.

As we move into 2026, our path forward will be guided by a simple, yet powerful MANTRA-C.A.R.E.

C.A.R.E. - Customer First, Nation Always, People Forever.

This is not just a MANTRA. This is a philosophy that reflects who we are, what we stand for and how we will

मिलकर किस दिशा में आगे बढ़ेंगे. मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि हमारे लिए इस मंत्र के प्रत्येक अक्षर का क्या अर्थ है.

C - ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता

ग्राहक हमेशा ही सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के केंद्र में रहे हैं. प्रत्येक संवाद, प्रत्येक उत्पाद और प्रत्येक सेवा में संवेदनशीलता, तत्परता और पेशेवर दृष्टिकोण झलकना चाहिए. हमारा उद्देश्य केवल ग्राहकों को संतुष्ट करना नहीं है, बल्कि उन्हें प्रसन्न करना है. उनके बैंकिंग अनुभव को इतना सकारात्मक बनाना है कि वे बार-बार हमें ही चुनें और आने वाली पीढ़ियों तक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया उनका पसंदीदा बैंक बना रहे.

A - आकांक्षात्मक और सतत विकास

हम जिम्मेदार और संतुलित व्यवसायिक विकास की दिशा में आगे बढ़ेंगे, जिसमें हमारे कासा आधार को सुदृढ़ करना, एमएसएमई क्षेत्र को अधिक समर्थन देना और उद्यमशीलता की भावना को प्रोत्साहित करना हमारे केन्द्र बिन्दु रहेंगे. हमारा विकास विवेक, जोखिम अनुशासन और सभी हितधारकों के लिए दीर्घकालिक मूल्य सृजन के साथ संतुलित रहेगा.

R - राष्ट्र निर्माण और विकसित भारत में भूमिका

एक गौरवशाली सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के रूप में, राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी और भी व्यापक है. सरकारी प्राथमिकताओं, वित्तीय समावेशन तथा विकासात्मक पहलों को सक्रिय रूप से समर्थन देकर हम विकसित भारत के संकल्प में - एक सशक्त, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में सार्थक योगदान देते रहेंगे.

E - कर्मचारी का परिवार सहित कल्याण

हमारे कर्मचारी ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति हैं. हमारे कर्मचारियों और उनके परिवारों का कल्याण हमारे प्रत्येक कार्य का आधार है और यह मेरे लिए सदैव प्रमुख प्राथमिकता रहेंगे.

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपना और एक-दूसरे का ध्यान रखें. यह बात सदैव स्मरण रखें कि जब आप आगे बढ़ते हैं और समृद्ध होते हैं, तब आपका बैंक भी प्रगति करता है.

115 वर्षों की इस गौरवशाली संस्था के संरक्षक के रूप में, आइए हम नववर्ष में नव उत्साह, सामूहिक उद्देश्य और अपनी विरासत पर गर्व के साथ प्रवेश करें, साथ ही भविष्य पर हमारा ध्यान पूरी दृढ़ता से केंद्रित रहे.

आइए 2026 को एक यादगार वर्ष बनाएं. उपलब्धियों का वर्ष. प्रगति का वर्ष. एक ऐसा वर्ष, जो हम सभी को गौरवान्वित करे.

मैं एक बार फिर आप सभी तथा आपके प्रियजनों को नववर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ. ईश्वर आप सभी को सदैव उत्तम स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि प्रदान करें.

सस्नेह शुभकामनाओं सहित,

कल्याण कुमार
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

move forward together. Let me explain what each letter means for us.

C-Customer Service Excellence

Customers remain at the very heart of Central Bank of India. Every interaction, every product and every service must be driven by empathy, responsiveness and professionalism. Our goal is not just to satisfy customers. Our goal is to delight them. To make their banking experience so good that they choose us again and again, ensuring that the Central Bank of India remains the preferred banking partner for generations to come.

A- Aspirational and Sustainable Growth

We will pursue responsible business growth with a sharp focus on strengthening our CASA base, expanding support to MSMEs and nurturing entrepreneurial spirit. Growth will be balanced with prudence, risk discipline and long-term value creation for all stakeholders.

R-Role in Nation Building and Viksit Bharat

As a proud public sector bank, we have a larger responsibility towards the nation. By actively supporting Government priorities, financial inclusion, and development initiatives, we will continue to contribute meaningfully to the vision of Viksit Bharat a strong, inclusive, and self-reliant India.

E - Employee Well-Being, Including Families

Our people are our greatest strength. The well-being of our employees and their families is fundamental to everything we do. This remains a core priority for me.

I also urge you to take care of yourselves and each other. And remember this- when you thrive, your Bank thrives.

As custodians of a 115-year-old institution, let us move into this New Year with renewed confidence, unity of purpose and pride in our heritage, while remaining firmly focused on the future.

Let us make 2026 a year to remember. A year of achievement. A year of progress. A year that makes us all proud.

I once again wish you and your loved ones a Very Happy, Healthy and Prosperous New Year 2026. May God bless you with good health and happiness always.

With warm regards,

Kalyan Kumar
Managing Director & Chief Executive Officer

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश

Message from Shri M.V. Murali Krishna, Executive Director

प्रिय सेन्ट्रलाइट्स,

हमारे बैंक की स्थापना वर्ष 1911 में दूरदर्शी एवं दृढ़ निश्चयी सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा की गई थी. उन्होंने न केवल एक पूर्णत: स्वदेशी बैंक की नींव रखी, बल्कि हमें यह भी सिखाया कि राष्ट्र की सेवा और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यप्रणाली सदैव हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए. यह गौरवशाली विरासत आज भी हमें उत्कृष्टता, पारदर्शिता और ग्राहकों के विश्वास को बनाए रखने के लिए प्रेरित करती है.

जैसा कि आप जानते हैं, हमारे कुछ प्रमुख कार्यनिष्पादन संकेतक जैसे लागत-आय अनुपात, सीडी अनुपात, शुद्ध ब्याज मार्जिन तथा सकल एनपीए अभी भी उद्योग मानकों से नीचे हैं. ये संकेतक हमें यह स्मरण कराते हैं कि हमारी सभी गतिविधियों में त्वरित कार्यवाही, उत्तरदायित्व और सतत निगरानी अत्यंत आवश्यक है.

हमारे बैंक के पास 8 करोड़ से अधिक ग्राहक हैं, जिसके चलते क्रॉस-सेलिंग और अप-सेलिंग की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं. सभी शाखाओं एवं कार्यालयों को विद्यमान ग्राहकों का प्रभावी रूप से उपयोग करते हुए व्यवसाय में वृद्धि, ग्राहकों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने तथा बैंक के लिए बेहतर विकास अवसर सृजित करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए.

इस परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान अपेक्षित है:

- **ऋण सृजन एवं शक्तियों का प्रभावी उपयोग:** सभी शाखाएँ एवं अंचल आरएलसीसी एवं जेडएलसीसी के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का समयबद्ध एवं अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करें.
- **निगरानी एवं नियंत्रण:** यद्यपि ऋण स्वीकृति एवं ऋण वृद्धि में सकारात्मक प्रवृत्ति देखी जा रही है, तथापि सभी निर्धारित नीतियों एवं नियंत्रण तंत्रों का कड़ाई से अनुपालन अनिवार्य है. क्षेत्रीय प्रमुखों द्वारा सीपीएसी की गतिविधियों की सतत निगरानी की जाए तथा शाखा स्तर पर किसी भी असामान्य या असंतुलित गतिविधि की तत्काल जाँच कर आवश्यक सुधारात्मक कदम तुरंत उठाए जाएँ.

साथियो, सतत विकास तभी संभव है जब उसके साथ सुदृढ़ प्रशासन, जोखिम अनुशासन और उत्तरदायित्व जुड़ा हो. प्रत्येक शाखा और अंचल की छोटी-छोटी उपलब्धियाँ मिलकर बैंक की समग्र सफलता का मार्ग प्रशस्त करती हैं.

हमारी गौरवशाली विरासत हमें यह प्रेरणा देती है कि चुनौतियों को अवसरों में बदला जा सकता है. उचित प्रयास, समर्पण और निरंतर निगरानी के माध्यम से हम अपने सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं. आइए, हम सभी मिलकर अपने बैंक को उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करें और 1911 से चली आ रही इस यात्रा को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँ. इस मार्ग पर आपके निरंतर समर्पित प्रयासों के लिए मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ.

Dear Centralites,

Our Bank was established in 1911 by the visionary and determined Sir Sorabji Pochkhanawala. He not only laid the foundation of a fully indigenous bank but also taught us that serving the nation and acting with responsibility must always be our top priority. This proud legacy continues to inspire us to uphold excellence, transparency, and the trust of our customers.

As you are aware, some of our key performance indicators such as Cost to Income Ratio, CD Ratio, NIM, and GNPA remain below industry benchmarks. These indicators remind us that accelerated action, accountability, and continuous monitoring are essential in all our operations.

With a customer base of over 8 crore, the opportunity for cross-selling and up-selling is immense. All Branches and Offices must effectively leverage the existing clientele to enhance business volumes, deepen customer relationships, and create better growth opportunities for the Bank.

In this context, attention is required on the following areas:

- **Loan Generation and Effective Utilisation of Powers:** All Branches and Zones must make optimal and timely use of delegated powers under RLCC and ZLCC.
- **Monitoring and Control:** While there is positive traction in sanctioning loans and visible credit growth, strict adherence to all laid-down policies and control mechanisms is imperative. Regional Heads must closely monitor CPAC operations, and any abnormal or disproportionate activity at branch level must be promptly examined, with corrective action taken immediately.

Colleagues, sustainable growth is possible only when it is supported by strong governance, risk discipline, and accountability. The small successes of every branch and zone collectively contribute to the overall success of the Bank.

Our proud legacy reminds us that challenges can be converted into opportunities. With the right effort, dedication, and continuous monitoring, we can achieve all our targets. Let us work together to steer our Bank toward a brighter future and take this journey, which has continued since 1911, to new heights. I thank all of you for your dedicated efforts on this path.

(एम. वी. मुरली कृष्णा M. V. Murali Krishna)
कार्यपालक निदेशक Executive Director

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश

Message from Shri Mahendra Dohare, Executive Director

प्रिय सेन्ट्रलाइट्स,

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का इतिहास गर्व और प्रेरणा से भरा है. 1911 में सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा इस बैंक की स्थापना न केवल एक स्वदेशी बैंक के रूप में हुई, बल्कि यह भारतीय बैंकिंग और राष्ट्रहित की दृष्टि से एक मिसाल भी बन गया. उस समय की चुनौतियाँ और संघर्ष, हमारी आज की प्रगति की नींव हैं.

आज, 115 वर्षों के इस गौरवशाली सफर में हमारा बैंक न केवल आधुनिक बैंकिंग तकनीक को अपनाने में अग्रणी रहा है, बल्कि ग्रामीण वित्तीय समावेशन, डिजिटल लेन-देन और ग्राहक सेवा में नए मानक स्थापित करने में भी सफल रहा है. हमारे स्टाफ की प्रतिबद्धता, पारदर्शिता और कार्यकुशलता ने बैंक को अनेक चुनौतियों के बावजूद मजबूत और भरोसेमंद संस्था बनाया है.

साथियो, इतिहास हमें यह भी याद दिलाता है कि चुनौतियाँ हमेशा मौजूद रहती हैं. वर्तमान में हमें कुछ प्रमुख क्षेत्रों में सतत सुधार की आवश्यकता है- जैसे ऋण वितरण में गति, कासा जमा में बढ़ोत्तरी, एनपीए पर नियंत्रण, मजबूत प्रशासनिक नियंत्रण और जोखिम अनुशासन.

विशेष रूप से, हमारे बैंक की **आस्ति गुणवत्ता** हमेशा हमारी वित्तीय मजबूती और भरोसे का आधार रही है. यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी ऋण और संपत्ति पोर्टफोलियो उच्च गुणवत्ता वाले हों, डिफॉल्ट या निष्क्रिय खातों की निगरानी निरंतर हो, और समय पर रिकवरी व रिस्ट्रक्चरिंग के माध्यम से जोखिम न्यूनतम किया जाए. प्रत्येक शाखा और अंचल की सक्रिय निगरानी और जवाबदेही ही हमारी आस्ति गुणवत्ता को बनाए रखने और बैंक की वित्तीय स्थिति को और मजबूत करने में निर्णायक भूमिका निभाती है.

हमारा गौरवशाली अतीत और वर्तमान प्रगति हमें यह संदेश देती है कि सुसंगठित प्रयास, निरंतर सुधार और समर्पण के साथ हम आने वाले वर्षों में बैंक को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं. आइए, हम सभी मिलकर अपने बैंक को उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर करें और 1911 से निरंतर चल रही इस यात्रा को और गौरवपूर्ण बनाएं.

मैं आप सभी के समर्पित प्रयासों और योगदान हेतु हृदय से धन्यवाद देता हूं.

Dear Centralites,

The history of Central Bank of India is filled with pride and inspiration. In 1911, Sir Sorabji Pochkhanawala established this bank, not only as a fully indigenous institution but also as a benchmark for Indian banking and national interest. The challenges and struggles of that time laid the foundation for the progress we see today.

Over the course of this 114-year journey, our bank has not only led in adopting modern banking technologies but has also successfully set new standards in rural financial inclusion, digital transactions, and customer services. The commitment, transparency, and efficiency of our staff have made the bank a strong and trusted institution, despite numerous challenges.

History also reminds us that challenges are ever-present. Currently, we need continuous improvement in key areas-such as accelerating loan disbursement, increasing CASA deposits, controlling NPAs, and maintaining strong administrative controls and risk discipline.

In particular, the **asset quality** of our bank has always been the foundation of our financial strength and trustworthiness. It is essential to ensure that all loans and assets in our portfolio are of high quality, that defaulting or inactive accounts are continuously monitored, and that risks are minimized through timely recovery and restructuring. Active monitoring and accountability at every branch and zone play a critical role in maintaining asset quality and strengthening the bank's overall financial position.

Our proud legacy and current progress convey a clear message: with organized efforts, continuous improvement, and dedication, we can take the bank to even greater heights in the coming years. Let us all work together to lead our bank toward a brighter future and make this journey, which has continued since 1911, even more glorious.

I sincerely thank all of you for your dedicated efforts and contributions.

With regards,

(महेन्द्र दोहरे Mahendra Dohare)
कार्यपालक निदेशक Executive Director

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ई. रतन कुमार का संदेश

Message from Shri E. Ratan Kumar, Executive Director

प्रिय सेन्ट्रलाइट्स,

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की 1911 से चली आ रही यात्रा भारतीय बैंकिंग के इतिहास में एक गौरवपूर्ण अध्याय है. सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा स्थापित यह संस्था समय के साथ बदलती चुनौतियों को स्वीकार करते हुए निरंतर आगे बढ़ती रही है. हमारी यह विरासत हमें न केवल अतीत पर गर्व करना सिखाती है, बल्कि भविष्य की दिशा भी दिखाती है.

मेरे लिए यह विशेष सौभाग्य की बात है कि मैं ऐसे समय में कार्यपालक निदेशक के रूप में बैंक की सेवा का दायित्व संभाल रहा हूँ, जब बैंक अपने डिजिटल परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण चरण में है. इससे पूर्व, मुख्य महाप्रबंधक के रूप में 'सेंट नियो' जैसे विशेषीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़कर मेरा यह अनुभव रहा है कि तकनीक केवल एक सहायक साधन नहीं, बल्कि बैंकिंग के भविष्य की आधारशिला है.

आज बैंक का डिजिटलीकरण केवल प्रक्रियाओं के स्वचालन तक सीमित नहीं है. यह ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने, परिचालन दक्षता बढ़ाने, जोखिम प्रबंधन को मजबूत करने और निर्णय-प्रक्रिया को अधिक सटीक एवं तेज बनाने का माध्यम बन चुका है. डिजिटल प्लेटफॉर्म्स, डेटा-आधारित निर्णय, साइबर सुरक्षा और नवाचार अब हमारी कार्य संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा हैं.

साथियो, हमारी गौरवशाली विरासत हमें यह सिखाती है कि समय के साथ आगे बढ़ना ही स्थायित्व की कुंजी है. आने वाले समय में हमें तकनीक को और अधिक अपनाते हुए, इसे जमीनी स्तर तक प्रभावी ढंग से लागू करना होगा. प्रत्येक शाखा, प्रत्येक अधिकारी और प्रत्येक कर्मचारी की डिजिटल सहभागिता ही इस परिवर्तन को सार्थक बनाएगी.

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे समर्पित मानव संसाधन, मजबूत संस्थागत मूल्य और तकनीकी दृष्टिकोण के समन्वय से सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया न केवल वर्तमान चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करेगा, बल्कि भविष्य की बैंकिंग आवश्यकताओं में भी अग्रणी भूमिका निभाएगा.

आइए, हम सभी मिलकर अपनी गौरवशाली विरासत को सहेजते हुए, तकनीक के माध्यम से बैंक को उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर करें और 1911 से निरंतर चली आ रही इस यात्रा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ.

आप सभी के सहयोग और प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक धन्यवाद.

Dear Centralites,

The journey of Central Bank of India, which began in 1911, is a proud chapter in the history of Indian banking. Established by Sir Sorabji Pochkhanawala, the Bank has continuously moved forward by embracing changing challenges over time. Our rich legacy not only gives us a sense of pride but also guides us toward the future.

It is a matter of great privilege for me to assume the responsibility of Executive Director at a time when the Bank is at a significant stage of its digital transformation. Earlier, while serving as Chief General Manager and overseeing the Bank's specialised digital platform, Cent Neo, I closely experienced how technology is not merely a support function but the foundation of future-ready banking.

Today, digitalisation at our Bank goes beyond automation of processes. It has become a key enabler for enhancing customer experience, improving operational efficiency, strengthening risk management, and enabling faster and more accurate decision-making. Digital platforms, data-driven insights, cybersecurity, and innovation are now integral parts of our work culture.

Our glorious legacy teaches us that progress with time is the key to sustainability. In the years ahead, we must deepen our adoption of technology and ensure its effective implementation at the grassroots level. The digital participation of every branch, every officer, and every employee will make this transformation truly meaningful.

I am confident that with our committed workforce, strong institutional values, and a forward-looking technological approach, Central Bank of India will not only meet present challenges successfully but also play a leading role in addressing the banking needs of the future.

Let us work together to preserve our proud heritage while leveraging technology to lead the Bank toward a brighter future, and take this journey, which has continued since 1911, to new heights.

Thank you for your continued support and commitment.

(ई. रतन कुमार E. Ratan Kumar)
कार्यपालक निदेशक Executive Director

संपादकीय/ Editorial

प्रिय सेन्ट्रलाइट्स,

हर वर्ष का स्थापना दिवस हमें याद दिलाता है कि यह केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस यात्रा का संकेत है जो 1911 में शुरू हुई और आज भी उसी ऊर्जा और जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ रही है. हमारे बैंक की पहचान हमेशा अपनी स्वदेशी विरासत, सेवा के मूल्यों और समाज के प्रति समर्पण से बनी है. यही आधार हमें समय के बदलावों के बीच भी मजबूत बनाए रखता है.

जब हम अपने बैंक की शुरुआत की ओर देखते हैं, तो हमारे महान संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला की दूरदर्शिता स्पष्ट दिखाई देती है. उस समय देश की आर्थिक परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण थीं, फिर भी उन्होंने एक ऐसे बैंक का सपना देखा, जिस पर जनता भरोसा करे. यह भरोसा आज भी हमारी सबसे बड़ी पूँजी है.

समय के साथ आर्थिक नीतियाँ बदलीं, तकनीक ने बैंकिंग के तौर-तरीके बदल दिए और ग्राहकों की अपेक्षाएँ भी बढ़ीं. इन परिवर्तनों के बीच हमारा बैंक लगातार सीखता, आगे बढ़ता और खुद को आने वाले समय के लिए तैयार करता रहा. ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में हमारी विविध योजनाएँ, वित्तीय समावेशन में योगदान, सामाजिक उत्तरदायित्व की पहलें और डिजिटल बैंकिंग की दिशा में उठाए गए कदम - ये सब हमारी निरंतर प्रगति के साक्षी हैं.

आज का दौर हमें नई चुनौतियाँ देता है, लेकिन अवसर भी उतने ही व्यापक हैं. डिजिटल सेवाएँ, पारदर्शी प्रक्रियाएँ, ग्राहक अनुभव में सुधार और तकनीक आधारित समाधान हमारे भविष्य की दिशा तय कर रहे हैं. बैंक की वर्तमान नेतृत्व टीम ने जिस गति और स्पष्ट दृष्टि के साथ परिवर्तन की राह खोली है, वह आने वाले वर्षों के लिए उम्मीद और विश्वास का आधार बनती है.

हमारी सेन्ट्रलाइट पत्रिका उसी यात्रा का प्रतीक है. यह केवल लेखों का संग्रह नहीं, बल्कि उन मूल्यों, अनुभवों और आकांक्षाओं का दस्तावेज है जिन्हें हम पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं. इस अंक की थीम **''गौरवशाली विरासत से उज्जवल भविष्य की ओर-1911 से निरंतर''** हमें अपनी जड़ों की याद दिलाती है और यह भी सिखाती है कि हर कदम भविष्य की जिम्मेदारी के साथ उठाना है.

हम अपने प्रत्येक कर्मचारी, ग्राहक और सहयोगी के आभारी हैं, क्योंकि वे इस यात्रा के असली सहभागी हैं. आपकी प्रतिबद्धता, आपका योगदान और आपका विश्वास ही हमें आगे ले जाता है.

आइए, हम अपनी विरासत को सम्मान देते हुए एक ऐसा भविष्य तैयार करें जो और अधिक समृद्ध, आधुनिक और जन-केंद्रित हो.

Dear Centralites,

Every year, our Foundation Day reminds us of something special. It is not just a date, but a marker of the journey that began in 1911 and continues even today with the same energy and sense of responsibility. The identity of our Bank has always been built on its indigenous heritage, the values of service, and dedication to society. These very foundations keep us strong even amid changing times.

When we look back at our beginnings, the vision of our great founder, Sir Sorabji Pochkhanawala, is clearly visible. At that time, the country's economic conditions were challenging, yet he dreamed of a bank that the public could trust. That trust remains our greatest asset even today.

Over time, economic policies evolved, technology changed the ways of banking, and customer expectations grew. Amid these changes, our Bank has continuously learned, progressed, and prepared itself for the times ahead. Our diverse initiatives in rural and agricultural areas, contributions to financial inclusion, social responsibility efforts, and steps toward digital banking-all stand testimony to our continuous progress.

Today's era presents us with new challenges, but opportunities are equally vast. Digital services, transparent processes, enhanced customer experiences, and technology-driven solutions are shaping the direction of our future. The current leadership team of the Bank has opened the path of transformation with remarkable speed and clear vision, laying a foundation of hope and confidence for the years to come.

Our Centralite magazine is a reflection of that journey. It is not merely a collection of articles but a record of the values, experiences, and aspirations that we carry forward from generation to generation. The theme of this edition, **"Legacy to a brighter future- continually since 1911"**, reminds us of our roots and teaches us that every step must be taken with responsibility toward the future.

We are grateful to every employee, customer, and partner, for they are the true participants in this journey. Your commitment, contributions, and trust are what carry us forward.

Let us honour our heritage while preparing a future that is more prosperous, modern, and people-centric.

(कुशल पाल Kushal Pal)
महाप्रबंधक - राजभाषा General Manager – Rajbhasha

सुस्वागतम्

श्री ई. रतन कुमार का

संक्षिप्त परिचय

श्री ई. रतन कुमार ने दिनांक 24 नवंबर 2025 को कार्यपालक निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया है. इससे पूर्व वे मुख्य महाप्रबंधक - प्रौद्योगिकी के रूप में बैंक के डिजिटल संवर्धन का दायित्व संभाल रहे थे.

उन्होंने आरईसी (वर्तमान में एनआईटी), इलाहाबाद से बी.ई. (कंप्यूटर साइंस) तथा हैदराबाद विश्वविद्यालय से आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस एवं रोबोटिक्स में एम.टेक. की उपाधि प्राप्त की है. इसके अतिरिक्त, उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय के एनएमआईएमएस से वित्तीय प्रबंधन में स्नातकोत्तर भी किया है.

उन्हें बैंकिंग के विविध क्षेत्रों का अनुभव है, जिसमें मिड कॉर्पोरेट शाखा, कॉर्पोरेट वित्त शाखा के प्रभारी; वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रमुख और अंचल प्रमुख के रूप में कार्य करना शामिल है. परिचालन बैंकिंग और टेक्नोलॉजी दोनों में विविध अनुभव रखने के साथ-साथ प्रक्रिया पुनर्रचना की गहरी समझ के कारण, वे हमारी संस्था में समृद्ध और प्रभावशाली ज्ञान के पूरक हैं.

वर्तमान पदभार ग्रहण करने से पूर्व, उन्होंने बैंक में विभिन्न विभागों जैसे- सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, योजना एवं विकास, व्यावसायिक प्रक्रिया पुनर्रचना विभाग, ऋण निगरानी, सीडीआर सेल आदि का भी कार्यभार संभाला है. उन्होंने बैंक की कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का नेतृत्व किया है, जिनमें ओमनी-चैनल और डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म शामिल हैं. समग्र रूप से उन्हें टेक्नोलॉजी और बैंकिंग क्षेत्र में तीन दशकों का अनुभव है.

मुख्य महाप्रबंधक - प्रौद्योगिकी के रूप में, उन्होंने बैंक में डिजिटल पहलों का नेतृत्व किया है और बैंक की सबसे महत्वपूर्ण परियोजना 'डिजिटल रणनीति और संवर्धन' में अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है.

जो भी कार्य करें, उसमें शत-प्रतिशत योगदान दें

मानव जीवन कर्मप्रधान है. मनुष्य की पहचान उसके विचारों से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होती है. इतिहास साक्षी है कि जिन व्यक्तियों ने अपने जीवन में किए गए सभी कार्यों में अपना शत-प्रतिशत योगदान दिया, वही व्यक्ति असाधारण उपलब्धियों के शिखर तक पहुँचे. आधे मन से किया गया कार्य न तो आत्मसंतोष देता है और न ही समाज अथवा राष्ट्र के लिए कोई स्थायी मूल्य सृजित करता है. इसलिए जीवन में सफलता, संतोष और सार्थकता के लिए यह अनिवार्य है कि हम जो भी कार्य करें, उसमें पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ शत-प्रतिशत योगदान दें.

शत-प्रतिशत योगदान का अर्थ केवल शारीरिक उपस्थिति नहीं है, बल्कि मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक रूप से उस कार्य में संलग्न होना है. आज के समय में अधिकांश लोग कार्य तो करते हैं, परंतु मन कहीं और भटकता रहता है. परिणामस्वरूप कार्य की गुणवत्ता प्रभावित होती है. जब व्यक्ति अपना पूरा ध्यान, ऊर्जा और कौशल किसी एक कार्य में लगाता है, तब वह साधारण कार्य भी असाधारण बन जाता है. यही कारण है कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग का उपदेश देते हुए कहा है कि कर्म करो, फल की चिंता मत करो, और कर्म में पूर्ण निष्ठा रखो.

शत-प्रतिशत योगदान देने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे व्यक्ति की कार्यक्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है. जब हम किसी कार्य को पूरी लगन से करते हैं और उसे समय पर तथा सही ढंग से पूर्ण करते हैं, तो हमें आत्मसंतोष प्राप्त होता है. यह आत्मसंतोष आगे और बेहतर करने की प्रेरणा देता है. इसके विपरीत, अधूरे मन से किया गया कार्य भीतर एक खालीपन और असंतोष छोड़ जाता है, जो व्यक्ति की कार्यशैली और मानसिक शांति दोनों को प्रभावित करता है.

व्यक्तिगत जीवन में भी शत-प्रतिशत योगदान का विशेष महत्व है. चाहे वह पारिवारिक दायित्व हों, सामाजिक संबंध हों या आत्मविकास का मार्ग - हर क्षेत्र में पूर्ण समर्पण आवश्यक है. माता-पिता के रूप में बच्चों के प्रति, संतान के रूप में माता-पिता के प्रति, मित्र के रूप में मित्रता निभाने में यदि हम अपना पूरा योगदान दें, तो संबंध मजबूत और मधुर बनते हैं. रिश्तों में दूरी और तनाव का मुख्य कारण यही होता है कि लोग संबंध निभाते तो हैं, परंतु मन से नहीं.

शिक्षा के क्षेत्र में शत-प्रतिशत योगदान का महत्व और भी अधिक है. विद्यार्थी यदि केवल परीक्षा पास करने के उद्देश्य से पढ़ाई करता है, तो उसका ज्ञान सीमित रह जाता है, परंतु यदि वह सीखने की जिज्ञासा और पूरे मन से अध्ययन करता है, तो वही ज्ञान उसके व्यक्तित्व और भविष्य को उज्ज्वल बनाता है. एकाग्रता, अनुशासन और निरंतर अभ्यास - ये सभी शत-प्रतिशत योगदान के ही अंग हैं. महान वैज्ञानिक, साहित्यकार और विचारक इसी सिद्धांत पर चलते हुए अपने क्षेत्र में अमर हुए.

कार्यस्थल पर शत-प्रतिशत योगदान संगठन और राष्ट्र दोनों के लिए लाभकारी होता है. एक कर्मचारी यदि अपने दायित्वों को केवल औपचारिकता के रूप में निभाता है, तो संगठन की प्रगति बाधित होती है. इसके विपरीत, जब प्रत्येक कर्मचारी अपने कार्य को अपना कर्तव्य और सम्मान समझकर पूरी निष्ठा से करता है, तो संगठन नई ऊँचाइयों को छूता है. यही भावना सार्वजनिक सेवाओं, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में विशेष रूप से आवश्यक है, क्योंकि यहाँ किया गया कार्य सीधे आम जन-जीवन को प्रभावित करता है.

शत-प्रतिशत योगदान देने की आदत व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करती है. यह अनुशासन, समय प्रबंधन, ईमानदारी और जिम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित करती है. ऐसा व्यक्ति चुनौतियों से घबराता नहीं, बल्कि उन्हें अवसर के रूप में देखता है. कठिन परिस्थितियों में भी वह धैर्य और साहस बनाए रखता है, क्योंकि उसे अपने प्रयासों पर विश्वास होता है. यही विश्वास सफलता की नींव बनता है.

आज के डिजिटल और तेज़ रफ्तार जीवन में ध्यान भटकना एक सामान्य समस्या बन गई है. मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और अनावश्यक सूचनाएँ व्यक्ति को उसके कार्य से दूर कर देती हैं.

ऐसे में शत-प्रतिशत योगदान देना और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है. इसके लिए आत्मनियंत्रण और प्राथमिकताओं में स्पष्टता आवश्यक है. व्यक्ति को यह तय करना चाहिए कि उसके लिए क्या महत्वपूर्ण है और उसी के अनुसार अपने समय और ऊर्जा का निवेश करना चाहिए.

शत-प्रतिशत योगदान का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि व्यक्ति अपने कार्य को केवल आजीविका का साधन न समझे, बल्कि सेवा और सृजन का माध्यम माने. जब कार्य को सेवा भाव से किया जाता है, तो उसमें स्वत: ही पूर्ण समर्पण आ जाता है. महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे महान व्यक्तित्वों ने अपने-अपने क्षेत्रों में शत-प्रतिशत योगदान देकर न केवल स्वयं को, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र को दिशा दी.

असफलता भी शत-प्रतिशत योगदान के मार्ग का एक हिस्सा है. कई बार पूरा प्रयास करने के बाद भी अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते, परंतु ऐसी स्थिति में भी निराश होने के बजाय आत्ममंथन करना चाहिए और अपने प्रयासों में सुधार लाना चाहिए. असफलता हमें सिखाती है कि कहाँ कमी रह गई और आगे कैसे बेहतर किया जा सकता है. यदि योगदान ईमानदार और पूर्ण है, तो असफलता भी भविष्य की सफलता की सीढ़ी बन जाती है.

शत-प्रतिशत योगदान देने के लिए आत्मप्रेरणा अत्यंत आवश्यक है. बाहरी दबाव या पुरस्कार व्यक्ति को कुछ समय तक प्रेरित कर सकते हैं, परंतु दीर्घकालिक समर्पण के लिए आंतरिक प्रेरणा जरूरी है. अपने लक्ष्य को स्पष्ट रूप से समझना, अपने कार्य के महत्व को पहचानना और स्वयं से ईमानदार रहना - ये सभी आत्मप्रेरणा के स्रोत हैं.

अंतत: यह कहा जा सकता है कि जीवन में उत्कृष्टता का कोई शॉर्टकट नहीं है. जो भी कार्य हम करें, यदि उसमें अपना शत-प्रतिशत योगदान दें, तो सफलता, सम्मान और संतोष स्वत: हमारे जीवन का हिस्सा बन जाते हैं. यह सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र विकास में भी योगदान देता है. इसलिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे से छोटे और बड़े से बड़े हर कार्य को पूरी निष्ठा, लगन और ईमानदारी के साथ करेंगे. यही जीवन की सच्ची सफलता और सार्थकता है.

प्रदीप खिमानी
पूर्णकालिक निदेशक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले दस्तावेज

1	सामान्य आदेश	General Order
2	संकल्प	Resolution
3	परिपत्र	Circular
4	नियम	Rule
5	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7	संविदाएं	Contracts
8	करार	Agreement
9	अनुज्ञप्तियां	Licences
10	निविदा प्रारुप	Tender Form
11	अनुज्ञा पत्र	Permit
12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13	अधिसूचनाएं	Notifications
14	संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

एक सदी से अधिक राष्ट्रसेवा में समर्पित: सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

भारतीय बैंकिंग प्रणाली के विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रहा है. बैंक न केवल अपने लंबे इतिहास के कारण विशिष्ट है, बल्कि इसलिए भी कि यह पूरी तरह भारतीय पूंजी, भारतीय प्रबंधन और भारतीय दृष्टिकोण से स्थापित पहला प्रमुख वाणिज्यिक बैंक माना जाता है. इसे पहला स्वदेशी बैंक भी कहा जाता है. बैंक की स्थापना, उसका विकास और उसका सामाजिक-आर्थिक योगदान भारत के स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्र निर्माण और वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया से गहराई से जुड़ा हुआ है.

बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में भारत की बैंकिंग व्यवस्था पर विदेशी और ब्रिटिश बैंकों का प्रभुत्व था. भारतीय व्यापारियों, किसानों और सामान्य जनता को ऋण एवं बैंकिंग सेवाएं आसानी से उपलब्ध नहीं थीं. इसी पृष्ठभूमि में 21 दिसम्बर 1911 को मुंबई में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की गई. इसके संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला थे, जो एक दूरदर्शी उद्योगपति एवं राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित थे.

बैंक की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भारतीयों के लिए एक ऐसा बैंक बनाना था जो स्वदेशी पूंजी को बढ़ावा दे, भारतीय उद्योग एवं व्यापार को सशक्त बनाए और विदेशी बैंकों पर निर्भरता को कम करे. बैंक का आदर्श वाक्य **''राष्ट्र के प्रति निष्ठावान सेवा/Faithful Service to the Nation''** इसकी राष्ट्रसेवा की भावना को स्पष्ट रूप से दर्शाता है.

ब्रिटिश शासन के दौरान सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भारतीय आर्थिक हितों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. उस समय जब अधिकांश बैंक विदेशी स्वामित्व में थे, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भारतीय व्यापारियों, कारीगरों और लघु उद्योगों को प्राथमिकता दी. इस बैंक ने भारतीयों में बचत की आदत को बढ़ावा दिया और उन्हें संगठित बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा. स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव में बैंक ने अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया. यह केवल एक वित्तीय संस्था न होकर भारतीय आत्मसम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक बन गया.

पिछले 114 वर्षों के इतिहास में बैंक ने कई उतार चढ़ाव देखें और अनगिनत चुनौतियों का सामना किया. बैंक ने प्रत्येक आशंका को सफलतापूर्वक व्यावसायिक अवसर में बदल दिया और बैंकिंग उद्योग करके अपने समकक्षों से उत्कृष्ट रहा.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कई अभिनव और अनुपम बैंकिंग गतिविधियों का शुभारंभ किया. ऐसी ही कुछ सेवाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

- सन् 1921 ई. में समाज के सभी वर्गों में बचत/किफायत की आदत डालने के लिए घरेलू बचत सुरक्षित जमा योजना का प्रारंभ.
- सन् 1924 ई. में बैंक की महिला ग्राहकों को सेवा प्रदान करने लिए विशिष्ट महिला विभाग की स्थापना.
- सन् 1926 ई. में सुरक्षित जमा लॉकर सुविधा और रुपे यात्रा चेक.
- सन् 1929 ई. में निष्पादक एवं न्यासी विभाग की स्थापना.
- सन् 1932 ई. में जमाराशि बीमा सुविधा योजना.

- सन् 1962 ई. आवर्ती जमा योजना.
- सन् 1969 ई. में बैंक का राष्ट्रीयकरण होने के बाद भी सेन्ट्रल ऑफ इंडिया ने विभिन्न अभिनव बैंकिंग सेवाएं आरंभ करना जारी रखा.
- सन् 1976 ई. में मर्चेंट बैंकिंग कक्ष की स्थापना.
- सन् 1980 ई. में बैंक के क्रेडिट कार्ड सेंट्रल-कार्ड का प्रारंभ.
- सन् 1986 ई. में प्लैटिनम जुबली मनी बैंक जमा योजना.
- सन् 1989 ई. में आवासीय सहायक कं. सेन्ट बैंक होम फायनेंस लि. का शुभारंभ.
- सन् 1994 ई. में बाहरी चेकों की शीघ्र वसूली के लिए त्वरित चेक वसूली सेवा (क्यू. सी. सी.) आरंभ की गयी.

साथ ही, भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुरुप कृषि तथा लघु उद्योग जैसे प्रमुख क्षेत्रों के साथ-साथ मध्यम एवं बड़े उद्योगों को प्रोत्साहित करने में सेन्ट्रल बैंक लगातार सक्रिय भूमिका निभा रहा है. शिक्षित युवाओं में रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक ने कई स्वरोजगार योजनाएं आरंभ की हैं.

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को वास्तविक अर्थों में अखिल भारतीय बैंक कहा जा सकता है क्योंकि सभी 28 राज्यों में तथा 8 में से 7 केन्द्रशासित प्रदेशों में इसकी शाखाओं का विस्तृत नेटवर्क है. देश के एक छोर से दूसरे छोर तक स्थित अपनी 4541 शाखाओं के विस्तार पटल एवं 10 सैटेलाइट शाखाओं के विस्तृत नेटवर्क के कारण सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सेन्ट्रल बैंक का एक अपना विशिष्ट स्थान है.

हमारे बैंक के **उच्च प्रबंधन** द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए व्यवसाय वृध्दि करने एवं बैंक की साख मजबूत करने के उद्देश्य से **YOBA - 156** अभियान शुरू किया गया. इस वर्ष को **Year of Business Acceleration (YOBA)** यानि व्यवसाय उत्कर्ष का वर्ष कहा गया. योबा के अंतर्गत प्रत्येक शाखा को **156** का लक्ष्य दिया गया जिसके तहत **1 करोड़ चालू खाता जमा, 5 करोड़ बचत खाता जमा और 6 करोड़ दीर्घकालिक जमा** करवाना है. बाद में इसे परिवर्तित करके **YOBA – 159** लागू किया गया एवं **1 करोड़ चालू खाता जमा, 5 करोड़ बचत खाता जमा और 9 करोड़ दीर्घकालिक जमा** करवाने का लक्ष्य दिया गया.

सामाजिक सुरक्षा योजनाएं: सरकार द्वारा चलाई जाने वाली ऐसी योजनाएं जो वृद्धजनों, विधवाओं, दिव्यांगजनों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों जैसे कमजोर वर्गों को वित्तीय सहायता और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती हैं जिसमें अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना आदि शामिल हैं. हमारे बैंक द्वारा इस क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है और समाज के उत्थान में योगदान दिया जा रहा है.

डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में हाल ही में बैंक द्वारा सेन्ट ईज (मोबाइल और इंटरनेट बैंकिंग के लिए एक एकीकृत ऐप) लांच किया गया. इस ऐप के माध्यम से आरडी, एफडी, म्यूचुअल फंड शेयर में भी आसानी से निवेश किया जा सकता है. साथ ही बैंक द्वारा इस वर्ष बीमा के क्षेत्र में भी ग्राहकों को अधिक बेहतर सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से जेनरली सेन्ट्रल को लांच किया गया.

इसके साथ ही बैंक को विभिन्न क्षेत्रों में सम्मानित भी किया गया है. भारत कलेक्शन्स अवार्डस एंड समिट 2025 में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को सभी पीएसयू और प्राइवेज बैंकों में बेस्ट क्लेक्शन टीम ऑफ द ईयर का अवार्ड दिया गया. वर्ष 2023 में बैंक को राजभाषा नियमों के अनुपालन हेतु तृतीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया. तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा पुणे में यह पुरस्कार ग्रहण किया गया था. बैंक को स्कॉच अवार्ड वर्ष 2024-25 के लिए चुना गया. सेन्ट नियो डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म एवं मार्क्समेन नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए Most Preferred Workplace for Women 2024-25 चुना गया. ETNOW Iconic Brand of India 2024 अवार्ड भी प्रदान किया गया.

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हमारे बैंक की एक गौरवशाली विरासत रही है और निरंतर बेहतर करने की दिशा में हम सभी अग्रसर हैं. बैंक के प्रबंधन तंत्र से लेकर सभी कर्मचारियों के सहयोग से हम इसी प्रकार बेहतर कार्य करेंगे और सभी चुनौतियों का सामना कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे.

बी. आर. रामा कृष्णा नायक
उप अंचल प्रमुख
मुंबई मेट्रो आं का

Integrity: A Foundation for Success

Integrity stands as one of the most esteemed and desirable qualities in individuals. It is the cornerstone of achievement. Those who embody this trait are highly sought after. Through integrity, individuals can realize significant accomplishments. By incorporating integrity into their lives, individuals pave the way for prosperity and success.

Integrity serves as a metaphorical miracle lamp, enabling the achievement of one's aspirations. It is the product of industry, perseverance, and an unwavering commitment to excellence. James Allen, the renowned British author and philosopher, in his work **"Eight Pillars of Prosperity"** honours the value of integrity, stating, **"There is no striking a cheap bargain with prosperity. It must be purchased, not only with intelligent labour but with moral force".**

As articulated by **Asif Raza,** integrity entails upholding and consistently adhering to high moral standards. It reflects one's actions and behavior in the absence of scrutiny. Prosperity is characterized by well-being, wealth and success, intrinsically linked to peace, harmony and fulfillment. When one sows the seeds of integrity, the harvest is invariably prosperity.

It is impossible to attain prosperity without integrity. Individuals of strong moral character possess the resilience, creativity and determination necessary for diligent effort. Without sustained industry and perseverance, prosperity remains an unattainable ideal. Throughout history, great achievers, such as Abraham Lincoln, Marie Curie, Louis Pasteur, Winston Churchill, Alexander Graham Bell, Albert Einstein, Thomas Edison and Mahatma Gandhi have exemplified impeccable integrity. Thereby achieving remarkable success in their fields. For a nation to prosper, be composed of individuals of unwavering honesty.

In parallel, for a nation to attain unparalleled prosperity in areas such as health, finance, science, technology, and innovation, Its citizens must embody these principles. When integrity is integrated into our daily actions, it fosters trust and builds solid relationships, both essential for collaborations and progress.

Investing in integrity means leading by example. Leaders who prioritize integrity inspire their teams and communities. This not only cultivates a positive work environment but also enhances overall productivity. Ethical leadership creates a culture where employees feel valued and committed, reducing turnover rates and fostering loyalty.

Moreover, integrity drives accountability. When individuals and organizations uphold ethical standards, they cultivate a sense of responsibility. Accountability leads to reliability and consistency, which are crucial for sustained success. In a corporate context, companies built on integrity are more likely to gain consumer trust, resulting in repeat business and positive brand reputation.

On a broader scale, integrity influences societal frameworks. A Society built on integrity is one where laws are respected, and justice prevails. In such a society, individuals feel empowered to speak out against wrongdoing, facilitating progress and reform. Transparent governance, free from corruption, allows for the equitable distribution of resources, leading to collective prosperity.

To instill integrity within ourselves and our communities, we must actively engage in self-reflection. This involves evaluating our values, beliefs and actions. By aligning our behaviors with our moral principles, we create a foundation for integrity. Regularly reassessing our commitments can safeguard against complacency, ensuring that we remain steadfast even in challenging circumstances.

Education plays a vital role in promoting integrity. Teaching integrity from a young age through example, discussions, and curricula sets a precedent for future generations. Schools and institutions must prioritize ethical education, equipping students with the tools to navigate complex moral dilemmas and fostering a culture of integrity within educational settings.

In conclusion, integrity is not just a personal virtue but an essential pillar for both individuals and collective prosperity. It cultivates trust, fosters accountability, and drives societal progress. To achieve lasting success, both personally and as a nation, we must commit to the principle of integrity. This commitment will undoubtedly yield the fruits of prosperity, enriching our lives and the lives of those around us. By embedding integrity into our daily practice, we ensure a brighter future for ourselves and our communities.

Ashwani Dhingra
Zonal Head
Mumbai Metro Zonal Office

भारत में सौर ऊर्जा क्रांति: पीएम सूर्य घर योजना

ऊर्जा किसी भी राष्ट्र के विकास की रीढ़ होती है. 21वीं सदी में, जब दुनिया तेजी से औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति की ओर बढ़ रही है, ऊर्जा की मांग भी अभूतपूर्व रूप से बढ़ रही है. परंपरागत ऊर्जा स्रोत जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस सीमित हैं और इन पर अत्यधिक निर्भरता न केवल आर्थिक रूप से जोखिमपूर्ण है, बल्कि पर्यावरण के लिए भी घातक सिद्ध हो रही है. जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और ऊर्जा संकट जैसी चुनौतियाँ अब केवल वैज्ञानिक या सरकारी चर्चा का विषय नहीं रही हैं, बल्कि यह आम नागरिक के जीवन और भविष्य के लिए सीधा खतरा बन गई हैं.

इस कठिन समय में भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सौर ऊर्जा क्रांति के माध्यम से एक ऐतिहासिक कदम उठाया है. सौर ऊर्जा न केवल स्वच्छ और पर्यावरण-अनुकूल है, बल्कि यह तकनीकी रूप से अब व्यवहारिक, आर्थिक रूप से किफायती और सामाजिक रूप से लाभकारी भी बन चुकी है. भारत की भौगोलिक स्थिति इसे इस क्षेत्र में एक प्राकृतिक अग्रणी बनाती है. देश में अधिकांश क्षेत्रों में वर्षभर धूप रहती है और छतों तथा खुले क्षेत्रों में सौर पैनल स्थापित करने की विशाल संभावनाएँ हैं.

इसी दृष्टि से भारत सरकार ने ''पीएम सूर्य घर - मुफ़्त बिजली योजना'' लागू की है. यह योजना केवल एक सामान्य कल्याणकारी योजना नहीं है, बल्कि यह ऊर्जा आत्मनिर्भरता, हरित विकास, सामाजिक समानता, और आर्थिक राहत का एक समग्र मॉडल प्रस्तुत करती है. इसके माध्यम से सरकार ने यह संदेश दिया है कि नवीकरणीय ऊर्जा का लाभ सीधे आम नागरिक तक पहुँचना चाहिए, और हर घर तक स्वच्छ, किफायती और विश्वसनीय बिजली पहुँचना चाहिए.

पीएम सूर्य घर योजना का महत्व केवल बिजली उत्पादन तक सीमित नहीं है. यह ग्रामीण और शहरी भारत में समान रूप से ऊर्जा पहुंचाने, बिजली के बिलों में भारी कटौती करने, स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन करने और पर्यावरण संरक्षण में योगदान करने जैसी बहुआयामी भूमिका निभाती है. इसके माध्यम से भारत एक स्वच्छ और सतत ऊर्जा भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है.

योजना की मुख्य विशेषता यह है कि यह घरेलू स्तर पर ऊर्जा उत्पादन को प्रोत्साहित करती है. इससे नागरिक न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतें पूरी कर सकते हैं, बल्कि अतिरिक्त ऊर्जा को ग्रिड में बेचकर आय भी अर्जित कर सकते हैं. इससे घरेलू अर्थव्यवस्था में स्थायी सुधार और ग्रामीण व शहरी समुदायों में समग्र विकास को बढ़ावा मिलता है.

इस प्रकार, यह योजना न केवल भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करती है, बल्कि सौर ऊर्जा क्रांति के माध्यम से देश को वैश्विक स्तर पर नेतृत्व प्रदान करने में भी सहायक है. यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक हरित, स्वच्छ और स्थायी भारत का मार्ग प्रशस्त करती है.

भारत में सौर ऊर्जा की पृष्ठभूमि: भारत अपने भौगोलिक और प्राकृतिक संसाधनों के लिहाज से सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अत्यंत अनुकूल देश है. देश की अधिकांश भूमि, विशेषकर राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्य, वर्ष के अधिकांश दिनों में प्रचुर मात्रा में धूप प्राप्त करते हैं. औसतन भारत में साल में लगभग 300-330 धूप वाले दिन होते हैं, और वर्ष में लगभग 4.5-5.0 किलोवाट घंटे प्रति वर्ग मीटर की ऊर्जा सौर पैनलों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है. यह प्राकृतिक अनुकूलता भारत को सौर ऊर्जा उत्पादन में वैश्विक अग्रणी बनने के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करती है.

सौर ऊर्जा का प्रारंभिक चरण: 2000 के दशक के प्रारंभ में भारत में सौर ऊर्जा की उत्पादन क्षमता बेहद सीमित थी. उस समय केवल कुछ हजार मेगावाट की स्थापना हुई थी, जो राष्ट्रीय ऊर्जा मांग के एक छोटे से हिस्से के बराबर थी. मुख्य रूप से यह परियोजनाएँ सरकारी प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संस्थानों और सीमित औद्योगिक परियोजनाओं तक ही सीमित थीं.

राष्ट्रीय सौर मिशन: भारत में सौर ऊर्जा क्रांति का वास्तविक आरंभ 2010 के बाद हुआ, जब सरकार ने राष्ट्रीय सौर मिशन (Jawaharlal Nehru National Solar Mission – JNNSM) की शुरुआत की. इसका उद्देश्य था, वर्ष 2022 तक 20,000

मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली पहुँचाना तथा घरेलू और औद्योगिक स्तर पर नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना. इस मिशन ने न केवल नीति और सब्सिडी प्रदान की, बल्कि सौर पैनल उत्पादन, तकनीकी प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के माध्यम से उद्योगों को भी सशक्त किया.

सामाजिक और आर्थिक महत्व: पीएम सूर्य घर योजना केवल ऊर्जा के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है. दूरदराज़ क्षेत्रों में भी स्थिर बिजली उपलब्ध कराना, बिजली की नियमित उपलब्धता से बच्चों की पढ़ाई और स्वास्थ्य उपकरणों का उपयोग बेहतर होगा. घर में बिजली उपलब्ध होने से महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियाँ आसान होती हैं. आइए इन उद्देश्यों को विस्तार से समझें:

आम नागरिक को बिजली बिल से राहत देना: भारत में अधिकांश मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए बिजली बिल एक बड़ा खर्च होता है. खासकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, बिजली की लागत मासिक आय का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है. पीएम सूर्य घर योजना के तहत घरों को प्रतिमाह 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली उपलब्ध कराई जाती है. इससे, घरेलू बजट पर प्रत्यक्ष सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. परिवार अतिरिक्त आय का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य और बचत में कर सकते हैं. बिजली की खपत और खर्च पर नियंत्रण आसान होता है. यदि किसी मध्यम वर्गीय परिवार का मासिक बिजली बिल 2000-2500 रुपये है, तो योजना के माध्यम से लगभग 80-100% तक इसका भार कम किया जा सकता है.

नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना: सौर ऊर्जा एक नवीकरणीय और प्रदूषण रहित ऊर्जा स्रोत है. इस योजना के माध्यम से, घरों की छतों पर सोलर पैनल स्थापित किए जाते हैं. हरित ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है. बिजली उत्पादन का स्रोत जीवाश्म ईंधन से सौर ऊर्जा की ओर बदलता है. इससे भारत सतत ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ता है.

कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना: जैसा कि वैज्ञानिकों ने बार-बार चेतावनी दी है, जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट का मुख्य कारण है. पीएम सूर्य घर योजना से, प्रत्येक घर जो सौर ऊर्जा का उपयोग करता है, वह प्रतिवर्ष औसतन 1.5-2 टन CO_2 उत्सर्जन को कम करता है. यदि एक करोड़ घर इस योजना के तहत शामिल हों, तो करोड़ों टन CO_2 उत्सर्जन में कमी संभव है. यह वैश्विक जलवायु लक्ष्यों की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान है.

स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन: सौर ऊर्जा की स्थापना और रखरखाव में स्थानीय रोजगार सृजन एक महत्वपूर्ण पहलू है. सोलर पैनल इंस्टॉलेशन, मेंटेनेंस और निगरानी के लिए युवाओं को प्रशिक्षण और नौकरी मिलती है. छोटे और मध्यम व्यवसाय सोलर उपकरणों के निर्माण और वितरण में भागीदारी कर सकते हैं. यह रोजगार ग्रामीण क्षेत्रों और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में विशेष रूप से बढ़ता है. पीएम सूर्य घर योजना ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समान ऊर्जा विकास सुनिश्चित करती है. ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ बिजली की समस्या आम है, वहाँ यह योजना स्थायी बिजली और सिंचाई, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सुधार लाती है. शहरी क्षेत्रों में बिजली बिल में कटौती और हरित ऊर्जा का उपयोग बढ़ता है. इस योजना से समान अवसर और संसाधनों का वितरण सुनिश्चित होता है, जिससे सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सकता है. इस प्रकार, पीएम सूर्य घर योजना केवल बिजली उत्पादन की योजना नहीं है, बल्कि यह आर्थिक राहत, पर्यावरणीय सुरक्षा, सामाजिक समानता, रोजगार सृजन और ऊर्जा आत्मनिर्भरता का समग्र मॉडल प्रस्तुत करती है. यह योजना भारत को हरित और सतत ऊर्जा भविष्य की ओर अग्रसर करती है और आम नागरिक के जीवन में सकारात्मक और स्थायी बदलाव लाती है.

योजना की प्रमुख विशेषताएँ: पीएम सूर्य घर - मुफ़्त बिजली योजना सिर्फ़ एक ऊर्जा योजना नहीं है, बल्कि यह नागरिक कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक राहत का समग्र पैकेज है. 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली, इस योजना का सबसे आकर्षक पहलू है. इसके तहत घरेलू उपभोक्ताओं को प्रति माह 300 यूनिट तक बिजली मुफ्त उपलब्ध कराई जाती है. इससे छोटे और मध्यम परिवारों का बिजली बिल लगभग शून्य हो जाता है. उदाहरण: यदि किसी परिवार का वर्तमान बिजली बिल 2000-2500 रुपये है, तो योजना के माध्यम से यह बिल लगभग शून्य हो सकता है. इस सुविधा से घर की मासिक आय में राहत आती है और परिवार अपने पैसे अन्य आवश्यकताओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन और बचत में लगा सकते हैं. यह सुविधा विशेष रूप से उन परिवारों के लिए लाभकारी है जो सीमित आय पर निर्भर हैं और उच्च बिजली बिल का बोझ महसूस करते हैं. सोलर पैनल और संबंधित उपकरणों की उच्च प्रारंभिक लागत आम नागरिक के लिए एक बड़ी बाधा हो सकती है. इस समस्या का समाधान करने के लिए सरकार 40% तक की सब्सिडी प्रदान कर रही है. उदाहरण: यदि एक सोलर पैनल की कुल लागत 1,00,000 रुपये है, तो सरकार की सब्सिडी के बाद नागरिक को केवल 60,000 रुपये खर्च करने होंगे. यह उपाय

योजना को सुलभ और किफायती बनाता है. सब्सिडी के माध्यम से योजना का लाभ ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है. साथ ही, सरकार कुछ राज्यों में आसान ऋण योजनाएँ भी प्रदान करती है, जिससे आम नागरिक प्रारंभिक लागत के बिना योजना का लाभ उठा सकते हैं. ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया से योजना को डिजिटल और पारदर्शी बनाया गया है. लाभार्थी घर बैठे ही ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. आवेदन की स्थिति और स्थापना की प्रगति को ऑनलाइन ट्रैक किया जा सकता है. यह भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भूमिका को लगभग समाप्त करता है. डिजिटल आवेदन से समय और खर्च की बचत होती है, और योजना का लाभ जल्दी और सुलभ तरीके से मिलता है. इस प्रक्रिया के माध्यम से सरकार ने पारदर्शिता और जवाबदेही को सुनिश्चित किया है, जिससे योजना में सभी योग्य नागरिक शामिल हो सकें. नेट मीटरिंग की सुविधा योजना को और भी अधिक प्रभावशाली बनाती है. यदि कोई घर अपनी जरूरत से अधिक बिजली उत्पन्न करता है, तो अतिरिक्त बिजली ग्रिड में भेजी जा सकती है. इसके बदले उपभोक्ता को आय प्राप्त होती है, जो उनके मासिक बजट में मदद करती है. यह सुविधा सौर ऊर्जा को स्वयं-उत्पादन और व्यापारिक दृष्टि से भी लाभकारी बनाती है. उदाहरण: यदि किसी घर ने प्रति माह 350 यूनिट बिजली उत्पादन किया और उसका उपयोग केवल 250 यूनिट हुआ, तो अतिरिक्त 100 यूनिट को ग्रिड में बेचकर नागरिक अतिरिक्त 500-1000 रुपये तक कमा सकता है.

सौर ऊर्जा क्रांति और आत्मनिर्भर भारत : भारत, दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते ऊर्जा बाजारों में से एक है. आर्थिक विकास, शहरीकरण, उद्योगों का विस्तार और बढ़ती जनसंख्या के चलते देश में बिजली की मांग लगातार बढ़ रही है. परंपरागत ऊर्जा स्रोत जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस पर अत्यधिक निर्भरता न केवल आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण है, बल्कि यह ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण के लिए भी गंभीर जोखिम उत्पन्न करती है. सौर ऊर्जा क्रांति भारत के लिए एक रणनीतिक विकल्प बनकर उभरी है. सौर ऊर्जा के व्यापक उपयोग से भारत कई स्तरों पर आत्मनिर्भरता और सुरक्षा हासिल कर सकता है.

विदेशी मुद्रा की बचत: भारत, अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बड़े पैमाने पर तेल, कोयला और गैस का आयात करता है. प्रतिवर्ष ऊर्जा आयात पर अरबों डॉलर खर्च होते हैं. उदाहरण के लिए, भारत 2025 में लगभग $150-200 बिलियन की ऊर्जा सामग्री का आयात कर सकता है. यदि देश अपनी घरेलू सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता बढ़ाता है, तो यह आयात की निर्भरता कम होती है. सौर ऊर्जा से घरेलू बिजली उत्पादन बढ़ने पर विदेशी मुद्रा की बचत होती है, जिसे अन्य विकासशील क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और आधारभूत ढांचा में निवेश किया जा सकता है. इस प्रकार सौर ऊर्जा आर्थिक दृष्टि से भी भारत को मजबूत बनाती है.देश की ऊर्जा जरूरतें स्थायी, भरोसेमंद और स्वदेशी स्रोतों से पूरी होती हैं. सौर ऊर्जा देश की विद्युत ग्रिड क्षमता बढ़ाने में सहायक है. ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में भी बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित होती है. यह विदेशी तेल या गैस की आपूर्ति पर निर्भरता को कम करता है. प्राकृतिक आपदा, वैश्विक संकट या आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान आने पर भी देश की ऊर्जा आवश्यकताएं प्रभावित नहीं होतीं. इस प्रकार, सौर ऊर्जा भारत को ऊर्जा संकट और वैश्विक निर्भरता से मुक्त करती है.

वैश्विक राजनीतिक अस्थिरता से बचाव: ऊर्जा सुरक्षा केवल घरेलू उत्पादन तक सीमित नहीं है. भारत जैसे विकासशील देश अक्सर वैश्विक राजनीतिक अस्थिरता, युद्ध, संघर्ष या तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव से प्रभावित होते हैं. सौर ऊर्जा का व्यापक उपयोग भारत को वैश्विक राजनीतिक जोखिमों से बचाव प्रदान करता है. घरेलू उत्पादन बढ़ने से भारत कच्चे तेल और गैस के अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर निर्भर नहीं रहता. यह कदम देश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र और मजबूत रणनीतिक स्थिति प्रदान करता है.

पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ: सौर ऊर्जा केवल आर्थिक और रणनीतिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसके पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ भी अत्यधिक हैं. जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता घटने से कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है. वायु प्रदूषण कम होता है, जिससे स्वास्थ्य सुधार होता है. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी बिजली उपलब्ध होने से शिक्षा, स्वास्थ्य और स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ते हैं. इस प्रकार, सौर ऊर्जा क्रांति सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सुधार में भी सहायक है.

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में रणनीतिक महत्व: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत आत्मनिर्भर भारत का विज़न सिर्फ़ आर्थिक या सैन्य क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ऊर्जा आत्मनिर्भरता भी शामिल है. सौर ऊर्जा की व्यापक स्थापना से भारत ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनता है. यह देश की ऊर्जा जरूरतों को स्वदेशी स्रोतों से पूरा करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है. पीएम सूर्य घर योजना आम नागरिक को भी इस क्रांति का हिस्सा बनाती है, जिससे ऊर्जा उत्पादन और उपभोग दोनों स्तरों पर भारत का आत्मनिर्भर मॉडल मजबूत होता है. सौर ऊर्जा क्रांति न केवल भारत की आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करती है, बल्कि यह पर्यावरणीय,

सामाजिक और रणनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है.पीएम सूर्य घर योजना इस क्रांति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो आम नागरिक को सौर ऊर्जा के उपयोग में शामिल करके देश को स्वच्छ, हरित और आत्मनिर्भर भारत की ओर अग्रसर करती है.

पर्यावरण संरक्षण में योगदान: आज के समय में पर्यावरण संरक्षण एक विश्वव्यापी आवश्यकता बन चुका है. वैश्विक जलवायु परिवर्तन, वायु और जल प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन पृथ्वी और मानव जीवन के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न कर रहे हैं. ऐसे में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत विशेष रूप से सौर ऊर्जा का उपयोग, पर्यावरण सुरक्षा और सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. पीएम सूर्य घर योजना इस दिशा में एक बड़ा कदम है. इसके माध्यम से आम नागरिक सीधे हरित ऊर्जा क्रांति का हिस्सा बनते हैं और अपने घरों में सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित करके पर्यावरण की रक्षा में योगदान करते हैं.

प्रदूषण मुक्त ऊर्जा स्रोत: सौर ऊर्जा पूरी तरह से प्रदूषण मुक्त है. जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला और पेट्रोलियम जलाने से वायु में हानिकारक गैसें और कण मिश्रित प्रदूषण फैलता है. इसके विपरीत, सौर पैनल से बिजली उत्पादन में कोई धुआँ, हानिकारक गैस या ध्वनि प्रदूषण नहीं होता. इसका सीधा लाभ स्वच्छ वायु और स्वास्थ्य पर पड़ता है, जिससे सांस की बीमारियाँ और प्रदूषण से संबंधित रोग कम होते हैं.

कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी: कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) मुख्य ग्रीनहाउस गैस है, जो ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है. एक सौर पैनल सिस्टम घर में CO_2 उत्सर्जन को प्रतिवर्ष लगभग 1.5-2 टन कम कर सकता है. यदि एक करोड़ घर इस योजना के तहत सोलर अपनाते हैं, तो करोड़ों टन CO_2 उत्सर्जन में कमी आ सकती है. इससे न केवल भारत के राष्ट्रीय कार्बन उत्सर्जन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है, बल्कि वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी कम किया जा सकता है.

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को घटाना: सौर ऊर्जा के व्यापक उपयोग से जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव में कमी आती है. औद्योगिक और घरेलू स्तर पर जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम होता है. ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन घटने से तापमान वृद्धि और मौसम के असामान्य बदलाव पर नियंत्रण रहता है. बाढ़, सूखा, और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. इस प्रकार, सौर ऊर्जा न केवल ऊर्जा उत्पादन का साधन है, बल्कि यह स्थायी और सुरक्षित पर्यावरण का भी संरक्षक है.

सतत और हरित जीवन शैली को प्रोत्साहन: पीएम सूर्य घर योजना नागरिकों को हरित जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करती है, घरों में सौर पैनल लगाने से लोग ऊर्जा संरक्षण और स्वच्छ ऊर्जा के प्रति जागरूक होते हैं. यह ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सौर ऊर्जा अपनाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है. छोटे स्तर पर ऊर्जा बचत, पुन: उपयोग और पर्यावरण अनुकूल निर्णयों को भी प्रोत्साहन मिलता है.

सामाजिक और सामूहिक प्रभाव: यदि यह योजना बड़े पैमाने पर लागू होती है, तो इसका सामूहिक प्रभाव विशाल होगा, देश के ऊर्जा क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ेगी. शहरों और गांवों में स्वच्छ वायु और स्वास्थ्य में सुधार होगा. आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और हरित पर्यावरण सुनिश्चित होगा. सौर ऊर्जा, और विशेष रूप से पीएम सूर्य घर योजना, न केवल बिजली की समस्या हल करती है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, जलवायु सुरक्षा और सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है. यदि इस योजना के तहत 1 करोड़ घर सौर ऊर्जा अपनाते हैं, तो यह न केवल करोड़ों टन CO_2 उत्सर्जन में कमी लाएगा, बल्कि देश को हरित, स्वच्छ और सतत भविष्य की ओर अग्रसर करेगा.

एल सी मीणा
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

'मेरा बैंक: मेरा परिवार' विषय पर आयोजित चित्रांकन प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों की प्रविष्टियां.

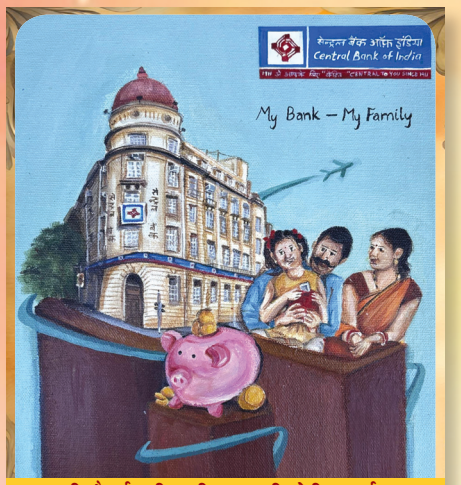

सुश्री सौन्दर्य, पुत्री, सुश्री एस माधुरी, क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद, प्रथम पुरस्कार

सुश्री रागिनी प्रिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई, तृतीय पुरस्कार

सुश्री अलिना एस वी, पुत्री सुश्री शिनी एस, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि, प्रोत्साहन पुरस्कार

सुश्री प्रांजली, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई,प्रोत्साहन पुरस्कार

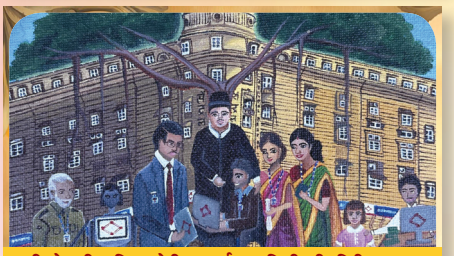

सुश्री सोनाक्षी वानिक, क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी, द्वितीय पुरस्कार

सुश्री करिश्मा सुल्ताना क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता उत्तर, प्रोत्साहन पुरस्कार

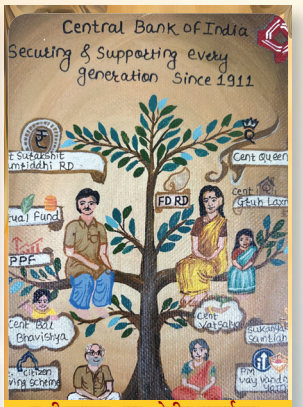

सुश्री काव्या आर, क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बटूर, प्रोत्साहन पुरस्कार

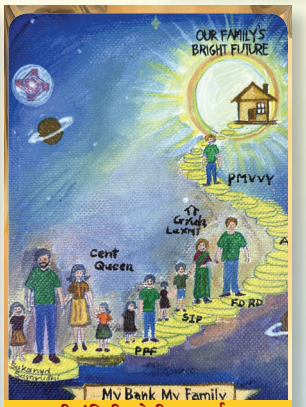

सुश्री नंदिनी, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर, प्रोत्साहन पुरस्कार

सुश्री रिमिता वाग, क्षेत्रीय कार्यालय, अपर असम, प्रोत्साहन पुरस्कार

श्री स्वपनी, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई, प्रोत्साहन पुरस्कार

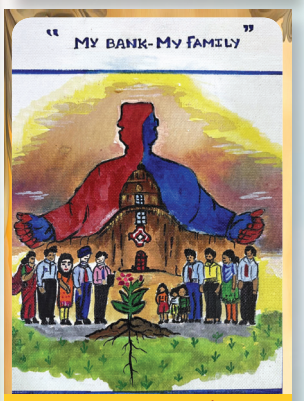

सुश्री रूही निशांत, पत्नि श्री फिर्दौस कमर, क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै, प्रोत्साहन पुरस्कार

श्री विपुल सनोदिया, क्षेत्रीय कार्यालय, छिंदवाड़ा, प्रोत्साहन पुरस्कार

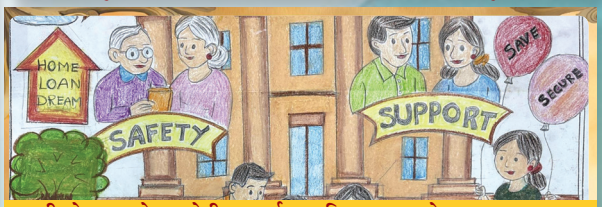

श्री गोपु राम मोहन, क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा, प्रोत्साहन पुरस्कार

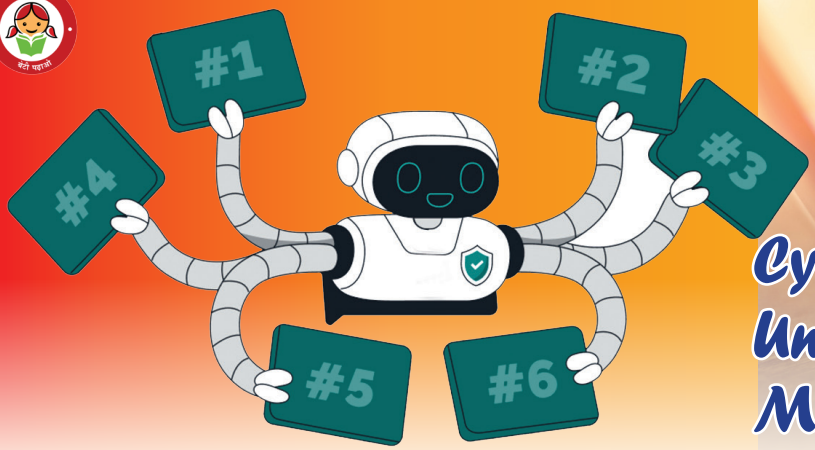

Cyber Fraud- Understanding the Types, Motives & Prevention

What are Cyber Frauds?

Cyber fraud also known as cybercrime or online fraud, is a term which is used to describe to any illegal activity that is carried out using the internet or digital technology to deceive, steal, manipulate or exploit individuals or organizations for financial gain. It includes wide range of fraudulent activities.

Increase in Digital Transaction

There has been a substantial rise in the digital transaction in our country over the past few years. The widespread adoption of technology & smartphones has also contributed to the increased digital penetration in remote areas as well as villages and suburban areas in our country. Large part of our population is now using various digital platforms such as UPI, Mobile Banking, Internet Banking to carry out financial transactions because of their convenience. But this convenience has also resulted in increase of cyber frauds.

Various Modus Operandi used by Cybercriminal for cheating the innocent customers:

- A customer put an advertisement to sell some item on online selling websites such as OLX, where he was contacted by the scammer and the scammers pretended to buy the item & offered advance payment and instead of paying, scammer influenced customer to pay instead.
- A customer put an advertisement to rent out his flat on online platform, where he was contacted by the scammer and the scammer pretended to be from ARMY and was interested as tenant & offered advance payment and instead of paying, scammer influenced customer to pay instead.
- Customer ordered some item online and didn't receive the item or item received was defective. When he searched the customer care no. of the that online store, he/she landed on fake website created by fraudster & under influence of fraudster, customer downloaded unknown APK files/Screen Sharing/Remote Access Applications which gave scammers full access of the customers' mobile device, after which scammer carried out the fraudulent transactions.
- Customer received call from someone pretending to be from some Courier Company and threatened customer that his courier will be cancelled if he did not pay upfront fees or GST amount and influenced customer to download APK files/Screen Sharing/ Remote Access Applications which gave scammers full access of the customer's mobile device, after which scammer carried out the fraudulent transactions.
- Customer searched the contact no. of the doctor on online search engine for appointment but landed on fake website created by fraudster & under influence of fraudster download Screen Sharing/ Remote Access Applications which gave scammers full access of the customers' mobile device, after which scammer carried out the fraudulent transactions.
- Customer received a WhatsApp message to receive high returns if he invests or performs some tasks. Performing task involved, giving 5-star rating to some websites or some positive comments and thereafter was lured to invest initially very small amounts, such as, Rs 2000/- with return of Rs. 2800/- . At first, he/she received Rs 2800/- there after he was assigned task with higher investment, such as, Rs 15000/- & more and also high return. When customer invested for once, he was again advised to invest Rs 15000/- or more or else he will lose all amount & thus resulting in loss to customer.
- Customer received a call from someone impersonating to be customer relative and said that his/her father had asked him to send you (customer) Rs 15,000/-. After some time, customer received a SMS (sent by fraudster and SMS was formatted in such a way that it appeared to be from some bank) that Rs. 50,000/ had been credited in your account (it was a fake message generated

by scammer; no amount credited to customers account). Immediately scammer again called the customer and informed him that by mistake he had sent Rs. 50,000/- instead of Rs. 15,000/- and asked customer to send him back Rs. 35,000/- the difference amount, which customer sent & got cheated.

- Customer received a call from someone impersonating to be from BSNL or any particular bank and informing the customer that his KYC has expired & he had to pay some trivial amount as upfront fees for account activation, under influence customer downloaded Screen Sharing/Remote Access Applications which gave scammers full access of the customers mobile device, after which scammer carried out the fraudulent transactions.
- Customer received a link on his device in the name of some social security schemes/benefits such as PM KISHAN.APK, believing that he will get some benefits, customer clicked getting his device compromised & unauthorized debits.
- Customer received call from an unknown number pretending to be from FedEx stating that a parcel has been booked under his name to some foreign country containing illegal drugs, fake passports etc. and if it didn't pertain to customer then he might help him in contacting cybercrime department. He then transferred customers call to some other person impersonating as officer from Law Enforcement Agency, who then connected the customer to skype and created an atmosphere in his background making customer believe that he was actually from a Law Enforcement Agency, wearing dress resembling an official of police authority. Fraudsters then narrated the customer that his KYC is being misused by cybercriminals and his name is involved in some international smuggling case. They made customer isolate them from their family members, not allowing to attend any calls and to remain silent as it pertains to national security. They also show customer, fake arrest warrant in their names and threatened the customer, that if he wants to safeguard himself then he had to cooperate with them. They then make customer to share confidential details or to transfer all the funds held in his account to an account of RBI for further investigation, which they assure will be returned after the investigation. They created mental pressure on customer to transfer all the funds.

Cyber Security Awareness – Do's & Don'ts

General Precautions:

Do's ✓	Don'ts ✗
Click links only from trusted/known sources	Don't click on suspicious links or download unknown attachments
Keep your phone, computer, and apps updated	Don't share personal/ banking details like OTP, PIN, or CVV
Use strong passwords and lock your devices	Don't share your confidential details such as KYC details, Bank Details, Personal Details publicly on social media.

Suspicious Calls:

Do's ✓	Don'ts ✗
Verify caller's identity before sharing info.	Don't talk long with unknown callers
Show caution while receiving call from unknown number especially those claiming from government agencies	Don't answer video calls from unknown numbers
Be cautious about sharing sensitive information, such as Aadhar numbers, bank details and passwords over phone.	Don't share personal or bank info on such calls.

WhatsApp Safety:

Do's ✓	Don'ts ✗
Respond only to known contacts.	Don't open links or attachments from unknown numbers
Scammers rely on fear and panic. If you feel pressured or threatened, end the call immediately	Show caution before clicking links/attachment from known contact also.
Enable two-step verification in WhatsApp	Don't click files with names .APK

Voice Masking (Voice Spoofing) :

Do's ✓	Don'ts ✗
Use secure apps for sensitive talks	Don't share personal/ bank info on calls
Utilize call blocking apps or services offered by your phone carrier to filter out potential scam calls.	Minimize the amount of high-quality voice recordings or voice of yourself & your family on social media platforms.

Phishing (Fake Emails/Websites):

Do's ✓	Don'ts ✗
Check the senders email address for misspellings or inconsistencies.	Do not reply, click links or download anything suspicious.
Always check website URL carefully	Don't trust emails with generic greetings
If received any suspicious mail, contact the sender/ organization, through trusted channel.	Don't react to urgent messages or "too good to be true" offers.

SIM Card Swapping:

Do's ✓	Don'ts ✗
Contact your mobile carrier service immediately, if you lose cell service unexpectedly	Don't share your contact information widely or post it in social media platform.
If you suspect a SIM swap, contact your bank immediately for blocking/ freezing of your account	Don't entertain any offers related to conversion of network from 4G to 5G from unknown sources, it may be fraudulent.

ATM / Debit Card Safety:

Do's ✓	Don'ts ✗
Cover the keypad with your hand when entering your PIN at ATM/POS.	Don't let others stand too close at ATMs.
Check ATM for any hidden cameras or loose parts/ tampering	Don't take help of unknown while transacting.
Change your PIN regularly & block the card immediately, if stuck in ATM or lost/ stolen	Don't contact unknown number pasted in ATM room, if any help required inside ATM, contact on bank Toll Free No.

Safety from Digital Arrest:

Do's ✓	Don'ts ✗
Do stay calm, scammers use tactics such as immediate arrest & legal jargons (e.g. "Section 420 IPC," "money laundering") to create fear & urgency	Don't panic or get pressured into quick action.
End the call or video chat as soon as you suspect them.	Don't share personal or financial information
Call National Cyber Crime Helpline at 1930.	Don't transfer any amount, legitimate authorities will never ask for money over phone, especially for "bail" / "surety" amount or for verification

Stay Alert Stay Safe

- Use strong, Unique Passwords.
- Wherever possible, enable Multi-Factor Authentication such as mails/WhatsApp etc.
- Keep your phone/laptop/PC Software & system updated.
- Use Secure Wi-Fi Connections.
- Think before you post anything online, remember it can stay online forever.
- Check your device for any unknown & unnecessary Apps/APK file, if not required delete immediately.
- Regularity check SMS & financial statements.
- Dial *#21# to check if your Calls/OTPs are being diverted/forwarded.
- Fraudster may misuse this to commit fraud. Stop it with ##002#.
- If by mistake, someone has clicked any unknown link and malicious APK has been installed in his/ her device, uninstall the APK file from the device immediately.
- It is advised to reset the confidential credentials such as User ID, MPIN, TPIN, Transaction Password, if transactions are not performed by you.
- In case of emergency, our bank customer can block UPI through SMS by sending an SMS text word "BLOCK" to 7738002672 through their registered mobile number or give a miss call to 7668122122 through their registered mobile number

If you encounter any suspicious or fraudulent activity, report it to your bank and with Law Enforcement Agencies immediately. Taking these precautions will significantly reduce the risk of falling victim to digital transaction fraud and help protect your financial and personal information. Remember that staying vigilant and cautious is essential when conducting transactions in the digital world.

Amit Sharma
Chief Manager
Customer Care Dept, Central Office

जन-जन का बैंक: सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

भारत के बैंकिंग इतिहास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया एक ऐसा नाम है जिसने अपनी स्थापना के क्षण से ही जन-केन्द्रित बैंकिंग, राष्ट्रीय दायित्व और विश्वसनीयता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है. 21 दिसंबर 1911 को सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा स्थापित यह बैंक देश का **पहला पूर्णतः भारतीय स्वामित्व वाला वाणिज्यिक बैंक** था. एक ऐसा संस्थान जिसने ''स्वदेशी बैंक'' की अवधारणा को साकार करते हुए आर्थिक स्वतंत्रता के बीज बोए. आज, एक सदी से अधिक समय बाद भी, बैंक उसी ऊर्जा, प्रतिबद्धता और नवाचार भावना के साथ आम जनता की समृद्धि के लिए कार्यरत है. यह लेख सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की गौरवशाली विरासत, उपलब्धियों और उज्जवल भविष्य की ओर उसकी निरंतर प्रगति का विस्तृत परिचय प्रस्तुत करता है.

गौरवशाली विरासत की शुरुआत

1911 का भारत औपनिवेशिक बंधनों में जकड़ा था, और उस दौर में बैंकिंग व्यवस्था मुख्यतः विदेशी हाथों में थी. ऐसे समय में सर सोराबजी पोचखानावाला का यह प्रयास न केवल साहसपूर्ण था, बल्कि एक राष्ट्रीय आंदोलन भी था, जिसने भारतीय व्यापारियों, किसानों, उद्यमियों और आम जनता में आत्मविश्वास जगाया. बैंक ने शुरुआत से ही जनता के विश्वास को सर्वोपरि मानते हुए पारदर्शिता, सुलभता और भरोसे की मूल्य-व्यवस्था अपनाई. इसके कारण धीरे-धीरे यह न केवल शहरों में, बल्कि दूरदराज ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोगों की पहली पसंद बन गया.

स्वतंत्रता आंदोलन से आर्थिक निर्माण तक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने केवल बैंकिंग सेवाएं प्रदान नहीं की, बल्कि भारत के राष्ट्रीय विकास की अनेकों महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं से भी जुड़ा. स्वतंत्रता संघर्ष काल में स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देना, भारतीय व्यापारिक समुदाय को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना और शिक्षा-स्वास्थ्य जैसी सामाजिक आवश्यकताओं में सहयोग बैंक की राष्ट्रीय भावना के उदाहरण रहे हैं.

स्वतंत्रता के बाद जब राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई, तब भी इस बैंक ने औद्योगिक विकास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने और आम नागरिकों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई. बैंक ने कृषि ऋण, आत्मरोजगार, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा ऋण जैसी सेवाओं के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंच बनाई.

नवाचार और उपलब्धियों की श्रृंखला

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया कई प्रगतिशील पहलें शुरू करने के लिए भी जाना जाता है.

- यह भारत का **पहला बैंक** था जिसने क्रेडिट कार्ड (Central Card) की अवधारणा प्रस्तुत की.
- कई सामाजिक और आर्थिक योजनाएँ - जैसे स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री जनधन योजना, मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना आदि - को देशभर में सफलतापूर्वक लागू करने

का श्रेय भी इसके व्यापक नेटवर्क और समर्पित कर्मचारियों को जाता है.

- बैंक ने MSME, स्टार्ट-अप, कृषि एवं ग्रामीण विकास तथा डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में अग्रणी कदम उठाए, जिससे लाखों लोगों को रोजगार और आत्मनिर्भरता का अवसर मिला.

अपने विशाल नेटवर्क के माध्यम से बैंक आज भी भारत के हर हिस्से को वित्तीय सेवाओं से जोड़ रहा है.

डिजिटल बैंकिंग की ओर सशक्त कदम

समय के साथ बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन आवश्यक हो गया. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने ''फ्यूचर-रेडी बैंकिंग'' की दिशा में कई अत्याधुनिक सेवाएँ विकसित कीं - जैसे:

- **Net Banking**
- **Cent Mobile App**
- **ई-मुद्रा एवं डिजिटल लोन प्लेटफ़ॉर्म**
- **UPI, IMPS, NEFT आधारित सेवाओं में तेजी और सुलभता**

इन नवाचारों से न सिर्फ ग्राहकों को सुविधा मिली, बल्कि बैंक की दक्षता और पारदर्शिता भी बढ़ी. आज बैंक अपने डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म को सुरक्षित, आधुनिक और पूर्णत: ग्राहक-हितैषी बनाने की दिशा में निरंतर अग्रसर है.

ग्रामीण और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने सदैव यह माना कि भारत की वास्तविक शक्ति उसके गांवों में बसती है. यही कारण है कि बैंक ने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय साक्षरता केंद्रों की स्थापना, किसान क्रेडिट कार्ड वितरण, स्वयं सहायता समूहों का गठन, महिला उद्यमियों को ऋण सुविधा और कृषि क्षेत्र में विशेष योजनाओं के माध्यम से व्यापक कार्य किया.

स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण, हरित परियोजनाओं, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और कौशल विकास कार्यक्रमों को समर्थन देना बैंक की निरंतर सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है.

कर्मचारियों और ग्राहकों का अटूट विश्वास

किसी भी संस्था की शक्ति उसके मानव संसाधन और ग्राहकों में निहित होती है. बैंक के समर्पित अधिकारी-कर्मचारी आज भी अपने पेशेवर व्यवहार, ग्राहक-सेवा भावना और ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं. उनकी मेहनत और जनसेवा के कारण ही बैंक ने हर चुनौतीपूर्ण समय - चाहे आर्थिक मंदी हो या तकनीकी बदलाव - को मजबूती और स्थिरता के साथ पार किया.

ग्राहकों का भरोसा इस बैंक की सबसे बड़ी पूंजी है, जिसने इसे 114 से अधिक वर्षों तक निरंतर विकास की राह पर आगे बढ़ाए रखा.

उज्ज्वल भविष्य की ओर - एक निरंतर यात्रा

''1911 से निरंतर'' केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की उस अनवरत यात्रा का प्रतीक है जो आज भी जारी है. बैंक आने वाले वर्षों में निम्न दिशा-निर्देशों के साथ आगे बढ़ रहा है:

- डिजिटल और एआई आधारित बैंकिंग को और अधिक सुदृढ़ बनाना.
- ग्रामीण एवं कृषि क्षेत्र में वित्तीय समावेशन बढ़ाना.
- एमएसएमई और स्टार्ट-अप सेक्टर के लिए आधुनिक वित्तीय समाधान.
- पर्यावरण-अनुकूल (Green Banking) पहल.
- युवा-उन्मुख, त्वरित, सुरक्षित और पारदर्शी बैंकिंग सेवाएँ.

इन सभी प्रयासों के माध्यम से बैंक एक भविष्य-उन्मुख, आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा रहा है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की कहानी केवल एक बैंक की कहानी नहीं है - यह भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्वदेशी भावना और सामाजिक उत्थान की अनूठी यात्रा है. 1911 से लेकर आज तक, यह बैंक लगातार लोगों के सपनों, जरूरतों और प्रगति का साथी बना हुआ है.

गौरवशाली विरासत और आधुनिक दृष्टिकोण के संगम से सुसज्जित यह बैंक आने वाले वर्षों में भी भारतीय बैंकिंग जगत में अपनी प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता और सेवा-भावना की रोशनी बिखेरता रहेगा.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया - 114 वर्षों की अटूट सेवा, भरोसा और नवाचार की यात्रा उज्जवल भविष्य की ओर निरंतर.

भास्कर व्यास
प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

ग्रीन डिपॉजिट और ग्रीन फाइनैन्स: चुनौतियाँ एवं अवसर

प्रस्तावना:-भारत, जो 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है. एक निर्णायक चुनौती का सामना कर रहा है - अपने तीव्र विकास को पर्यावरणीय स्थिरता के साथ संतुलित करना. भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि एक कीमत पर आयी है, यदि मौजूदा रुझान जारी रहे तो 2030 तक इसके कार्बन उत्सर्जन में 50% की बढ़ोतरी होने का अनुमान है. इससे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक जोखिम उत्पन्न होते हैं.

हालांकि, भारत हरित वित्त क्षेत्र में असाधारण अवसर भी प्रस्तुत करता है. जिसके 2030 तक 1.4 ट्रिलियन डॉलर के बाजार तक पहुंचने का अनुमान है. आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हुए पर्यावरणीय गिरावट को कम करने के लिए भारत के लिए हरित वित्त योजनाएं महत्वपूर्ण हैं. वे भारत के महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों के अनुरूप अक्षय ऊर्जा, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और टिकाऊ बुनियादी ढांचे में निवेश की सुविधा प्रदान करते हैं. हरित पहलों को बढ़ावा देकर, ये योजनाएं नवाचार को बढ़ावा देती हैं, रोजगार सृजित करती हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति लचीलापन बढ़ाती हैं. अंततः वे भारत और उसके नागरिकों के लिए अधिक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं.

ग्रीन इकोनॉमी का इतिहास :-

- ग्रीन इकोनॉमी शब्द का पहली बार इस्तेमाल 1989 में यूनाइटेड किंगडम सरकार के लिए प्रमुख पर्यावरण अर्थशास्त्रियों के एक समूह द्वारा की गई रिपोर्ट में किया गया था. 1997 में क्योटो प्रोटोकॉल ने जलवायु से संबंधित वित्तीय तंत्रों के लिए शुरुआती आधार तैयार किया.
- ग्रीन फाइनेंस में भारत की यात्रा को जलवायु परिवर्तन और संधारणीय विकास पर अंतर्राष्ट्रीय चर्चाओं में इसकी भागीदारी से जोड़ा जा सकता है. देश 1992 में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) का एक पक्ष बन गया, जिसने पर्यावरण संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता का संकेत दिया.
- 2015 में पेरिस समझौते को अपनाने से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता और मजबूत हुई.

''ग्रीन फाइनैन्स'' और ''ग्रीन डिपॉजिट'' से आशय

21वीं शताब्दी में मानव सभ्यता जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति कर रही है, वहीं पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन भी गंभीर चिंता का विषय बन चुके हैं. प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि और ग्लोबल वार्मिंग ने हमें यह सोचने पर विवश कर दिया है कि आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है. इसी सन्दर्भ में ''ग्रीन फाइनैन्स'' और ''ग्रीन डिपॉजिट'' जैसे उपायों को अपनाना समय की मांग बन चुका है.

ग्रीन फाइनैन्स वह प्रक्रिया है जिसमें वित्तीय संसाधनों को पर्यावरण हितैषी और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु इस्तेमाल किया जाता है. वहीं ग्रीन डिपॉजिट वह व्यवस्था है जिसमें आम नागरिकों द्वारा बैंक में जमा की गई धनराशि को केवल उन परियोजनाओं में निवेश किया जाता है जो पर्यावरण के अनुकूल हों. यह न केवल आर्थिक रूप से लाभकारी है बल्कि एक सामाजिक उत्तरदायित्व भी है.

ग्रीन फाइनैन्स के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

- **अक्षय ऊर्जा:** सौर, पवन, जल और बायोमास ऊर्जा में निवेश।
- **ग्रीन बिल्डिंग्स:** ऊर्जा कुशल भवन और शहरी नियोजन।
- **इलेक्ट्रिक वाहन:** वाहनों के विद्युतीकरण हेतु ऋण सुविधा।
- **जल संरक्षण:** सीवेज उपचार, वर्षा जल संचयन प्रणाली।
- **सतत कृषि:** रसायन रहित जैविक खेती को वित्तीय सहायता।

''ग्रीन फाइनैन्स केवल पर्यावरण सुरक्षा तक सीमित नहीं है, यह रोजगार सृजन, स्वास्थ्य सुधार, और सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देता है।''

भारत में ग्रीन डिपॉजिट की वर्तमान स्थिति:-

देश आज के समय में ग्रीन एनर्जी की तरफ तेजी से बढ़ रहा है. बैंकों की ओर से ग्रीन प्रोजेक्ट्स की फाइनेंसिंग को प्रमोट किया जा रहा है. इसी वजह से बैंकों द्वारा ग्रीन एफडी शुरू की गई है. ये एफडी करीब-करीब आम एफडी की तरह ही होती है. इन्हें डिपॉजिट इंश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉर्पोरेशन एक्ट, 1961 के तहत कवर किया जाता है. इस वजह से ग्रीन एफडी में पैसा डूबने का कोई खतरा नहीं होता है. मौजूदा समय में एसबीआई, बैंक ऑफ बड़ौदा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, एयू बैंक, इंडसइंड बैंक, एचडीएफसी, यूनियन बैंक,फेडरल बैंक, एचएसबीसी और डीबीएस जैसे बैंक भी ग्रीन फिक्स डिपॉजिट्स योजना में निवेश की सुविधा दे रहे हैं. कुछ बैंकों के ब्याज दर निम्नवत हैं :-

बैंक का नाम	स्कीम का नाम	समयावधि	ब्याज दर
एसबीआई	एसबीआई ग्रीन रुपया सावधि जमा	1111 दिन	6.20%
बैंक ऑफ बड़ौदा	बॉब अर्थ ग्रीन सावधि जमा	1111 दिन	6.35%
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	सेन्ट ग्रीन डिपॉजिट	1111 दिन	7.00%
ए यू स्मॉल फाइनैन्स बैंक	प्लैनेट फर्स्ट	36 महीने से 45 महीने	7.00%

ऑनलाइन निवेश पर मिलता है अतिरिक्त रिटर्न:- फाइनेंशियल एक्सपर्ट जितेंद्र सोलंकी बताते हैं कि अगर निवेशक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का विकल्प चुनते हैं यानी अगर वह पोर्टल या मोबाइल एप्लीकेशन्स के जरिए ग्रीन डिपॉजिट्स में निवेश करते हैं तो उन्हें 50 लाख रुपए तक के निवेश पर 0.1% का अतिरिक्त रिटर्न मिलता है।

भारत में ग्रीन फाइनैन्स की वर्तमान स्थिति:-

भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) लखनऊ के एक अध्ययन के अनुसार, जिन बैंकों के पास ग्रीन लोन का अधिक हिस्सा होता है, वे लंबे समय में अधिक वित्तीय स्थिरता हासिल करते हैं. यह शोध Finance Research नामक प्रतिष्ठित जर्नल में प्रकाशित हुआ है. इसमें बताया गया है कि अगर बैंक कम प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को अधिक लोन देते हैं, तो उनके लोन पोर्टफोलियो की गुणवत्ता बेहतर हो सकती है. यह शोध भारतीय बैंकिंग सिस्टम में टिकाऊ (सस्टेनेबल) लोन की रणनीतिक अहमियत को दर्शाता है.

सेबी द्वारा ग्रीन क्रेडिट पर स्वैच्छिक प्रकटीकरण की शुरुआत:-

28 मार्च, 2025 को, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए व्यापार करने में आसानी बढ़ाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण उपायों की शुरुआत करते हुए परिपत्र जारी किया. ये उपाय पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) प्रकटीकरणों को संशोधित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, विशेष रूप से मूल्य श्रृंखला के संबंध में, और व्यावसायिक जिम्मेदारी और स्थिरता रिपोर्टिंग (बीआरएसआर) कोर के मूल्यांकन या आश्वासन के लिए विकल्प प्रदान करते हैं. इसके अतिरिक्त, परिपत्र में ग्रीन क्रेडिट से संबंधित स्वैच्छिक प्रकटीकरण प्रस्तुत किए गए हैं.

हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में आरबीआई के प्रयास:-

आरबीआई का दृष्टिकोण: आरबीआई ने जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त पर जुलाई 2022 के अपने चर्चा पत्र के बाद से हरित अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को संबोधित करने के लिए वृद्धिशील प्रगति की है.

हरित विधियाँ, भारत में पहले जारी: आरबीआई ने पिछले साल जनवरी और फरवरी में दो किस्तों में 2028 और 2033 में

परिपक्वता के साथ 16,000 करोड़ रुपये मूल्य के एसजीआरबी जारी किए थे.

सांविधिक तरलता अनुपात (एसएलआर) के अंतर्गत वर्गीकरण: इसके अलावा, इन हरित सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) को एसएलआर के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया.

उच्च स्वीकृति: दुनिया भर में केंद्रीय बैंक और सरकारें वित्तीय संस्थानों को हरित भविष्य की ओर संक्रमण को तेज करने के लिए ग्रीनियम को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं.

भारतीय बैंकों द्वारा ग्रीन फाइनैन्सिंग के लिए प्रयास:- अब सभी को समझ में आने लगा है कि आगे भविष्य ग्रीन फाइनैन्सिंग का ही है और सभी बैंक भी इसको भली भांति समझकर इस ओर अपने अनूठे कदम बढ़ा रहे हैं. कुछ भारतीय बैंकों की ऋण योजना निम्नवत हैं जो ग्रीन फाइनैन्सिंग को बढ़ावा दे रही हैं :-

बैंक ऑफ बड़ौदा की योजना:- पी एम सूर्य घर योजना, सौर गृह प्रकाश योजना, सोलर प्रोजेक्ट हेतु ऋण, बड़ौदा ऊर्जा दक्षता परियोजना (बीईईपी) वित्त, कम्प्रेस्ड बायोगैस हेतु ऋण इत्यादि.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की योजना:- सेन्ट गो ग्रीन कार लोन, सेन्ट पीएम कुसुम योजना, सेन्ट SPICE योजना, सेन्ट GIFT योजना इत्यादि.

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की योजना:- एसबीआई ग्रीन रुपया सावधि जमा, सूर्य शक्ति सोलर ऋण, ग्रीन कार लोन इत्यादि.

FAME योजना (Faster Adoption and Manufacturing of Hybrid and Electric Vehicles):- यह भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई एक योजना है. इसका उद्देश्य इन वाहनों को तेजी से अपनाना और विनिर्माण को बढ़ावा देना है. राष्ट्रीय विद्युत गतिशीलता मिशन योजना (NEMMP) के तहत विशेष रूप से देश के ऑटोमोबाइल क्षेत्र के लिए इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, यात्री कारों और बसों के विकास के लिए एक सरकारी सब्सिडी योजना है.

FAME योजना के दो मुख्य चरण हैं:

FAME I: 2015 में शुरू की गई, यह योजना 2019 तक चली.

FAME II: 1 अप्रैल, 2019 से शुरू हुई और यह योजना 5 साल के लिए लागू है जिसमें 10,000 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ लॉन्च किया गया था.

FAME योजना के तहत, सरकार इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों की खरीद पर सब्सिडी प्रदान करती है। FAME II योजना के तहत, इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों पर 15,000 रुपये तक की सब्सिडी उपलब्ध है, जो वाहन की एक्स-फैक्टरी लागत के 15% तक सीमित है।

इसके अलावा और भी अनूठे कदम सरकार और विभिन्न मंत्रालयों द्वारा लिए जा रहें हैं जैसे कि:-

1) राष्ट्रीय सौर मिशन
2) ग्रीन हाइड्रोजन मिशन
3) सेबी द्वारा ग्रीन बॉन्ड्स के लिए दिशानिर्देश
4) FAME योजना इत्यादि

अवसर:-

1) **पर्यावरण संरक्षण:** ग्रीन डिपॉजिट और फाइनैन्स से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है.
2) **आर्थिक विकास:** नई तकनीकों और हरित उद्यमों में निवेश से आर्थिक विकास के नए अवसर सृजित होते हैं.
3) **रोज़गार सृजन:** सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, अपशिष्ट प्रबंधन आदि क्षेत्रों में नई नौकरियाँ पैदा होती हैं.
4) **ग्रामीण विकास:** ग्रीन परियोजनाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में जल, बिजली और स्वच्छता के स्तर को सुधारती हैं.
5) **नवाचार को बढ़ावा:** स्वच्छ ऊर्जा और तकनीक में अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलता है.
6) **नैतिक निवेश:** निवेशकों को अपने पैसों को सामाजिक और पर्यावरणीय भलाई में लगाने का अवसर मिलता है.
7) **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** भारत जैसे देश वैश्विक जलवायु फंड्स से सहायता प्राप्त कर सकते हैं.

भारतीय हरित भवन परिषद का गठन भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा 2001 में किया गया था। सोहराबजी ग्रीन बिजनेस सेंटर हैदराबाद में स्थित है, जो भारत की पहली प्लेटिनम रेटेड ग्रीन बिल्डिंग और नेट जीरो एनर्जी बिल्डिंग है।

चुनौतियाँ:-

1) **ग्रीनवॉशिंग:** कई कंपनियाँ केवल दिखावे के लिए ग्रीन होने का दावा करती हैं जबकि उनके कार्य व्यवहार में कोई बदलाव नहीं होता.

2) **निगरानी की कमी:** ग्रीन डिपॉजिट का वास्तविक उपयोग कहाँ हो रहा है, इसका सटीक मूल्यांकन कठिन होता है.

3) **नीति और विनियमन का अभाव:** ग्रीन फाइनैन्स के लिए स्पष्ट और मजबूत नीति ढांचे की कमी है.

4) **प्रारंभिक लागत:** ग्रीन प्रौद्योगिकियाँ महँगी होती हैं, जिससे निवेशकों को जोखिम महसूस होता है.

5) **जागरूकता की कमी:** आम नागरिक और छोटे निवेशक ग्रीन फाइनैन्स की अवधारणा से अपरिचित हैं.

6) **डेटा और प्रमाणन का अभाव:** ग्रीन परियोजनाओं के प्रभाव की विश्वसनीय रिपोर्टिंग की आवश्यकता है.

7) **स्थिर रिटर्न की अनिश्चितता:** निवेशकों को लाभ के लिए अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है.

समाधान एवं सुझाव

- **स्पष्ट नियामक ढांचा:** सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक को मिलकर एक पारदर्शी और कड़े नियामक ढांचे की स्थापना करनी चाहिए.
- **कर प्रोत्साहन:** ग्रीन निवेश पर टैक्स छूट या रियायतें दी जाएँ.
- **ग्रीन सर्टिफिकेशन प्रणाली:** ग्रीन प्रोजेक्ट्स के लिए प्रमाणन की प्रक्रिया को अनिवार्य किया जाए.
- **जागरूकता अभियान:** नागरिकों और व्यवसायों को ग्रीन फाइनैन्स के लाभों के प्रति शिक्षित किया जाए.
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** PPP मॉडल के माध्यम से अधिक ग्रीन परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाए.
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म:** ग्रीन निवेश को बढ़ावा देने के लिए विशेष मोबाइल एप और पोर्टल्स बनाए जाएँ.
- **निगरानी और रिपोर्टिंग प्रणाली:** प्रत्येक ग्रीन प्रोजेक्ट की निगरानी के लिए एक स्वतंत्र संस्था की स्थापना हो.

निष्कर्ष:-

ग्रीन डिपॉजिट और ग्रीन फाइनैन्स केवल एक वित्तीय अवधारणा नहीं, बल्कि एक विचारधारा है जो आर्थिक विकास को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ संतुलित करती है. वर्तमान समय में जब जलवायु संकट मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन चुका है, तब ऐसे उपायों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है. भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह एक चुनौती तो है, परन्तु इससे जुड़े अवसर कहीं अधिक हैं.

यदि हम नीति निर्माताओं, निवेशकों, और आम जनता के रूप में अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाएँ, तो ग्रीन फाइनैन्स न केवल एक आर्थिक साधन होगा बल्कि एक सतत भविष्य की नींव भी रखेगा. इस दिशा में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका अहम है. ग्रीन डिपॉजिट के माध्यम से हम अपनी छोटी पूंजी से भी बड़े परिवर्तन की ओर कदम बढ़ा सकते हैं.

इसलिए, यह आवश्यक है कि हम ''हरित वित्त'' को केवल विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता के रूप में देखें और एक स्वच्छ, सुरक्षित, और समृद्ध भारत की ओर अग्रसर हों.

संदर्भ स्रोत:-

(Indian Express Article) https://indianexpress.com/article/business/banking-and-finance/Ri-issues-framework-for-acceptance-of-green-deposits-by-banks-nbfcs-8551078/

(IJNRD Journal Paper) https://ijnrd.org/papers/IJNRD2402245.pdf

(Bhaskar News) https://www.bhaskar.com/lifestyle/news/green-deposit-funds-investment-benefits-explained-interest-rates-features-132491725.html#:.:

(Explaner Article on Green Building) https://www-pnnl-gov.translate.goog/explainer-articles/green-buildings?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr¡to=tc

(Wikipedia) https://en-m-wikipedia- org.translate.goog/wiki/Green_building_in_India?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr¡to=tc

(Zeebiz Banking News) https://www.zeebiz.com/hindi/banking/banks-offering-greater-proportion-of-green-loans-have-stronger-financial-stability-says-iim-research-202973

(RBI Latest Report) https://pwonlyias-com.translate.goog/current-affairs/Ri-latest-report-and-green-taxonomy/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr¡to=tc

(Green Credits) https://www-legalitysimplified-com.translate.goog/introduction-of-voluntary-disclosure-on-green-credits-by-sebi/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr¡to=tc

(Gyansky) https://gyansky.com/fame-india-scheme/

पंकज रावत
संकाय प्रमुख
सीबीओटीसी, कोलकाता

केन्द्रीय कार्यालय,

Celebrating 115th Foundation Day

...orating
15th
...tion Day

...य, मुंबई में आयोजित
...वस कार्यक्रम के कुछ
...हारी दृश्य

Continuous Clearing: Transforming India's Cheque Truncation Landscape

1. Introduction

The Reserve Bank of India (RBI), in its continued endeavour to modernize the banking and payment systems, has announced the implementation of Continuous Clearing under the Cheque Truncation System (CTS). This transformational initiative, rolled out in the first phase from October 4, 2025, and to be fully operational in the second phase from January 3, 2026, marks a decisive step toward enhancing efficiency, transparency, and speed in cheque-based transactions.

Cheque truncation—the process of clearing cheques based on their electronic images rather than physical movement—was introduced to reduce processing time, minimize fraud, and standardize clearing operations across India.

Continuous Clearing aims to eliminate these constraints by enabling real-time or near-real-time processing of cheques as and when they are presented, thereby transforming the conventional batch-based clearing into a continuous flow model.

2. Evolution of Cheque Clearing in India

2.1. Early Physical Clearing

Before digitalization, cheque clearing was entirely manual. Physical instruments were transported between banks through local clearing houses, consuming significant time and resources. Settlement cycles often extended over several days, and geographical barriers limited efficiency.

2.2. Introduction of MICR and CTS

The introduction of the Magnetic Ink Character Recognition (MICR) system in the 1980s standardized cheque processing. However, it was the Cheque Truncation System (CTS), launched by the RBI in 2008, that revolutionized clearing by replacing the movement of physical cheques with scanned images and electronic data.

CTS made cheque processing faster and safer. It enabled centralized image-based clearing across regions, reducing settlement time to T+1 or even same day in certain centers.

2.3. Limitations of Session-Based CTS

Despite its success, CTS clearing was still confined to two or three pre-defined clearing sessions per day. Cheques deposited after the cut-off time were pushed to the next session, delaying credit to customers. Similarly, returns were processed in separate sessions, leading to inefficiencies in re-presentation, fund management, and liquidity forecasting.

Continuous Clearing seeks to address these limitations by abolishing fixed clearing windows and introducing a dynamic, continuous settlement model.

3. Concept of Continuous Clearing

Continuous Clearing is a real-time cheque clearing mechanism under which banks can present cheques continuously throughout the working hours instead of adhering to pre-defined presentation windows. The presentation, validation, decision, and return of cheques will occur in a rolling manner without session boundaries.

Key Features:

1. **Session less Operation:** Continuous clearing operates without fixed time slots, enabling continuous presentation and return.
2. **Automated Workflow:** Image and data are processed by the clearing house as soon as received.
3. **Faster Settlement:** Funds are credited or returned almost in real time, reducing float.
4. **Enhanced Liquidity Management:** Real-time settlement data improves cash flow prediction and treasury operations.
5. **24x7 Readiness:** While initially within banking hours, the system is designed to scale toward 24x7

processing, aligning with RBI's long-term digital vision.

4. Objectives of Continuous Clearing

The RBI's initiative is driven by multiple strategic objectives:

1. **Speed and Efficiency:** To reduce the time lag between cheque presentation and settlement.
2. **Customer Convenience:** To ensure faster credit to customers' accounts, enhancing user satisfaction.
3. **Operational Standardization:** To unify clearing operations across all centers and banks.
4. **Digital Integration:** To align cheque clearing with digital payment systems such as NEFT, RTGS, and UPI.
5. **Fraud Risk Mitigation:** Continuous monitoring and faster rejection reduce the risk of misuse.
6. **Financial Inclusion:** Ensures quicker fund availability, especially benefiting customers in semi-urban and rural branches.

5. Benefits for Customers

Continuous Clearing offers significant advantages for customers and businesses, including:

5.1. Faster Fund Availability

Customers no longer have to wait for the next clearing session. Cheques deposited even late in the day can be processed immediately, allowing faster credit of funds.

5.2. Reduced Uncertainty

With near-instant validation, customers can quickly know whether a cheque is cleared or returned, enabling timely financial decisions.

5.3. Improved Transparency

The process generates clear audit trails and enables real-time status tracking through online banking or mobile applications.

5.4. Better Liquidity Management

Corporate clients and SMEs can manage working capital more efficiently, as funds are released or returned swiftly.

5.5. Reduced Transaction Cost

Shorter float periods reduce the need for overdrafts or interim financing, indirectly cutting costs for both individuals and businesses.

6. Operational Workflow

The process details are depicted in the following diagram:

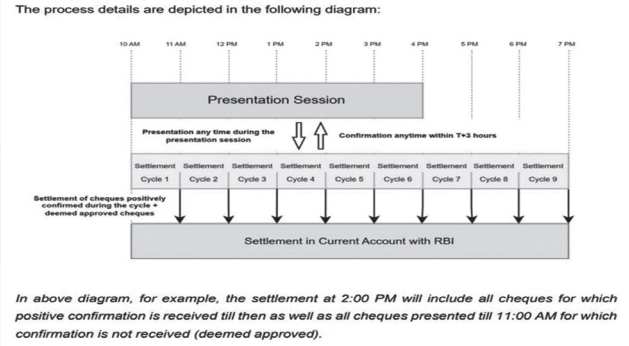

In above diagram, for example, the settlement at 2:00 PM will include all cheques for which positive confirmation is received till then as well as all cheques presented till 11:00 AM for which confirmation is not received (deemed approved).

In the continuous model:

1. Cheques are scanned and transmitted in real-time by the presenting bank.
2. The clearing house immediately processes and routes data to the drawee bank.
3. The drawee bank validates the cheque and sends a decision (pay/return) continuously.
4. Settlement occurs dynamically, reducing end-of-day loads.

7. Major Issues and Challenges

While Continuous Clearing promises speed and efficiency, it also introduces new operational, technological, and regulatory challenges:

7.1. Technology Infrastructure

Banks must ensure high system uptime, scalable processing power, and robust network bandwidth. Continuous operations demand zero tolerance

for downtime. In the initial days of Continuous Clearing there was poor response from the portals of NPCI like APTRA and NAS through which various clearing reports are uploaded/ downloaded. However now it is being stabilised.

7.2. Data Synchronization

Real-time cheque presentation requires accurate synchronization between bank core systems, image archive servers, and the clearing house.

7.3. Resource Management

Banks will need round-the-clock availability of trained personnel in operations, IT, and reconciliation departments.

7.4. Return Management

Instantaneous returns require efficient alert systems and integration with customer communication channels.

7.5. Fraud Risk

While digital clearing reduces physical fraud, real-time processing reduces the window for fraud detection, necessitating stronger AI-based risk monitoring.

7.6. Regulatory Compliance

Ensuring adherence to RBI's timelines, technical standards, and security norms across thousands of branches remains a significant challenge.

7.7. Change Management

Cultural and procedural shifts within banking organizations are necessary to accept the continuous model fully.

8. Do's and Don'ts for Banks

Do's:

1. **Maintain Robust IT Infrastructure:** Ensure redundancy and backup systems for uninterrupted processing.
2. **Follow RBI's CTS Standards:** Adhere to image quality, data format, and encryption protocols.
3. **Strengthen Internal Controls:** Automate reconciliation and monitor exceptions in real time. Similarly, ensure that there are two signatures of branch officials on DD if the value is Rs. 5000.00 and above and all instruments are verified through UV lamp before presenting in the clearing.
4. **Train Staff Regularly:** Conduct periodic workshops for operations and IT teams.
5. **Coordinate with Vendors:** Establish real-time communication with third-party service providers.
6. **Monitor Timelines:** Track the turnaround time (TAT) for both presentation and returns.
7. **Enhance Customer Communication:** Provide instant SMS/email alerts for cheque status updates.
8. **Customer Awareness:** Banks must sensitise the customers about benefits, timelines, revised cheque return policies and to maintain sufficient balance, ensure cheque book activation and provide PPS for amt. Rs. 5 lacs & above (it may vary bank to bank) before the cheque is presented.

Don'ts:

1. **Avoid Manual Intervention:** Manual re-entries can cause data mismatches and regulatory breaches.
2. **Do Not Delay Outfile Submission:** Timely submission is essential to maintain clearing flow.
3. **Do Not Neglect Security Patches:** Out-dated systems increase cyber risk.
4. **Don't Wait Till Last Cycle:** Don't accumulate instruments for scanning & sending to NPCI at the eleventh hours as it creates undue pressure on payee bank to complete the final submission work within the stipulated time due to comparatively high number of instruments in the last cycle.
5. **Avoid Overloading Systems:** Batch uploads in a continuous environment may lead to wait your turn delays.
6. **Don't neglect SOP:** Don't neglect the rules/ guidelines issued by regulatory authorities and CO on clearing. Make sure that the instruments are in order and instruments are verified through UV lamp before approving. Ensure that the DD is under "issued" status in CBS even if it is handwritten, there are 2 signatures on DD above Rs 5000/- etc.
7. **Do Not Ignore Exception Reports/Nominal Reports:** Early detection of anomalies prevents systemic issues.
8. **Visibility of Instruments:** Do not affix the rubber stamp/seal on the random number or any other important field/place on the face of the instruments. Make sure that the instruments are not folded while scanning.
9. **Stakeholder Impact Analysis**

Stakeholder	Impact/Benefits
Customers	Faster credit, real-time information, improved convenience
Banks	Operational efficiency, reduced float, enhanced liquidity management
RBI	Strengthened systemic efficiency and digital ecosystem alignment

Clearing Houses (NPCI/CCIL)	Upgraded infrastructure and enhanced process automation
Vendors/ Fintechs	Increased demand for integrated clearing and monitoring solutions

10. **Comparative Analysis: Batch v/s Continuous Model**

Parameter	Batch Clearing (CTS)	Continuous Clearing
Processing Mode	Fixed sessions (2–3 daily)	Continuous, dynamic flow
Settlement Speed	T+0 or T+1	Near real-time
Return Handling	Separate return session	Integrated with presentation
Operational Load	High at session time	Evenly distributed
Liquidity Management	Limited visibility	Real-time fund movement
Customer Benefit	Delayed credit	Instant credit/ return updates

11. **Risk Mitigation Strategies**

To ensure smooth implementation, banks and regulators need to adopt:

1. **Automated Monitoring Tools –** AI-based dashboards for exception tracking.
2. **Cyber security Enhancement –** Continuous monitoring, multi-factor authentication, and encryption compliance.
3. **Business Continuity Planning (BCP) –** Failover mechanisms and disaster recovery sites.
4. **Audit Trails –** Maintain immutable logs for regulatory and forensic requirements.
5. **Interbank Coordination –** Unified communication protocols through NPCI and RBI.

12. **Way Forward**

Continuous Clearing is not merely an operational change-it's a strategic transformation in India's banking infrastructure. To ensure its success, the following steps are crucial:

1. **Phased Implementation:** First phase has already been implemented in October 2025 and second phase is proposed from January 2026. However, learning from the experience of first phase, adequate testing, stabilisation of system /technical infrastructure, assessment of readiness of banks etc. need to be done so as to avoid any adverse situation and customers' inconvenience.
2. **Regulatory Oversight:** RBI may establish performance benchmarks for turnaround times and error rates.
3. **Industry Collaboration:** Continuous engagement between banks, vendors, and clearing houses is essential.
4. **AI and Analytics Integration:** Predictive analytics can improve fraud detection and liquidity forecasting.
5. **Towards 24x7 Clearing:** In the long run, Continuous Clearing will likely evolve into real-time 24x7 clearing, integrating seamlessly with digital payment rails.

13. **Conclusion**

The introduction of Continuous Clearing marks a significant milestone in India's journey toward a digital-first, efficient, and transparent payment ecosystem. It bridges the remaining gap between paper-based instruments and real-time digital payments.

By eliminating session-based constraints and enabling continuous cheque processing, the RBI has aligned cheque-based transactions with modern expectations of speed and reliability. The move not only enhances customer satisfaction but also contributes to better liquidity management, operational efficiency, and systemic resilience in the financial sector.

As the second phase rolls out in January 2026, the collective readiness of banks, clearing houses, and technology partners will determine the success of this landmark reform. If implemented effectively, Continuous Clearing will stand as a model for other economies modernizing their paper-based payment systems.

References

1. Payment vision 2025, RBI.
2. Reserve Bank of India Circular on "Implementation of Continuous Clearing under CTS," September 2025.
3. National Payments Corporation of India (NPCI) Operational Guidelines, 2025.
4. RBI Annual Report 2024–25: Section on Payment and Settlement Systems.

Pradeep Patil
AGM, SSB
Chennai

भारत का लक्ष्य: 2047 तक कम-से-कम दो सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों को वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र में शीर्ष स्थान दिलाना

विकसित भारत

विकसित भारत-2047 का निर्माण केवल बुनियादी सुविधाओं या औद्योगिक विकास तक सीमित नहीं है; इसके लिए एक सशक्त, विश्वस्तरीय वित्तीय प्रणाली की आवश्यकता है. इसी रणनीति के तहत भारत ने यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है कि वह अगले कुछ दशकों में कम-से-कम दो सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंक (पीएसबी) को वैश्विक बैंकिंग प्रतिष्ठा के उच्चतम पायदानों पर पहुंचाएगा, ताकि देश की वित्तीय प्रणालियों में दखल, अंतर्राष्ट्रीय सौदों में हिस्सेदारी और आर्थिक सुरक्षा बढ़ सके.

वर्तमान पृष्ठभूमि और आवश्यकता:

स्वतंत्रता के बाद से सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंक भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं. परन्तु वैश्विक परिदृश्य में प्रतिस्पर्धा तीव्र है - वित्तीय आकार, पूँजीगत मजबूती, जोखिम प्रबंधन, डिजिटल क्षमताएँ और अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति किसी भी बैंक की प्रतिष्ठा निर्धारित करते हैं. 2047 तक दो पीएसबी को वैश्विक ऊँचाइयों पर ले जाने का लक्ष्य इसलिए रखा गया है ताकि भारत के पास ऐसे बैंक हों जो बड़े भौगोलिक विस्तार, ठोस पूँजी प्रोफ़ाइल और वैश्विक क्लाइंट बेस के साथ अंतर्राष्ट्रीय निवेश और ऋण को संभाल सकें. यह उद्देश्य केवल बैंकिंग की प्रतिष्ठा बढ़ाने तक सीमित नहीं है यह समग्र आर्थिक विकास, बुनियादी ढाँचे के वित्तपोषण और वैश्विक आर्थिक प्रणालियों में भारत की भागीदारी को भी सुदृढ़ करेगा.

बाजार पूंजीकरण के आधार पर विश्व के शीर्ष बैंक बनाम भारतीय बैंकों की स्थिति -

दुनिया के सबसे बड़े बैंक मूल रूप से बाजार पूंजीकरण के आधार पर:

क्रम सं.	बैंक का नाम	देश	बाजार पूंजीकरण (लगभग)	वैश्विक स्थिति / टिप्पणी
1	जेपी मॉर्गन	संयुक्त राज्य अमेरिका	$686 बिलियन	विश्व का सबसे अधिक बाजार पूंजीकरण वाला बैंक
2	इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ़ चाइना	चीन	$320 बिलियन	विश्व का सबसे बड़ा बैंक (कुल संपत्ति के आधार पर)
3	बैंक ऑफ़ अमेरिका	संयुक्त राज्य अमेरिका	$302 बिलियन	अमेरिका का अग्रणी वैश्विक बैंक
4	एग्रीकल्चरल बैंक ऑफ़ चाइना	चीन	$256 बिलियन	विश्व के शीर्ष चार बैंकों में शामिल
5	वेल्स फ़ार्गो बैंक	संयुक्त राज्य अमेरिका	$233 बिलियन	अमेरिका का प्रमुख वाणिज्यिक बैंक
6	चाइना कंस्ट्रक्शन बैंक	चीन	$216 बिलियन	अवसंरचना वित्तपोषण में वैश्विक अग्रणी
7	बैंक ऑफ़ चाइना	चीन	$207 बिलियन	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वित्त में मजबूत
8	एचएसबीसी बैंक	यूनाइटेड किंगडम	$197 बिलियन	सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति वाला बैंक
9	मॉर्गन स्टैनली	संयुक्त राज्य अमेरिका	$188 बिलियन	वैश्विक निवेश बैंकिंग में अग्रणी
10	एचडीएफ़सी बैंक	भारत	$158.5 बिलियन	वैश्विक रैंक लगभग 13

बाजार पूंजीकरण के आधार पर भारतीय बैंकों की स्थिति:

बैंक का नाम	देश	बाजार पूंजीकरण (लगभग)	वैश्विक स्थिति / टिप्पणी
एचडीएफ़सी बैंक	भारत	$158.5 बिलियन	वैश्विक रैंक लगभग 13
आईसीआईसीआई बैंक	भारत	$105.7 बिलियन	वैश्विक रैंक लगभग 19
भारतीय स्टेट बैंक	भारत	$82.9 बिलियन	वैश्विक रैंक लगभग 24

भारतीय स्टेट बैंक सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक है, लेकिन अभी वह $100+ बिलियन क्लब का हिस्सा केवल हाल ही में बना है - और बाजार पूंजीकरण के आधार पर वह स्पष्ट रूप से वैश्विक टॉप 20 में नहीं है.

कुल संपत्ति के आधार पर विश्व के शीर्ष बैंक

क्रम सं.	बैंक का नाम	देश	कुल संपत्ति (लगभग)	वैश्विक महत्व
1	इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ़ चाइना	चीन	$6.59 ट्रिलियन	विश्व का सबसे बड़ा बैंक
2	एग्रीकल्चरल बैंक ऑफ़ चाइना	चीन	$6.10 ट्रिलियन	ग्रामीण व औद्योगिक वित्त में अग्रणी
3	चाइना कंस्ट्रक्शन बैंक	चीन	$5.59 ट्रिलियन	अवसंरचना और शहरी विकास का प्रमुख वित्तपोषक

कुल संपत्ति के आधार पर भारत के शीर्ष बैंक

क्रम सं.	बैंक का नाम	देश	कुल संपत्ति (लगभग)	वैश्विक महत्व
1	भारतीय स्टेट बैंक	भारत	$808.2 बिलियन	कुल संपत्ति के आधार पर: 43वें स्थान पर वैश्विक बैंक (विश्व में टॉप 50 में)
2	एचडीएफ़सी बैंक	भारत	$483.7 बिलियन	कुल संपत्ति के आधार पर: 73वें स्थान पर
3	आईसीआईसीआई बैंक	भारत	$283.7 बिलियन	सर्वोच्च 100 बैंक में आते नहीं हैं

1 ट्रिलियन = 1000 बिलियन

भारतीय बैंक कुल संपत्ति के मामले में वैश्विक दिग्गज बैंक (जैसे इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ़ चाइना) से बहुत पीछे हैं. भारतीय स्टेट बैंक $808 बिलियन की संपत्ति रखता है, लेकिन इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ़ चाइना जैसे बैंक के सामने यह लगभग आधा ही है.

अब तक सिर्फ दो भारतीय बैंक विश्व के सर्वोच्च 100 बैंक (कुल संपत्ति के आधार पर) की सूची में आते हैं - भारतीय स्टेट बैंक और एचडीएफ़सी बैंक.

भारतीय बैंक अभी भी वैश्विक स्तर पर पूंजीगत क्षमता और वित्तीय विस्तार के मामले में कमज़ोर हैं. दुनिया के शीर्ष बैंक $300 बिलियन + के बाजार पूंजीकरण पर हैं, भारतीय बैंकों $180 बिलियन से नीचे हैं. भारतीय स्टेट बैंक - सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक, विश्व बैंक सूची में केवल 43वें (कुल संपत्ति के आधार) स्थान पर है . अभी टॉप 20 से बहुत पीछे. इसलिए सरकार का लक्ष्य - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का आकार बड़ा करना, उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है.

तालिका से स्पष्ट होता है कि जहाँ अमेरिका और चीन के बैंक बाजार पूंजीकरण एवं कुल संपत्ति दोनों ही दृष्टियों से विश्व में अग्रणी हैं, वहीं भारत का सबसे बड़ा बैंक अभी भी शीर्ष 10-15 वैश्विक बैंकों की श्रेणी से नीचे स्थित है. यही कारण है कि विकसित भारत-2047 के लक्ष्य के अंतर्गत भारत सरकार कम-से-कम दो सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों को वैश्विक बैंकिंग अभिजात वर्ग में सम्मिलित करने का प्रयास कर रही है.

लाभ: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर:

1) **बुनियादी ढाँचे के बड़े प्रोजेक्टों का सहज वित्तपोषण:** जब देश के बैंक वैश्विक मापदंडों पर बड़े होंगे तो वे पूँजी मार्केट से बेहतर दरों और परिस्थितियों में धन जुटा पाएँगे. इससे राजमार्ग, ऊर्जा, शहरी विकास और डिजिटल बुनियादी ढाँचे जैसे बड़े परियोजनाओं को सुलभ और किफायती वित्त मिल सकेगा.

2) **विदेशी मुद्रा और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समर्थन:** वैश्विक उपस्थिति वाले बैंक भारतीय निर्यातकों और प्रतिष्ठानों को विदेशों में बेहतर बैंकिंग सेवाएँ प्रदान कर सकेंगे-क्रेडिट, ट्रेड फाइनेंस और अंतर्राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स के लिए आवश्यक वित्तीय साधन. यह भारत के व्यापारिक प्रतिस्पर्धा को मज़बूत करेगा.

3) **आर्थिक स्थिरता और पूँजीगत मजबूती:** बड़े, विश्वसनीय बैंक वित्तीय संकट के समय निधियों और क्रेडिट प्रवाह को व्यवस्थित कर आर्थिक घबराहट को कम कर सकते हैं. इन बैंकों में अनुसरण योग्य प्रषर्धक शासन, जोखिम नियंत्रण और पूँजी बफर होने से समग्र वित्तीय प्रणाली अधिक टिकाऊ बनती है.

4) **रोजगार एवं कौशल विकास:** वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बैंकिंग सेवाएँ विकसित करने से बैंकों में तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल का विस्तार होगा. डिजिटल बैंकिंग, डेटा विश्लेषण और अंतर्राष्ट्रीय वित्त के क्षेत्र में विशेषज्ञता बढ़ेगी - जिससे उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार सृजित होंगे.

सरकार यह क्यों चाहती है - उद्देश्य और रणनीति सरकार का उद्देश्य केवल राष्ट्रीय गौरव बढ़ाना नहीं है; वह अर्थव्यवस्था को 2047 तक विकसित राष्ट्र के मानदंडों तक ले जाना चाहती है. इसके लिए बैंकिंग क्षेत्र की क्षमता और स्केल दोनों बढ़ाने होंगे. सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों के माध्यम से यह संभव है क्योंकि वे देश के समेकित आर्थिक लक्ष्यों से सीधे जुड़े रहते हैं - जैसे वित्त समावेशन, ग्रामीण विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस और रणनीतिक औद्योगिक समर्थन. इस नीति से यह भी अपेक्षा की जाती है कि बैंक सामाजिक उद्देश्यों और वाणिज्यिक लक्ष्यों दोनों को संतुलित कर सकेंगे.

रणनीतिक उपाय जो सरकार अपना सकती है:

- **बैंक संरचनाओं की पुनर्रचना और सम्मिलन:** कुछ बैंक मर्जर/एकीकरण के माध्यम से आकार में बड़े बन सकते हैं ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुकूल बुनियादी संरचना बन सके.
- **शासन और जोखिम प्रबंधन पर बल:** कम्पनी शासन, आंतरिक नियंत्रण, व कंप्लायंस को विश्वस्तरीय बनाने के लिए ठोस सुधार जरूरी हैं. इसके लिये स्वतंत्र निदेशक मंडल, बेहतर जोखिम मॉडल और पारदर्शिता को प्राथमिकता दी जाएगी.
- **पूँजी वृद्धि और निजी भागीदारी:** पूँजी समर्थ बनाने के लिये सरकार और निजी निवेश दोनों से सहयोग की आवश्यकता होगी. बैंकों को उनके बैंकिंग-परिसरों में पूँजी मजबूत करने के लिये उपाय सुझाए जा सकते हैं.
- **डिजिटलीकरण और वैश्विक नेटवर्क:** वैश्विक ग्राहकों को सेवा देने के लिये बैंकिंग प्रौद्योगिकी में भारी निवेश आवश्यक है - क्लाउड, एपीआई, साइबर सुरक्षा व डेटा विश्लेषण पर ध्यान देना होगा.
- **अंतर्राष्ट्रीय शाखाओं और साझेदारी:** विदेशी बाजारों में शाखाएँ खोलना और अंतर्राष्ट्रीय बैंकों के साथ गठजोड़ स्थापित करना बैंक की विश्व स्तर की पहुँच बढ़ाने में सहायक होगा.

चुनौतियाँ और संभावित जोखिम:

- **प्रतिस्पर्धा से निपटना:** निजी क्षेत्र के बैंक और अंतर्राष्ट्रीय बैंकों की तेज़ प्रतिस्पर्धा का सामना करना होगा.
- **बोझिल कार्यप्रणाली और व्यवस्था:** कुछ पीएसबी पर पुराने ऋण और परिचालन दक्षता की कमी रही है; इन्हें सुधारने के लिए समय और संसाधनों की आवश्यकता होगी.
- **पूँजी और नियामक बाधाएँ:** वैश्विक मापदंडों पर खड़ा होने के लिये पूँजी जुटाना और वैश्विक नियमों का पालन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है.
- **वैश्विक आर्थिक अस्थिरता:** अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में उतार-चढ़ाव का प्रभाव बड़े बैंकों पर तीव्र हो सकता है, इसलिए जोखिम विवेक और हेजिंग रणनीतियाँ आवश्यक होंगी.

कार्ययोजना - व्यावहारिक कदम (सुझावात्मक)

- **दीर्घकालिक दृष्टि और लक्ष्य निर्धारण:** प्रत्येक लक्षित पीएसबी के लिये 05.10.2025 वर्ष की योजनाएँ बनानी चाहिए - जिसमें बाजार हिस्सेदारी, अंतर्राष्ट्रीय शाखाओं की संख्या और पूँजी अनुपात निर्धारित हों.
- **प्रदर्शन आधारित प्रबंधन और पारदर्शिता:** सुव्यवस्थित प्रदर्शन संकेतक, स्वतंत्र ऑडिट व मापदंड के मध्यम से प्रबंधन को जवाबदेह बनाना.
- **प्रशिक्षण और टेक्नोलॉजी में निवेश:** डिजिटल भुगतान, एआई-आधारित क्रेडिट विश्लेषण, साइबर सुरक्षा व क्लाउड अवसंरचना में निरंतर निवेश.
- **गठजोड़ व सहयोग:** अंतर्राष्ट्रीय बैंकों, बहु-राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं तथा निवेशकों के साथ रणनीतिक साझेदारियाँ.
- **ग्राहक-केंद्रित उत्पादों का विकास:** वैश्विक ग्राहकों व भारतीय उद्यमों की आवश्यकताओं के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय मानकों के बैंकिंग उत्पाद विकसित करना.

सफलता के संकेतक

- सक्रिय संपत्ति में वृद्धि और वैश्विक रैंकिंग में सुधार.
- पूँजी-समर्थता के अनुपात का उचित स्तर व लोडिंग टेक्स्ट का नियंत्रण.
- अंतर्राष्ट्रीय कारोबार (विदेशी शाखाएँ, अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन) का प्रतिशत.
- जोखिम-प्रतिबंध व एनपीए का नियंत्रित स्तर. ये संकेतक समय-समय पर नीति-निर्माताओं और बैंक प्रबंधन को दिशा देंगे.

2047 तक कम-से-कम दो सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों को वैश्विक बैंकिंग की शीर्ष श्रेणी में ले जाने का लक्ष्य साहसिक और दूरदर्शी है. यह केवल बैंकों की प्रतिष्ठा बढ़ाने का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्र के आर्थिक स्वावलंबन, वैश्विक प्रभाव और दीर्घकालिक विकास रणनीति का भी एक अहम हिस्सा है. सही नीति, सुदृढ़ प्रशासन, तकनीकी नवाचार और समुचित पूँजीकरण के साथ यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है. यदि यह सफलता मिलती है तो न केवल बैंकिंग प्रणाली बल्कि सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक मंच पर नई पहचान मिलेगी - और 'विकसित भारत-2047' का सपना साकार होने की दिशा में एक मजबूत कदम साबित होगा.

निशान्त आनन्द
मुख्य प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

नियमित प्रयुक्त अंग्रेजी नोटिंग का हिंदी अनुवाद

Hindi Translation Of Regularly Used English Noting

क्रम संख्या	English Noting	हिंदी अनुवाद
1	Accepted provisionally	अस्थायी रूप से स्वीकृत
2	According to rule in vogue	वर्तमान / चालू / प्रचलित नियमानुसार
3	Accord sanction	स्वीकृति प्रदान करें / स्वीकृति दीजिए
4	Acting in good faith	सदभाव से कार्य करते हुए
5	Action may be taken	कार्रवाई की जाए
6	Action taken	कार्यवाही की गई
7	Advise further development	आगे की प्रगति सूचित करें
8	Advise us accordingly	तदनुसार हमें सूचित करें
9	Agreed	सहमत हूं.
10	All avenues are exhausted initiate legal action immediately	सभी प्रयास समाप्त, तुरंत विविध कार्रवाई करें.
11	All staff to note	सभी स्टाफ नोट करें.
12	Allowed	अनुमत
13	Annual grade increment sanctioned	वार्षिक क्रम की वेतनवृद्धि स्वीकृत.
14	Approval may be obtained	अनुमोदन प्राप्त किया जाए.
15	Approved	अनुमोदित
16	As early as possible	यथाशीघ्र
17	Ascertain the position	स्थिति का पता लगाएं.
18	Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें.
19	Bill may be paid	बिल का भुगतान करें.
20	By authority of	के अधिकार से
21	By return post	लौटती / वापसी डाक से.
22	Call for report	रिपोर्ट मंगवाएं.
23	Case is filed	मामला दायर कर दिया गया है.
24	Claim is time-barred	दावा कालातीत है.
25	Clarify the position	स्थिति स्पष्ट करें.
26	Confirm please	पुष्टि करें.
27	Contention is untenable	तर्क / विचार अस्वीकार है.
28	Copy for approval	अनुमोदन हेतु प्रति.
29	Correct Demarcation	उचित सीमांकन
30	Corrigendum may be put up	शुद्धि-पत्र प्रस्तुत करें.
31	Delay is regretted	विलम्ब के लिए खेद है.
32	Debarred from promotion	पदोन्नति से वंचित

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

श्री वास्ती वेंकटेश,
मुख्य महाप्रबंधक

हार्दिक शुभकामनाएं

श्री पी महादेवन,
महाप्रबंधक

श्री विकास पूर्वे,
उप महाप्रबंधक

श्री दुर्गेश सिंह,
उप महाप्रबंधक

श्री प्रणव कपूर,
उप महाप्रबंधक

सुश्री प्रियंका बंसल,
उप महाप्रबंधक

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री सुनील अरोड़ा,
मुख्य सतर्कता अधिकारी

हार्दिक शुभकामनाएं

श्री भारत भूषण मुटरेजा,
महाप्रबंधक

श्री प्रवीण किनी,
महाप्रबंधक

श्री पी सी खुराना,
उप महाप्रंबधक

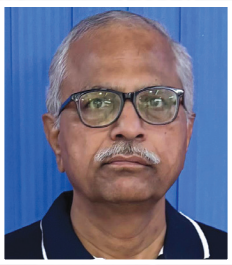

श्री राकेश शर्मा,
उप महाप्रंबधक

सुश्री आशा कोटस्थाने,
उप महाप्रंबधक

साक्षात्कार की तैयारी

साक्षात्कार अर्थात आमने - सामने की बातचीत अथवा प्रश्नोत्तर होना कार्यालयीन व्यवस्था के अन्तर्गत एक संस्थान में साक्षात्कार किसी व्यक्ति की नियुक्ति, चयन तथा पदोन्नति प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है. संस्थानों में साक्षात्कार प्रक्रिया में सामान्यत: दो-तीन या अधिक सदस्य साक्षात्कार लेने वाले होते हैं जो एक समूह के रूप में साक्षात्कार देने वाले सदस्य से प्रश्नोत्तर करते हैं. साक्षात्कार देने वाले एक सहभागी के लिये साक्षात्कार प्रक्रिया सामान्यत: दस-पन्द्रह मिनट या कम-अधिक समय की होती है. एक साक्षात्कार प्रक्रिया में पात्रता एवं रिक्तियों के आधार पर साक्षात्कार देने वाले व्यक्तियों की संख्या एक से अनेक तक हो सकती है. जो संबंधित संस्थान की व्यवस्था पर निर्भर होती है.

जब भी किसी व्यक्ति के समक्ष साक्षात्कार देने की बात आती है, तब साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति तनावग्रस्त हो जाता है. वास्तव में साक्षात्कार शब्द ही तनाव जनक है. जो व्यक्ति पहले ही दो, तीन या उससे अधिक बार साक्षात्कार दे चुका हो और उस प्रक्रिया में सफल भी हो चुका हो, उसे जब अगली बार साक्षात्कार देना होता है तब वह भी तनाव में आ जाता है.

सामान्य रूप से बैंकिंग उद्योग सहित कार्यालयीन तंत्र में और विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में साक्षात्कार प्रतिवर्ष होने वाली एक नियमित प्रक्रिया है, जिसमें कभी-कभी कोई कार्मिक पात्र होता है लेकिन हर बार नहीं. फिर भी, सच्चाई यही है कि साक्षात्कार की बात आते ही संबंधित कर्मचारी को तनाव हो जाता है.

इसके पीछे कुछ कारण होते हैं. पहला तो यह कि पूछे जाने वाले प्रश्नों की अनिश्चितता होती है. प्रश्न बिना विकल्प के होते हैं. उत्तर पर विचार करने के लिये समय नहीं मिलता है. उत्तर तत्काल देना होता है.

साक्षात्कार का कोई निश्चित एवं निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं होता है और न ही कोई विशिष्ट तरीका होता है. प्रश्न नियमित आधिकारिक कामकाज के संबंध में या लीक से हटकर किसी भी विषय के हो सकते हैं. एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि साक्षात्कार लेने वाले कौन होंगे सामान्यत: यह पहले से ज्ञात नहीं होता है.

एक महत्वपूर्ण पहलू साक्षात्कार कक्ष के अंदर और बाहर का वातावरण होता है. जो थोड़ा अलग तरह का होता है. सामान्य रूप से साक्षात्कारकर्ताओं में से सभी या कुछ सदस्य अपरिचित होते हैं. यदि कोई साक्षात्कारकर्ता परिचित मिल भी जाता है तो वह साक्षात्कार कक्ष में स्वयं को तटस्थ प्रदर्शित करता है. अनेक बार यह भी होता है कि अभ्यर्थी तो उन्हें जानता है किन्तु साक्षात्कारकर्ता उसे न जानते हों.

इस परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक उम्मीदवार को एक सामान्य बात ध्यान में रखनी चाहिए कि साक्षात्कार व्यक्ति के ज्ञान के परीक्षण के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व का परीक्षण होता है. यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति का पहनावा (ड्रेसिंग), उसके बात करने का तरीका, स्वयं को प्रस्तुत करने का ढंग, उसका आत्मविश्वास, उसकी सज्जनता आदि कई तथ्य महत्वपूर्ण होते हैं, जिनका उसे विशेष ध्यान रखना चाहिए. लेकिन इसका आशय यह बिल्कुल नहीं है कि साक्षात्कार के लिए ज्ञान की आवश्यकता नहीं है. उल्लेखनीय है कि इस उद्देश्य के लिए ज्ञान हमेशा अत्यंत आवश्यक और उपयोगी होता है.

इस अवसर के लिये एक समझदार व्यक्ति स्वयं को तनाव मुक्त रखता है और झंझट मुक्त साक्षात्कार के लिये योजनाबद्ध तरीके से तैयारी करता है. झंझट मुक्त साक्षात्कार के लिये योजनाबद्ध तरीके से तैयारी करने हेतु कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं :-

सर्वप्रथम एक साक्षात्कार प्रक्रिया को हम मुख्यत: निम्न चरणों में बाँट सकते हैं :-

1. साक्षात्कार हेतु पहनावा
2. साक्षात्कार कक्ष के बाहर
3. साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश
4. साक्षात्कार कक्ष में बैठने की प्रक्रिया
5. अनावश्यक बातें
6. साक्षात्कार की भाषा
7. साक्षात्कार में प्रश्नोत्तर
8. साक्षात्कार कक्ष से निर्गमन

9. साक्षात्कार में प्रश्नोत्तर के विषय
10. साक्षात्कार की तैयारी

(1) साक्षात्कार हेतु पहनावा

साक्षात्कार के लिये अभ्यर्थी को ढंग के शालीन कपड़े पहनने चाहिए. जो गरिमामय हों तथा जिससे अभ्यर्थी का व्यक्तित्व निखरता हो. इस अवसर पर भड़कीले या चटकीले रंगों के कपड़े पहनने से बचना चाहिए. कुछ भी फैशनेबल, मॉडर्न या अल्ट्रा-स्मार्ट पहनने से आम तौर पर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है.

जिस पद के लिए साक्षात्कार हो रहा है, तदनुसार कपड़े पहनने की भी सलाह दी जाती है. व्यक्ति को अपनी शर्ट के कॉलर बटन को छोड़कर, ऊपर के बटन भी बंद करके रखने चाहिए अर्थात शर्ट के ऊपरी बटन खुले रखने से बचना चाहिए. शर्ट की दोनों बाँहों के कफ बंद होने चाहिए. बाहों के कफ ऊपर की ओर मोड़कर रखना भी अवसर के अनुरूप नहीं है. अगर टाई पहननी हो तो उसकी नॉट सही ढंग बंधी होनी चाहिए. टाई की लंबाई कमर की बेल्ट से नीचे न हो तो श्रेयस्कर होता है. इसी प्रकार टाई की लंबाई कमर से बहुत ऊपर न हो तो श्रेयस्कर होता है.

महिला अभ्यर्थियों को कुछ भी फैशनेबल, मॉडर्न या अल्ट्रा-स्मार्ट कपड़े पहनने से बचना चाहिए. महिलाओं पर साड़ी या पंजाबी सूट जैसे पारम्परिक वस्त्र बहुत जँचते हैं. इस तरह की ड्रेस में महिलाओं का व्यक्तित्व निखरता है और वे शालीन प्रतीत होती हैं.

विशेष ध्यान देने की बात यह है कि साक्षात्कार अभ्यर्थी के व्यक्तित्व का परीक्षण होता है, इसे फैशन शो मानकर अलग तरह के कपड़े पहनकर जाना कार्यालयीन जीवन में समझदारी नहीं मानी जा सकती है.

(2) साक्षात्कार कक्ष के बाहर

सदस्य को निर्धारित समय पर साक्षात्कार स्थल पर उपस्थित होना चाहिए. साक्षात्कार से पूर्व व्यवस्थापकों द्वारा अभ्यर्थी को जहाँ भी बैठाया जाये वहाँ शांति पूर्वक बैठना चाहिए. संबंधित एवं आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करनी चाहिए.

वहाँ अत्यधिक उत्साह, चंचलता, चपलता दर्शाने तथा उपस्थित सदस्यों से वार्तालाप करने से एवं मोबाइल पर बात करते रहने से बचना श्रेयस्कर होता है. साक्षात्कार देकर वापस आने वाले अभ्यर्थियों के पास दौड़कर जाने से बचना चाहिए. साक्षात्कार में उनसे पूछे गये प्रश्नों को पूछना, पूछे गये कुछ अप्रत्याशित प्रश्नों को जानकर हड़बड़ाहट दर्शाने और चिन्तित होने से बचना भी श्रेयस्कर है. इससे तनाव बढ़ता है. ध्यान देने योग्य बात यह है कि आवश्यक नहीं है कि वही प्रश्न या उसी तरह के प्रश्न अगले अभ्यर्थियों से भी पूछे ही जायेंगे.

(3) साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश

साक्षात्कार की व्यवस्था करने वाले अधिकारी द्वारा सदस्य को अंदर जाने के लिए कहने पर साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश से पूर्व, सदस्य द्वारा प्रवेश द्वार को हल्के से खटखटाया जाना चाहिए फिर धीरे से दरवाज़ा थोड़ा सा खोलकर ''क्या मैं अंदर आ सकता हूँ सर / मैडम'' अथवा ''मे आई कम इन सर / मैडम'' कहकर साक्षात्कारकर्ताओं से अंदर आने के लिये अनुमति माँगनी चाहिए. उनकी अनुमति मिलने के पश्चात ही सदस्य को अंदर प्रवेश करना चाहिए. किसी कारणवश साक्षात्कारकर्ताओं द्वारा सदस्य के द्वारा अनुमति माँगने पर ध्यान न देने की स्थिति में सदस्य को यही प्रक्रिया पुन: दोहरानी चाहिए.

(4) साक्षात्कार कक्ष में बैठने की प्रक्रिया

अभ्यर्थी को साक्षात्कार कक्ष में अंदर पहुँचने के पश्चात साक्षात्कार लेने हेतु बैठे व्यक्तियों के समक्ष पहुँचकर उनका अभिवादन करना चाहिए. नमस्ते या प्रणाम अथवा समय अनुसार गुड मॉर्निंग, गुड आफ्टरनून या गुड ईवनिंग कहना चाहिए.

ध्यान रहे कि उनके कहने पर ही कुर्सी पर बैठना चाहिए. उनके कहे बिना कुर्सी पर बैठना अनुचित है. इसी स्थिति में प्रश्न पूछे जाने पर भी खड़े होकर उत्तर दिया जाना ठीक है.

(5) अनावश्यक

अभ्यर्थी को अपने विषय में अथवा अपने किये कार्य के संबंध में बढ़ा-चढ़ाकर बोलने से बचना चाहिए. अपनी प्रशंसा करने से बचना चाहिए. जैसे

''मैं सबसे योग्य हूँ''

''मैं सबसे अधिक परिश्रमी हूँ''

''मैं सबसे वरिष्ठ हूँ''

''मुझे मेरी मेहनत का फल मिलना ही चाहिए''

इस प्रकार के वाक्य कहने से बचना चाहिए.

ध्यान रखें आंतरिक पदोन्नति प्रक्रिया के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ताओं को अभ्यर्थियों की जानकारी उपलब्ध करवायी जाती है.

(6) साक्षात्कार की भाषा

बहुत से अभ्यर्थियों को यह संशय रहता है कि साक्षात्कार की भाषा क्या होगी. उल्लेखनीय है कि नियमानुसार अभ्यर्थी हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में उत्तर दे सकता है, चाहे उससे प्रश्न हिन्दी में पूछा जाये या अंग्रेजी में.

पुन: ध्यान रखें कि साक्षात्कार व्यक्तित्व एवं ज्ञान की परख के लिए होता है. अभ्यर्थी हिन्दी या अंग्रेजी जिस भाषा में स्वयं को सहज समझता है उस भाषा में या मिलीजुली भाषा में अथवा कुछ उत्तर हिन्दी में या कुछ अंग्रेजी में दे सकता है.

कई बार अभ्यर्थी की मातृभाषा, उसके क्षेत्र की भाषा अथवा जिस प्रदेश में कुछ वर्ष कार्य किया है वहाँ की भाषा बोलने की अपेक्षा भी की जाती है.

तदापि यदि साक्षात्कारकर्ताओं द्वारा किसी भाषा विशेष के उपयोग का आग्रह किया जाता है तब अभ्यर्थी को तदनुसार भाषा का प्रयोग करना बेहतर है. समस्या होने पर विनम्रता पूर्वक अनुरोध किया जा सकता है.

(7) साक्षात्कार में प्रश्नोत्तर

सदस्य को अपने मन में बसा लेना चाहिए कि साक्षात्कारकर्ता उससे पद में बड़े हैं, विद्वान हैं, वो जो पूछ रहे हैं, उसके विषय में जानते हैं. उन्हें कैसे भी, कुछ भी, उत्तर देने से बचना चाहिए. वे ज्ञान में कमतर नहीं हैं. उन्हें अज्ञानी समझने की भूल न करें.

साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर बिना झिझक और बिना संकोच, शालीनतापूर्वक, हल्की सी मुस्कान सहित देना चाहिए.

जो उत्तर नहीं आता उसमें तुक्के मारना (गैस करना) या गलत उत्तर देने स्थान पर स्पष्ट रूप से ''नहीं पता है सर / मैडम'' या सॉरी सर / मैडम कहना ठीक होता है. लगातार दो-तीन प्रश्नों के उत्तर न दे पाने की स्थिति में भी घबराना नहीं चाहिए. ''नहीं पता है सर'' भी बिना झिझक और बिना संकोच के सहजता से कहना चाहिए. जो नहीं पता है उसे स्पष्टत: कहना सकारात्मक होता है.

कोई अभ्यर्थी साक्षात्कारकर्ताओं के प्रश्नों की दिशा या उनका ध्यान उस ओर मोड़ सकता है जिस विषय में वह स्वयं दक्षता रखता है.

उदाहरण के लिए, साक्षात्कारकर्ता जमा के लक्ष्य के संबंध में पूछता है, जहाँ सदस्य का कार्य एवं परिणाम अच्छा नहीं है, तब

प्रश्नोत्तर कुछ ऐसा हो सकता है

सॉरी सर, हमारे कॉम्पिटिटर ने कुछ अच्छे कस्टमर को लुभा लिया, लेकिन मैंने व्यवस्थित तरीके से अच्छी क्रेडिट लिमिट वाली उनकी कई बड़ी पार्टियों को सफलतापूर्वक अपने साथ जोड़ लिया.

ये तो ठीक है लेकिन डिपॉज़िट टार्गेट का क्या?

सर, अगली बार निश्चित रूप से बेहतर करूँगा. साथ ही इस बार जैसे मैंने क्रेडिट में किया है, उससे और बेहतर करूँगा क्योंकि अब एमएसएमई (MSME) का बहुत अच्छा स्कोप है.

एमएसएमई (MSME) के लिए मैक्सिमम लिमिट क्या है?

या

इसके लिए कौन से डॉक्यूमेंट चाहिए?

अथवा

इसमें इंश्योरेंस कवरेज कितना होता है.

जैसे प्रश्न पूछे जाने प्रारंभ हो जाते हैं.

सामान्य रूप से ऐसा होने की अच्छी संभावना होती है.

(8) साक्षात्कार कक्ष से निर्गमन

साक्षात्कार समाप्त हो जाने पर सदस्य द्वारा साक्षात्कारकर्ताओं को विनम्रता पूर्वक धन्यवाद देकर सामान्य गति से द्वार की ओर आकर धीरे से दरवाजा खोलकर कक्ष से निर्गमन करना चाहिए.

(9) साक्षात्कार में प्रश्नोत्तर के विषय

साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों को मुख्य रूप से निम्न भागों में बाँटा जा सकता है :-

- स्वयं
- संस्था
- विभाग
- सकल विश्व

स्वयं

यदि आवेदन के साथ या साक्षात्कार से पूर्व सदस्य से कागज पर या डिजिटल रूप में कुछ लिखवाकर लिया गया है तो उसे याद रखना चाहिए.

अभ्यर्थी को अपने परिवार, समाज, नगर, राज्य, शिक्षा, इत्यादि की समुचित जानकारी होनी चाहिए. अपनी शैक्षणिक योग्यता, शिक्षा के विषयों, विद्यालय, विश्वविद्यालय की पूरी जानकारी अवश्य हो. सदस्य जिस नगर/राज्य या समाज से हैं उसके विषय में ज्ञान अवश्य हो.

साक्षात्कार देने वाले को अपने सुदृढ़/दुर्बल पक्ष, चुनौतियों तथा अवसरों (स्वॉट एनालिसिस SWOT Analysis) का ज्ञान अवश्य हो, पूछे जाने पर आत्मविश्वास से उत्तर दीजिये.

सदस्य के पास स्वयं को एवं अपनी संस्था को और बेहतर बनाने का स्पष्ट दृष्टिकोण होना चाहिए. इस संबंध में पूछे जाने पर आत्मविश्वास से उत्तर दें.

कई साक्षात्कारकर्ता अभ्यर्थी से उसके ही बारे में भी जानना चाहते हैं, इसलिए अपने विषय में बताने के लिए तथ्य तैयार रखें और पूछे जाने पर संक्षिप्त में उत्तर देना चाहिए. विशेष रूप से सदस्य को अपने नाम का अर्थ अवश्य पता होना चाहिए.

संस्था

अपनी संस्था की स्थापना, प्रगति यात्रा, प्राप्त उपलब्धियां, नेटवर्क, प्रमुख योजनाओं, प्रमुख ब्याज दरों, शीर्ष प्रबंधन, विगत वर्ष एवं तिमाही के परिणाम, शेयर का मूल्य, घोषित लाभांश की पूरी जानकारी होनी आवश्यक है.

विभाग

वर्तमान में या निकट अतीत में जिस विभाग में कार्य किया है, उसके कार्य या कार्यों का विस्तृत ज्ञान अवश्य हो. अपेक्षित होने पर संबंधित

परिपत्र, सरकारी दिशा निर्देश, नियम, इत्यादि को विस्तार से बताया जाये.

सकल विश्व

साक्षात्कारकर्ता कभी-कभी कुछ भी पूछ लेते हैं. इतिहास, भूगोल, खेल, सिनेमा, राजनीति, अर्थव्यवस्था, सरकार की नीतियां, समसामयिक अर्थात सकल विश्व की बात हो सकती है. इसके लिये सदस्य को सामान्य ज्ञान का अध्ययन अपेक्षित है.

(10) साक्षात्कार की तैयारी

लिखित परीक्षा सम्पन्न होते ही साक्षात्कार की तैयारी प्रारंभ कर देनी चाहिए. हर दिन कुछ समय अध्ययन अवश्य करें. अपेक्षित अध्ययन सामग्री एकत्र करें. प्रमाणित आँकड़े एकत्र करें. संस्था का इतिहास, विकास, उपलब्धियां इत्यादि की पूरी सूचनाओं का संकलन करें. वरिष्ठ, कनिष्ठ, समकक्ष सभी से चर्चा करें. जिन प्रश्नों का उत्तर नहीं आता है या समझ में नहीं आता है, उसे अवश्य पूछें. बार-बार पढ़े.

पहले दिये साक्षात्कारों का स्मरण करें. उस दौरान यदि कोई चूक हो गयी थी, उसे दूर करने का अभ्यास करें. यह ध्यान रखिये कि कोई भी व्यक्ति दुनिया की हर बात नहीं जानता है और जान भी नहीं सकता है. तदापि स्वयं अपने विषय में, अपनी संस्था, अपने विभाग की जानकारी होनी अपेक्षित होती है. शेष विश्व की जानकारी अर्थात समुचित सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए.

यह याद रखिये कि भाग्य भी परिश्रमी का साथ देता है. और कहा भी है कोशिश करने वालों की हार नहीं होती.

सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ

राजीव वार्ष्णेय
सेवानिवृत्त, सहायक महाप्रबंधक

हंसी के पल

टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए?
गोलू- बर्ड फ्लू हो गया था मैम।
टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं।
गोलू- इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो..!!

दो लड़कियां बस में सीट के लिए लड़ रही थीं
कंडक्टर- अरे क्यों लड़ रही हो,
जो उम्र में सबसे बड़ी है वो बैठ जाए
फिर क्या, पूरे रास्ते दोनों खड़ी ही रहीं..!!

महिला- डॉक्टर साहब, मेरे पति नींद में
बातें करने लगे हैं! क्या करूँ?
डॉक्टर- उन्हें दिन में बोलने का
मौका दीजिए!

बेटा बाप से- पापा से साढ़ू का रिश्ता क्या होता है
बाप- बेटा जब दो आदमी एक ही कंपनी से ठगे जाते हैं तो साढ़ू कहलाते हैं...
तभी वहां मम्मी आ गई
बस फिर क्या है तब से मम्मी गुस्से से 'लाल' हैं....और पापा डर के मारे 'पीले'

Empowering Our Workforce: An Overview of the Staff Welfare Schemes for FY 2025-26

At Central Bank of India, our greatest asset is our people. Bank has a comprehensive suite of Staff Welfare Schemes (SWS) designed to support our employees and retirees at every stage of their professional and personal journeys. From health and wellness to family support and skill development, these initiatives reflect our commitment to fostering a supportive and thriving work environment.

Below is a summary of the key welfare schemes available to our staff this year:

Health and Wellness Initiatives

The Bank continues to prioritize the physical and mental well-being of its staff through robust medical support and diagnostic facilities.

* **Employee Health Check-up Facility:** To promote proactive health management, all employees and their spouses are eligible for annual health check-up reimbursements. Maximum fees are capped based on age brackets:

* Up to 30 years: Rs. 1,500
* 30 to 40 years: Rs. 2,000
* 40 to 50 years: Rs. 2,500
* Above 50 years: Rs. 3,500

* **24x7 Tele/Online Medical Consultancy:** Through our partnership with Practo, employees, retirees, and their dependents have round-the-clock access to free doctor consultations, online medicine delivery with discounts, and OPD appointment bookings.

* **On-site Medical Support:** Doctor facilities remain available on an annual contract basis at the Central Office and major Zonal Offices (MMZO, Kolkata, Bhopal, and Lucknow), with general medicines provided free of cost.

Specialized Health Reimbursements:

* **Root Canal Treatment:** Reimbursement up to Rs. 6,000 for dental expenses not covered by standard insurance.

* **HPV Vaccination:** A new initiative covering the cost of HPV vaccines and screening (up to Rs. 3,000) for women employees, spouses of male employees, and dependent girl children.

* **Child Immunization:** Reimbursement for child immunization vaccines for children under 5 (up to Rs. 5,000 depending on staff cadre).

Family and Work-Life Balance

We understand that a balanced life leads to a more engaged workforce. Our schemes are designed to assist with family responsibilities and relaxation.

* **Holiday & Transit Homes:** To boost morale and reduce burnout, the Bank provides affordable vacation options across various locations, including upcoming spots like Goa, Munnar, and Coorg.

* **Childcare Allowance:** Female employees and single male parents can claim Rs. 500 per month per child (for up to two children aged 3 or below) in lieu of crèche facilities.

* **Support for Children with Disabilities:** Financial assistance of Rs. 5,000 per year is provided to employees with children who have special needs, helping to provide supportive arrangements.

* **Extra-curricular Activities:** To encourage self-development, the Bank offers reimbursement of up to Rs. 3,000 for course fees or extra-curricular activities for employees, their spouses, or their children.

Financial Relief and Retiree Benefits

Our commitment to our staff extends beyond their active years of service.

* **Canteen Subsidy:** A one-time annual reimbursement of Rs. 2,100 will be paid (preferably in October/November) to meet meal and refreshment costs.

* **"Die in Harness" Relief:** In the unfortunate event of an employee's passing while in service, a relief amount of Rs. 40,000 (including funeral expenses and ex-gratia) is provided immediately to the legal heirs.

*Retiree Support:

* **IBA GHIS Subsidy:** The Bank provides a 10% subsidy (up to Rs. 5,000) on the base premium for retirees opting for the IBA-approved Group Health Insurance Scheme.

* **Medical Assistive Devices:** A new scheme for retirees offers reimbursement up to Rs. 2,000 for the purchase of essential devices such as Glucometers, BP monitors, spectacles, or fitness trackers.

How to Apply

Most of these schemes are implemented through the HRMS portal, ensuring a seamless and transparent claim process. I, through this article encourage all eligible staff members to review the detailed guidelines and make the most of these benefits.

Together, we continue to build a stronger, healthier, and more supportive Central Bank of India family.

Kartik Mittal
Management HCM Specialist
Karnal RO

एक शताब्दी से अधिक की सेवा, विश्वास और राष्ट्र निर्माण

भारतीय बैंकिंग प्रणाली के विकास में जिन संस्थानों ने ऐतिहासिक और निर्णायक भूमिका निभाई है, उनमें सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का स्थान विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण है. वर्ष 1911 में स्थापित यह बैंक भारत का प्रथम स्वदेशी वाणिज्यिक बैंक है, जिसे पूर्णत: भारतीयों द्वारा स्थापित, स्वामित्व एवं प्रबंधन में संचालित किया गया. बैंक की स्थापना केवल एक वित्तीय संस्था के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय आर्थिक स्वाधीनता और आत्मनिर्भरता के सशक्त माध्यम के रूप में हुई.

अपने स्थापना काल से लेकर वर्तमान तक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने राष्ट्र निर्माण, वित्तीय समावेशन, सामाजिक दायित्व और ग्राहक-केन्द्रित बैंकिंग के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में निरंतर योगदान दिया है.यह अवसर केवल एक ऐतिहासिक उपलब्धि का उत्सव नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्थान की गौरवशाली विरासत, सेवा की परंपरा और राष्ट्र निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है. वर्ष 1911 में एक स्वदेशी विचार के रूप में स्थापित सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने समय के प्रत्येक चरण में देश की आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढाला है.

स्वदेशी आंदोलन के दौरान सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद को सुदृढ़ किया. बैंक ने भारतीय व्यापारियों, कारीगरों, किसानों और उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर विदेशी पूंजी पर निर्भरता कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. स्वदेशी आंदोलन की भावना से जन्मा यह बैंक स्वतंत्रता संग्राम के दौर में आर्थिक आत्मनिर्भरता का सशक्त माध्यम बना. स्वतंत्रता के बाद और विशेषकर 1969 के राष्ट्रीयकरण के पश्चात, बैंक ने सामाजिक-आर्थिक विकास को अपनी प्राथमिकता बनाया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना 21 दिसंबर 1911 को मुंबई में सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा की गई. उस समय भारत की बैंकिंग प्रणाली पर विदेशी बैंकों का वर्चस्व था. ऐसे में एक स्वदेशी बैंक की स्थापना भारतीय व्यापार, उद्योग और आम नागरिकों के लिए वित्तीय आत्मनिर्भरता की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हुई. भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एक ऐसा नाम है, जो विश्वास, स्थायित्व और सेवा भावना का पर्याय बन चुका है. बैंक ने 115 वर्षों की अपनी यात्रा में न केवल वित्तीय सेवाएँ प्रदान की हैं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाई है.

बैंक का उद्घाटन सर फिरोजशाह मेहता द्वारा किया गया. वह बैंक के पहले चेयरमैन भी थे. बैंक की स्थापना का उद्देश्य केवल लाभ अर्जन नहीं, बल्कि भारतीय उद्यमिता, कृषि, लघु उद्योगों तथा आम जनता को सुलभ बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान करना था.

स्वतंत्रता आंदोलन के समय अनेक नेताओं एवं राष्ट्रनिर्माताओं का इस बैंक से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ाव रहा. बैंक की कार्यप्रणाली राष्ट्रहित, सेवा और विश्वास पर आधारित रही है.

राष्ट्रीयकरण के पश्चात योगदान

वर्ष 1969 में प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण के साथ सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया सार्वजनिक क्षेत्र का एक बैंक बना. राष्ट्रीयकरण के पश्चात बैंक की भूमिका और अधिक व्यापक एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी हुई.

बैंक ने ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में शाखा विस्तार, प्राथमिकता क्षेत्र ऋण, कृषि एवं लघु उद्योग वित्तपोषण को विशेष प्राथमिकता दी. इससे बैंकिंग सेवाओं की पहुँच समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुनिश्चित हुई.

वर्तमान में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का नेटवर्क संपूर्ण देश में फैला हुआ है. बैंक की प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- देशभर में 4500 से अधिक शाखाओं का सुदृढ़ नेटवर्क
- ग्रामीण, अर्ध-शहरी, शहरी एवं महानगरीय क्षेत्रों में प्रभावी उपस्थिति
- एटीएम, डिजिटल चैनल, बीसी मैक्स एवं वैकल्पिक वितरण माध्यम

संगठनात्मक संरचना बैंकिंग नियामक दिशानिर्देशों एवं सुशासन के सिद्धांतों पर आधारित है. हमारे प्रमुख बैंकिंग उत्पाद एवं सेवाएँ निम्नानुसार हैं;

जमा उत्पाद

- बचत बैंक खाता
- चालू खाता
- सावधि जमा
- आवर्ती जमा

ऋण एवं अग्रिम

- कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों हेतु ऋण
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम ऋण
- शिक्षा ऋण
- आवास ऋण
- खुदरा एवं व्यक्तिगत ऋण

डिजिटल एवं वैकल्पिक बैंकिंग

- इंटरनेट एवं मोबाइल बैंकिंग
- यूपीआई एवं डिजिटल भुगतान सेवाएँ

- कार्ड सेवाएँ
- एनईएफटी, आरटीजीएस, आईएमपीएस

वित्तीय समावेशन एवं सरकारी योजनाएँ

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, भारत सरकार की वित्तीय समावेशन पहलों के सफल क्रियान्वयन में अग्रणी रहा है. बैंक ने निम्न योजनाओं के माध्यम से करोड़ों नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा है:

- प्रधानमंत्री जन-धन योजना
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना
- प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
- अटल पेंशन योजना तथा
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना

इन पहलों ने सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय साक्षरता और समावेशी विकास को बढ़ावा दिया है.

कृषि, ग्रामीण एवं सामाजिक विकास

कृषि,भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है. बैंक ने किसानों एवं ग्रामीण समुदाय के उत्थान हेतु:

- किसान क्रेडिट कार्ड
- फसल ऋण एवं कृषि अवसंरचना ऋण
- स्वयं सहायता समूह एवं संयुक्त देयता समूह वित्तपोषण

जैसी योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू किया है. इससे ग्रामीण रोजगार, आय सृजन और आर्थिक स्थिरता को प्रोत्साहन मिला है.

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

बैंक अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण एवं कौशल विकास के क्षेत्रों में निरंतर योगदान देता रहा है. बैंक की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियाँ सामाजिक संवेदनशीलता और सतत विकास के सिद्धांतों पर आधारित हैं.

डिजिटल परिवर्तन एवं तकनीकी प्रगति

डिजिटल बैंकिंग के युग में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने तकनीकी उन्नयन को रणनीतिक प्राथमिकता दी है. बैंक ने कोर बैंकिंग प्रणाली, साइबर सुरक्षा, डिजिटल भुगतान एवं ग्राहक सेवा प्लेटफॉर्म को सुदृढ़ किया है. डिजिटल इंडिया अभियान में बैंक की भूमिका उल्लेखनीय रही है.

ग्राहक सेवा एवं सुशासन

ग्राहक संतुष्टि सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की कार्यसंस्कृति का एक अभिन्न अंग है. बैंक द्वारा प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र, ग्राहक संपर्क केंद्र, वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम और पारदर्शी प्रक्रियाएँ अपनाई जाती हैं.

हमारा बैंक अपनी गौरवशाली यात्रा के दौरान भारतीय बैंकिंग प्रणाली का एक सशक्त स्तंभ रहा है. सेवा, विश्वास, पारदर्शिता और राष्ट्रहित के मूल मूल्यों के साथ बैंक निरंतर बदलते बैंकिंग परिवेश में अपनी भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है.भविष्य की ओर अग्रसर होते हुए बैंक एक सशक्त, समावेशी और डिजिटल-सक्षम बैंक के रूप में राष्ट्र निर्माण में अपनी प्रतिबद्धता को निरंतर आगे बढ़ा रहा है.

राष्ट्रीयकरण के बाद बैंक ने:

- ग्रामीण व अर्ध-शहरी क्षेत्रों में शाखाओं का विस्तार
- कृषि, एमएसएमई और प्राथमिकता क्षेत्र ऋण तथा
- कमजोर वर्गों के लिए बैंकिंग पहुँच

जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया.

डिजिटल और आधुनिक बैंकिंग

समय के साथ कदम मिलाते हुए बैंक ने डिजिटल बैंकिंग, कोर बैंकिंग सॉल्यूशन, यूपीआई, मोबाइल एवं इंटरनेट बैंकिंग सेवाओं को सुदृढ़ किया है. डिजिटल इंडिया अभियान में बैंक की भूमिका सराहनीय रही है.

वित्तीय समावेशन और सामाजिक दायित्व

बैंक ने जन-धन योजना, मुद्रा योजना, बीमा एवं पेंशन योजनाओं के माध्यम से करोड़ों नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा. सीएसआर के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और महिला सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया.

भविष्य की ओर दृष्टि

आज सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर है, जो:

- तकनीक सक्षम
- ग्राहक केन्द्रित
- जोखिम सजग और
- समावेशी

है. बैंक की 115वीं वर्षगांठ इसी प्रतिबद्धता का प्रतीक है.

1. ''1911 में स्थापित सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का ऐतिहासिक मुख्यालय - स्वदेशी बैंकिंग की पहचान''
2. ''ग्रामीण भारत में वित्तीय समावेशन की दिशा में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की सक्रिय भूमिका''
3. ''115वीं स्थापना वर्षगांठ - विरासत का उत्सव, भविष्य का संकल्प''

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की 115 वर्षों की यह यात्रा संस्थागत शक्ति, कर्मचारियों की निष्ठा और ग्राहकों के विश्वास का परिणाम है. यह न केवल अतीत का स्मरण है, बल्कि भविष्य की दिशा का स्पष्ट संकेत भी है.

लता नाडर
सहायक प्रबंधक,
केन्द्रीय कार्यालय

मेरी आत्मकथा - प्रिंटर

मैं एक प्रिंटर हूँ। मेरा निर्माण भी अन्य मशीनों की तरह ही एक विशाल कारखाने और कुशल इंजीनियरों की देख-रेख में हुआ। उसके बाद एक अत्याधुनिक जांच प्रयोगशाला में मेरा परीक्षण हुआ और मैंने उस परीक्षण को पूर्ण रूप से पास किया, जिसके उपरांत मुझे कोमल थर्माकोल में पैक करने के बाद, एक गत्ते में लपेट कर सावधानी के साथ पैक किया गया और मुझ पर तरह-तरह के स्टिकर और लेबल लगा कर शोरूम में विक्रय हेतु सजा के रख दिया गया। मेरे साथ कुछ और भी मेरी ही तरह लेकिन अलग अलग प्रतिभा के, कुछ मुझसे बड़े, कुछ मुझसे छोटे, कुछ मुझसे पतले तो कुछ मुझसे मोटे प्रिंटर थें. हम सब प्रिंटरों को सजा के रखा गया और रोज हम अपने विक्रय का इंतज़ार करते कि किसकी किस्मत में कहाँ जाना लिखा होगा।

किसी भी ग्राहक के अंदर आते ही हमारा उत्साह बढ़ जाता और हम खुशी मन से लालायित रहते कि अब हमारी गाथा शुरू होगी और हम शीघ्र ही किसी कम्प्यूटर के साथ जुड़ कर एक महान कार्य में लग जाएंगे। किसी की रात-दिन की मेहनत को हम कुशलता से पन्नों पर प्रिंट करके उसकी शोभा बढ़ाएँगे या किसी की चित्रकारी या लेखन को मूर्त रूप देंगे। सभी प्रिंटरों के निर्माण की विधि अलग जरूर थी, सबकी खूबियाँ अलग थीं, लेकिन सबका दिल एक ही था और सबका उद्देश्य एक ही था - प्रिंट करना। चाहे वो कोई चित्र हो, कोई आंकड़ा हो, कोई लेखन हो, पत्र हो या कुछ भी हो।

ऐसा सोचते-सोचते और आपस में बाते करते-करते आखिर वो दिन आ ही गया जब एक ग्राहक ने मेरी ओर इशारा करते हुए मेरी क्षमता जानने की इच्छा जतायी और उन्होंने मुझे खरीदने का निर्णय लिया। मेरी खुशियों को चार चाँद तब लगे जब मैंने उनके गले में लटके हुए आईडी कार्ड को देखा जिसमें उनका नाम तो साफ-साफ नहीं दिख रहा था लेकिन जब मैंने देखा कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का लोगो बना है तो मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में मुझे अपनी सेवा देने का अवसर मिलेगा, फिर जैसे-तैसे मैंने अपनी खुशी को सम्हाला और मुझे बिल इत्यादि होने के बाद पैक करके एक गाड़ी में रख दिया गया। वह यात्रा बहुत ही सुहावनी लगी, जितनी पहली बार कारखाने से आने पर भी नहीं लगी, एक नयी नवेली दुल्हन की भांति मन में असंख्य अरमान लिए मैं गुनगुनाता चला जा रहा था।

शाखा पहुंचने के बाद मेरे ऊपरी आवरण को खोल कर मुझे निकाला गया, मेरे गत्ते और थर्माकोल को इस तरह से फेक दिया गया जैसे किसी को अपशब्द कहके निर्लज्जता से बाहर निकाल दिया गया हो, मुझे थोड़ा अजीब लगा लेकिन साथ ही मैं खुश था कि अब इन बाहरी आडंबरों की आवश्यकता नहीं है, तो उसके लिए विलाप क्या करना।

इसके बाद एक कुशल इंजीनियर की देख-रेख में मुझे शाखा प्रमुख के कम्प्यूटर से जोड़ा गया, मेरे चलने के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयर इत्यादि अद्यतन करने के बाद मुझे वो करने का अवसर मिला जिसके लिए मैं बना था. कम्प्यूटर से मिले उस पहले प्रिंट आदेश को मैंने एक कुशल सेनापति की तरह से निर्वाह किया और एक सुंदर और कुशल प्रिंट आउट प्रदान किया जिसे देख कर शाखा प्रमुख और अन्य लोगों ने घोषित कर दिया कि मैं एकदम फिट और कार्यनिपुण हूँ। इसके पश्चात मुझे कार्यालय प्रमुख के बराबर का स्थान मिला। यह देखकर मैं और भी प्रफुल्लित हो उठा और अपने मन में पुरानी यादों को समेटने लगा जिसमें एक मेरे परम मित्र प्रिंटर जो मेरे बड़े भाई के समान था और मुझसे 1 वर्ष बड़ा था लेकिन कुछ तकनीकी खराबी की वजह से जहां मेरा परीक्षण हो रहा था वहीं उसको भी पुनः जांचा जा रहा था।

परीक्षण के दौरान मेरे उस प्रिंटर भाई ने मुझे अपने अनुभव साझा किए कि कैसे वो एक व्यक्ति के घर क्रय करने के उपरांत इन्स्टाल

किया गया था और उसे कितने शान शौकत से रखा जाता था, काम हो जाने के बाद उसके ऊपर एक मखमली सा कपड़ा फैला दिया जाता था जिससे हमारा सबसे बड़ा दुश्मन धूल इत्यादि न पड़े और कैसे प्रिंट करने से पहले घर के बच्चे बड़े उत्साह के साथ उसकी एक-एक क्रिया को देखते थे, प्यार से चित्र बनाते थे और फिर उसे उतने ही प्रेम से प्रिंट करके दीवार पर सजाते थे और उस उत्तम प्रिंट की बार-बार वाहवाही करते थे। ये सब सोच कर ही मेरे अंदर असीम आनंद की प्राप्ति हो रही थी और साथ ही इस बात का डर भी था कि कहीं मैं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर पाऊँगा कि नहीं।

शाम को शाखा बंद करते वक़्त धीरे-धीरे सभी कम्प्यूटर इत्यादि बंद किए गए, मैं मन ही मन सोच के खुश हो रहा था कि अभी एक मखमली कपड़ा मुझे भी मिलेगा। लेकिन ये क्या? सभी लोग एक-एक करके चले गए और किसी ने मेरी तरफ प्यार से देखा तक नहीं। मैं अवाक् सा रह गया, सोचा कि काम के दबाव में भूल गए होंगे। कोई बात नहीं। जैसे-तैसे मैंने रात काटी। पुन: सुबह होने पर जैसे ही शाखा खुली, मुझमें फिर से एक नयी उमंग का संचार हुआ और मैंने आज अपने कर्तव्य निर्वाह के लिए कमर कस ली। शाखा खुलने के साथ ही शाखा के ग्राहकों की एक लंबी कतार लग गयी और सभी कर्मचारी अपने अपने मोर्चे सम्हाल के बैठ गए। शाखा प्रबंधक ने भी अपनी कुर्सी ली और कम्प्यूटर चालू किया और साथ ही मैंने भी मोर्चा सम्हाल लिया, मेरे पेपर ट्रे पर ढेर सारे पेपर रख दिये गए और शुरू हो गया प्रिंट का सिलसिला, कभी खाता खोलने का फार्म तो कभी ग्राहक की ईमेल, कभी केन्द्रीय कार्यालय का कोई पत्र तो कभी क्षेत्रीय कार्यालय का परिपत्र, कभी लोन का पेपर तो कभी कुछ, कभी कुछ। मेरे पीछे प्रिंट की कतार लग गयी। आज इतना काम करने के उपरांत मैं अपने आप को एक विजेता की भांति महसूस कर रहा था और जैसे विजेता को किसी विजय के उपरांत पुरस्कार

प्रदान किया जाता है उसी प्रकार मैं भी एक पुरस्कार की आस में टकटकी लगाए बैठा था।

लेकिन न तो कोई पुरस्कार आया और न ही किसी ने मेरे भारी भरकम काम की तारीफ की। मेरा तो जैसे सपना ही टूट गया। ऐसा दिन प्रतिदिन चलता रहा और रोज मेरे ऊपर काम का दबाव बढ़ता ही रहा और मैं निर्बाध रूप से अपने कार्य का निष्पादन करता रहा। लेकिन अब मैं बदल चुका था, अपने सपनों की दुनिया से बाहर निकाल चुका था, वास्तविकता में जीने लगा था। मैं ये समझ चुका था कि जीवन उतना आसान नहीं है जितना सोचने पर लगता है, परिस्थितियाँ समय-समय पर बदलती रहती हैं और कार्य और उसका दबाव भी।

मेरे पास दो रास्ते थे या तो मैं अपने कार्यनिष्पादन को गलत तरीके से और गलत प्रिंट देकर अपने आप को अनुपयुक्त सिद्ध कर सकता था और ''बने रहो पगला काम करेगा अगला'' कहावत को सिद्ध कर सकता था, जो मेरे लिए एक आसान और आरामदायक निर्णय हो सकता था, और दूसरा रास्ता था कि मैं पूर्ण लगन मेहनत और स्वयं के साथ ईमानदारी के साथ अपने कार्य का उचित निष्पादन कर सकता था। प्रथम विकल्प में मुझे आराम और काम का कम दबाव रहता और मेरी जिंदगी मजे के साथ कट सकती थी और मेरे लिए आवश्यक बिजली टोनर इत्यादि मुझे समय-समय पर मिलता रहता और कम काम कर के भी मैं अधिक लाभ ले सकता था, परंतु मैंने दूसरा रास्ता चुना जहां मुझे कम आराम और अधिक काम मिला और उतनी ही बिजली, टोनर इत्यादि मिला, लेकिन एक चीज़ अत्यधिक मिली और वह है आत्मसम्मान, स्वाभिमान।

कई विषमताएँ झेलने के बाद भी मैं गर्व से स्वयं से यह कह पाने में जरा सा भी असहज नहीं था कि ''हाँ मैंने मेहनत की है'' और गीता की वह बात याद आ गयी जो प्रिंट करते समय मैंने देखी थी ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' अर्थात कर्म करो, फल की चिंता न करो। यदि कर्म आपने ईमानदारी और लगन के साथ किया है तो उसका फल भी अवश्य मिलेगा। लेकिन ध्यान फल पर न हो कर कर्म पर होना चाहिए।

निधि चौकसे
वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

मिथिलांचल के दर्शनीय स्थल

भारत की सभ्यता में मिथिला का नाम सदैव गौरव के साथ लिया जाता है. यह भूमि ज्ञान, भक्ति, कला और संस्कृति की पवित्र धरती है. मिथिलांचल केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि वह जीवनदर्शन है जहाँ सीता-जनक की परंपरा, विद्यापति की वाणी और उगना महादेव की भक्ति आज भी जीवित है. यहाँ के दर्शनीय स्थल केवल ऐतिहासिक महत्व नहीं रखते, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा का साक्षात्कार कराते हैं. मिथिला अपनी पौराणिकता, संस्कृति, पर्यावरणीय संतुलन और धार्मिक आस्थाओं के लिए प्रसिद्ध है. यहाँ की मिट्टी में परंपरा की सुगंध है, नदियों में पवित्रता का प्रवाह है और लोकगीतों में भक्ति की मधुरता है. यही कारण है कि यह क्षेत्र न केवल देशवासियों बल्कि विदेशियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है.

प्राचीन मिथिला का विस्तार उत्तर में नेपाल से लेकर दक्षिण में गंगा के तट तक, पूर्व में बंगाल की सीमा से लेकर पश्चिम में वैशाली तक फैला हुआ था. वर्तमान बिहार के दरभंगा प्रमंडल, जिसमें दरभंगा, मधुबनी और समस्तीपुर जिले सम्मिलित हैं, को मिथिला संस्कृति का केंद्र माना जाता है. यहाँ के मंदिर, तीर्थ और ऐतिहासिक स्थलों में धार्मिक आस्था, लोक परंपरा और स्थापत्य कला का अनोखा संगम दिखाई देता है.

दरभंगा प्रमंडल के प्रमुख दर्शनीय स्थल

❖ श्री कपिलेश्वर स्थान (मधुबनी)

मधुबनी रेलवे स्टेशन से चार किलोमीटर पश्चिम स्थित यह स्थान त्रेता युग से ही प्रसिद्ध है. कथा है कि यहाँ कपिल मुनि का आश्रम था, जिन्होंने सर्वप्रथम भगवान महादेव की आराधना की. उसी समय से यह स्थान कपिलेश्वर स्थान कहलाया. सबसे पहले नेपाल के राजा ने यहाँ आठ कोण वाला मंदिर बनवाया था, जो 1934 के भूकंप में नष्ट हो गया. तत्पश्चात् दरभंगा महाराज ने 1937 में वर्तमान मंदिर का निर्माण कराया. मंदिर का प्रांगण मनोहर है और यहाँ वर्ष भर भक्तों की भीड़ लगी रहती है, विशेष रूप से सावन मास के सोमवारों में लाखों श्रद्धालु जलाभिषेक हेतु आते हैं.

मंदिर के समीप पार्वती मंदिर (निर्माण: 1947 ई.), वनदुर्गा स्थान, उच्चैठ भगवती और उगना महादेव जैसे अन्य पवित्र स्थल भी हैं. माना जाता है कि इसी स्थान पर महाकवि विद्यापति के पिता गणपति ठाकुर ने कठोर तपस्या की थी, जिसके फलस्वरूप विद्यापति का जन्म हुआ. मंदिर परिसर का विशाल नीम वृक्ष और सावन का मेला यहाँ की धार्मिकता और लोकविश्वास के जीवंत प्रतीक हैं. हालाँकि कपिलेश्वर स्थान की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली है, फिर भी यहाँ धर्मशाला, स्वच्छता और पर्यटक सुविधाओं का अभाव है. इसे उचित प्रबंधन और बुनियादी सुविधाएँ विकसित कर अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन केंद्र बनाया जा सकता है.

श्री कपिलेश्वर स्थान

❖ श्री उगना महादेव मंदिर (पंडौल, मधुबनी)

मधुबनी ज़िले के पंडौल प्रखंड मुख्यालय से लगभग तीन किलोमीटर पूर्व, सकरी जंक्शन और पंडौल रेलवे स्टेशन के बीच स्थित उगना हॉल्ट के निकट भगवान महादेव का प्रसिद्ध मंदिर 'उगना महादेव मंदिर' है, जोकि श्रद्धा और भक्ति का अनुपम केंद्र है. देश के कोने-कोने से श्रद्धालु यहाँ दर्शन करने आते हैं. यह स्थल न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है.

इस पावन स्थल से जुड़ी एक अत्यंत मार्मिक और प्रेरक कथा मिथिला की धार्मिक परंपरा का गौरव बढ़ाती है. महाकवि विद्यापति जी प्रारंभ

से ही भगवान शिव के परम उपासक थे. उनकी सच्ची भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन देने का निश्चय किया. किंतु मिथिला की अद्भुत, रमणीय छवि देखकर भगवान के मन में वहीं रहने की इच्छा उत्पन्न हुई. उन्होंने एक साधारण नौकर के वेश में विद्यापति के घर जाकर सेवा करने की इच्छा जताई.

उस समय विद्यापति पूजा में लीन थे. पूजा के उपरांत जब उनके पुराने सेवक ने उस अजनबी व्यक्ति के विषय में बताया, तो महाकवि ने पहले उसे नियुक्त करने से इनकार कर दिया. किंतु जब उसने कहा कि उसे वेतन की आवश्यकता नहीं, केवल भोजन ही पर्याप्त होगा, तो विद्यापति जी ने दया कर उसे अपने यहाँ रख लिया. उसने अपना नाम बताया- 'उगना'. कुछ ही दिनों में उगना ने अपने कार्यकुशलता और निष्ठा से महाकवि का मन मोह लिया. वे घर के समस्त कार्यों में दक्ष हो गए और अंतत: विद्यापति के प्रिय सेवक बन गए.

और एक दिन कुरसों दसौत के राजा जोकि विस्फी ग्राम के जमींदार थे, तसिल वसूलने आए. विद्यापति उस समय पूजा में व्यस्त थे, इसलिए संदेश उगना को दिया गया. पूजा समाप्ति के बाद विद्यापति ने उगना से चर्चा की और अगले दिन तसिल चुकाने का निश्चय किया. अगले दिन दोनों साथ निकले, तसिल चुकाया और तत्पश्चात् विद्यापति ने अपने ससुराल सिंहाइसों जाने की इच्छा प्रकट की. यात्रा के दौरान वे एक ऊँचे टीले (वर्तमान उगना स्थान) पर पहुँचे, जहाँ विश्राम हेतु रुके. तभी विद्यापति ने उगना से जल लाने को कहा. आसपास वन क्षेत्र था, जल कहीं नहीं मिला. तब भगवान शिव ने अपनी शक्ति से वहीं एक कूप प्रकट कर दिया, जिससे उन्होंने जल भरा. जब विद्यापति ने उस जल का स्वाद लिया, तो उन्हें गंगाजल की अनुभूति हुई. यह देखकर उनके मन में उगना के प्रति गहरा संशय उत्पन्न हुआ. बार-बार आग्रह करने पर अंतत: भगवान शिव ने अपनी वास्तविकता प्रकट की, किन्तु एक शर्त रखी कि विद्यापति इस रहस्य को किसी से नहीं कहेंगे. यही स्थान आगे चलकर ''उगना महादेव मंदिर'' के नाम से विख्यात हुआ.

इस मंदिर का निर्माण भव्य ढंग से किया गया है. मुख्य मंदिर के साथ परिसर में पार्वती मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, हनुमान मंदिर और शनि मंदिर स्थित हैं. हाल ही में मंदिर के प्रांगण में कूप से उतर काली मंदिर का निर्माण कार्य प्रगति पर है. श्रद्धालुओं के ठहराव हेतु एक धर्मशाला भी उपलब्ध है, किंतु यहाँ की सुविधाओं का विस्तार और पर्यटन की दृष्टि से विकास अभी भी आवश्यक है. वर्तमान में मंदिर का संचालन एवं देखरेख एक स्थानीय समिति द्वारा किया जाता है. वास्तव में उगना महादेव मंदिर श्रद्धा, भक्ति और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है, जहाँ मिथिला की पवित्र परंपराएँ आज भी साँस लेती हैं और महाकवि विद्यापति की भक्ति गाथा अमर रूप में गूँजती है.

श्री उगना महादेव मंदिर

❖ अहिल्या स्थान (दरभंगा)

कमतौल रेलवे स्टेशन से लगभग तीन किलोमीटर पश्चिम स्थित अहिल्या स्थान त्रेता युग की एक दिव्य कथा से जुड़ा पावन तीर्थस्थल है. यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता मनोहारी है और यह स्थल देश-विदेश के श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र है. मान्यता है कि यही वह स्थान है, जहाँ भगवान श्रीराम, लक्ष्मण एवं गुरु विश्वामित्र मिथिला जाते समय ठहरे थे. यहीं महर्षि गौतम का आश्रम था, जहाँ उनकी पत्नी अहिल्या को शापवश पत्थर बनना पड़ा था. श्रीराम के चरणस्पर्श से अहिल्या को पुन: मुक्ति मिली , यही घटना इस स्थान को पवित्र बनाती है.

यहाँ अहिल्या माता मंदिर और गौतम आश्रम विद्यमान हैं. मंदिर में श्रीराम-लक्ष्मण सहित चारों भाइयों, गौतम-अहिल्या, अंजनी और बाल हनुमान की मूर्तियाँ स्थापित हैं. समीप ही संत रामानुज परंपरा के अनुयायी श्री प्रभाकर मुकुंद मोरो द्वारा निर्मित 20 फीट ऊँची 'राम नाम बखारी' स्थित है, जिसमें करोड़ों बार लिखा गया 'सीताराम' सुरक्षित है. मंदिर परिसर में अहिल्या कुंड, प्राचीन नक्काशीदार मंदिर, राजा द्वारा निर्मित पोखरा तथा संस्कृत विद्यालय भी हैं. यद्यपि इसे पर्यटन केंद्र घोषित किया गया है, परंतु सड़क, शौचालय और रख-रखाव जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी बनी हुई है.

अहिल्यास्थान

संक्षेप में अहिल्या स्थान न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि भारतीय संस्कृति, पुरातत्व और लोकश्रद्धा का जीवंत प्रतीक भी है. यह स्थल रामायण काल से संबद्ध है. कथा है कि महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या यहाँ पत्थर का रूप धारण कर तपस्यारत थीं और भगवान राम के चरणस्पर्श से उन्हें मुक्ति मिली. यह स्थान आज अहिल्या स्थान मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है. यहाँ प्रतिवर्ष राम नवमीं और अहिल्या उत्सव मनाया जाता है.

❖ श्री गौतम आश्रम स्थल (गौतम कुंड)

अहिल्या स्थान से लगभग तीन किलोमीटर पश्चिम स्थित गौतम कुंड महर्षि गौतम की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महर्षि गौतम प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में अपने आश्रम अहिल्या स्थान से यहाँ स्नान, पूजा और तप के लिए आते थे. इस स्थान के समीप कभी क्षीरदेई (प्राचीन दूधमती नदी) बहती थी, जिसके जल का स्वाद दूध जैसा बताया गया है. बाद में नदी की धारा परिवर्तित होने से यह कुंड से लगभग 300 मीटर पूर्व की ओर चली गई. गौतम कुंड में सात जलस्रोत हैं, जिनसे वर्षभर जल निकलता रहता है. इस जल का स्रोत पाताल लोक से माना जाता है. यहीं महर्षि गौतम ने अपना गुरुकुल स्थापित किया था, जहाँ वे विद्यार्थियों को शास्त्रों की शिक्षा देते थे. शास्त्रों के अनुसार वे न्याय शास्त्र के प्रणेता थे.

वर्तमान में यहाँ श्रीराम-जानकी, हनुमान जी और महर्षि गौतम की प्रतिमाएँ स्थापित हैं. स्थानीय ग्रामवासियों विशेषकर ब्रह्मपुरा के सहयोग से करोड़ों रुपये की लागत से एक भव्य मंदिर का निर्माण कार्य प्रगति पर है. हालाँकि यहाँ तक आने वाली सड़क की स्थिति अभी सुधार की माँग करती है, फिर भी यह स्थल अपने धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के कारण पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित होने की अपार संभावना रखता है.

श्री गौतम आश्रम स्थल

❖ कालीदास डीह, उच्चैठ (जिला - मधुबनी)

बेनीपट्टी अनुमंडल से लगभग पाँच किलोमीटर पश्चिम स्थित कालीदास डीह (उच्चैठ) महान संस्कृत कवि महाकवि कालिदास से संबंधित ऐतिहासिक स्थल है, जिसकी प्राचीनता लगभग 2200 वर्ष मानी जाती है. कथा के अनुसार उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के दरबार के कवि कालिदास अपनी विदुषी पत्नी विद्योतमा के अपमानजनक वचनों से आहत होकर ज्ञान की खोज में निकले और इस स्थान पर पहुँचे. यहाँ उस समय एक प्रसिद्ध गुरुकुल (उच्चपीठ) था, जिसके नाम पर बाद में इस ग्राम का नाम ''उच्चैठ'' पड़ा. यहीं रहकर कालिदास ने अध्ययन किया, विद्वता अर्जित की और पुन: अपनी पत्नी से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की.

यह स्थल शांत, रमणीय और ज्ञान-साधना का केंद्र माना जाता है. यहाँ की पवित्र वायु और वातावरण साधकों को मानसिक शांति प्रदान करते हैं. देश-विदेश से अनेक श्रद्धालु और पर्यटक यहाँ आकर मिट्टी लेकर जाते हैं, जिसे वे पवित्र मानते हैं. यह स्थल सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान है तथा मिथिला की गौरवशाली विद्या-परंपरा का प्रतीक है.

कालीदास डीह, उच्चैठ

❖ उच्चैठ भगवती मंदिर

कालीदास डीह से लगभग 1 किलोमीटर उत्तर में स्थित यह प्राचीन मंदिर माँ भगवती को समर्पित है. यह स्थल उच्च शक्ति पीठ के रूप में विख्यात है और विशेषकर आश्विन मास में दुर्गा पूजा के अवसर पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रहती है. यहाँ देश-विदेश से लोग आते हैं और पूजा-अर्चना कर मनोवांछित फल पाते हैं.

उच्चैठ भगवती मंदिर

❖ राजनगर

मधुबनी से 15 किमी उत्तर में स्थित राजनगर दरभंगा के महाराजों द्वारा बसाया गया था. यहाँ का राज परिसर विशाल, भव्य और कलात्मक मंदिरों एवं राज भवनों से परिपूर्ण है. 1934 में महात्मा गांधी भी इसे देखने आए थे. परिसर में वर्तमान में S.S.B. का कैंप है, जिससे पर्यटन गतिविधियों पर प्रभाव पड़ा है.

❖ सौराठ

मधुबनी-जयनगर रोड पर स्थित, सोमनाथ महादेव मंदिर और विवाह हेतु मैथिली ब्राह्मणों द्वारा आयोजित वार्षिक सभा का स्थल.

❖ द्रव्येश्वर नाथ महादेव मंदिर, देवकुलीधाम, बिरौल

त्रेता युगीन प्राचीन शिव मंदिर, जहाँ साल भर श्रद्धालुओं का ताँता रहता है.

❖ खुदनेश्वर स्थान, समस्तीपुर

गंगा-यमुना तहजीब से सुशोभित शिव मंदिर, जिसमें शिवलिंग और उपासक की कब्र है. अन्य प्रमुख स्थल, समस्तीपुर जिला - उदयनाचार्य डीह, करियन, रोसड़ा, पांडव डीह, उगना स्थान, सिसईगढ़.

❖ दरभंगा राज किला

1934 के भूकंप के बाद निर्मित ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के पश्चिम में स्थित. इसमें भव्य मंदिर और ऊँची चारदीवारी है.

❖ श्यामा मंदिर

दरभंगा राज किला के प्रांगण में मिथिला की गौरवशाली, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक परंपरा में तंत्र साधना का महत्वपूर्ण स्थल श्यामा मंदिर अवस्थित है. इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महराजाधिराज डॉ. कामेश्वर सिंह ने अपने पिता, स्वर्गीय महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह की चिता पर विशुद्ध तांत्रिक रीति से भव्य मंदिर का निर्माण कराया. यह मंदिर न केवल तांत्रिक साधना और पूजा-अर्चना का केंद्र है, बल्कि मिथिला की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को संरक्षित करने वाला प्रमुख स्थल भी है. मंदिर का स्थापत्य, कलात्मक डिज़ाइन और धार्मिक महत्त्व इसे श्रद्धालुओं और पर्यटकों दोनों के लिए आकर्षक बनाता है.

श्यामा मंदिर

निष्कर्षत: मिथिलांचल विशेषकर दरभंगा प्रमंडल, धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है. यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल मौजूद हैं, जो स्थानीय और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं. कपिलेश्वर महादेव और उगना महादेव मंदिर अपने प्राचीन महत्व तथा त्रेतायुगीन कथाओं के कारण श्रद्धालुओं का प्रमुख केंद्र हैं. अहिल्या स्थान और गौतम कुंड महर्षि गौतम की तपस्थली तथा राम, सीता और हनुमान से जुड़ी कथाओं के कारण अद्वितीय हैं. महाकवि विद्यापति का जन्मस्थान कालीदास डीह, उच्चैठ भगवती मंदिर और राजनगर के राज परिसर सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं. सौराठ में विवाह पंजीकरण और सोमनाथ महादेव मंदिर, द्रव्येश्वर नाथ महादेव मंदिर, खुदनेश्वर स्थान, दरभंगा राज किला, श्यामा मंदिर आदि पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थल हैं.

मिथिलांचल के इन दर्शनीय स्थलों का समुचित विकास और संरक्षण इस क्षेत्र के पर्यटन को नई दिशा दे सकता है. बिहार सरकार द्वारा निर्मित राष्ट्रीय और राज्य राजमार्ग, दरभंगा हवाई अड्डा और अन्य आधारभूत संरचनाओं के साथ-साथ निजी निवेशकों द्वारा होटल, हॉस्पिटैलिटी और अन्य सुविधाओं का विकास इस क्षेत्र को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है. इसके परिणामस्वरूप न केवल स्थानीय रोजगार और आय में वृद्धि हो रही है, बल्कि बिहार की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण करते हुए राज्य को आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाया जा रहा है. इस प्रकार जब मिथिलांचल की समृद्ध विरासत और प्राकृतिक सुंदरता आधुनिक पर्यटन सुविधाओं से संलग्न होती है, तो यह राज्य के पर्यटन उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है.

एल. बी. झा
उप क्षेत्रीय प्रमुख
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

ज़रा सी

खिले जीवन का, आज और कल
पिघलती रहे, रंज और उदासी।
मिले खुशियों से भरे, सावन का बादल,
घुलती रहे जीवन में, रंग ज़रा सी।।

कमी नहीं लोगों की, इस जहां में,
जो गिनाएं, महज़ ख़ामियां।
हामीं सही जो, सोचें इनकी कहां से,
ना भरे इनकी, हां में हामियां।।

हुए शुरू सिलसिले, मुलाकातों के,
ख़ुद से मिलने की रुत है आई।
आने लगे काफ़िले, सवालातों के,
सुध ज़माने की, जो हमने हटाई।।

क्यूं रहें, बेकल इस क़दर,
मिली जो, जिंदगी ही ज़रा सी।
यूं ही रहें, बनकर सिकन्दर,
लें अपनी, तिश्नगी की तलाशी।।

खिले जीवन का, आज और कल,
पिघलती रहे, रंज और उदासी।
मिले खुशियों से भरे, सावन का बादल,
घुलती रहे जीवन में रंग ज़रा सी.....

भारती नीतू साहू
पत्नि, श्री तेजराम साहू, वरिष्ठ प्रबंधक,
आंचलिक कार्यालय, रायपुर

!! गौरव शाली विरासत ही हमारी पहचान !!

1911 से विश्वास की नींव पर खड़ा,
रखता हर जन मानस का ध्यान है..!
पहला स्वदेशी बैंक हमारा ,
भारतीय बैंकिंग का अभिमान है....!!

डिजिटल की इस दुनिया में,
सेन्ट ईज़ मोबाइल बैंकिंग से.....!
अपनी ग्राहक सेवा को
बनाता और आसान है.....!!

सेन्ट सरल, सेन्ट जीएसटी,
सेन्ट ओडी एवं मोर्टगेज बिज़नेस का,
उद्यमी एवं उद्योग की उन्नति में,
रहता अभूतपूर्व योगदान है.....!!

सुकन्या समृद्धि, सेन्ट क्वीन, सेन्ट गृह लक्ष्मी..!
मातृ शक्ति का सदैव करते हम सम्मान हैं....!!

सेन्ट विद्यार्थी से सपनों को मिलती नई उड़ान है ,
सेन्ट्रल किसान क्रेडिट कार्ड किसानों की शान है .... !
क्या बूढ़े क्या बच्चे सब करते इसका गुणगान हैं,
ऐसी गौरवशाली विरासत ही हमारी पहचान .... !!

गौरव खोबरे
सहायक प्रबंधक
शाखा शुजालपुर मण्डी, भोपाल

मेगा कृषि ऋण संपर्क कार्यक्रम, वाराणसी

ऋण एवं वित्तीय साक्षरता अभियान, समस्तीपुर

मेगा आउटरीच कार्यक्रम, मुंगेर

मेगा आउटरीच कार्यक्रम, लखीसराय

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा कार्यपालक निदेशकों की अध्यक्षता में देश भर में आयोजित विभिन्न टाउन हॉल एवं मेगा आउटरीच कार्यक्रमों की झलकियां

टाउन हॉल बैठक, हैदराबाद

टाउन हॉल बैठक, मुंबई

मेगा कृषि ऋण आउटरीच कार्यक्रम, नासिक

मेगा एमएसएमई ऋण आउटरीच कार्यक्रम, विशाखापट्टनम

एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम, अहमदाबाद

मेगा एमएसएमई ऋण आउटरीच कार्यक्रम, लखनऊ

मेगा रिटेल ऋण आउटरीच कार्यक्रम, मुंबई

स्थापना दिवस की झलकियां: विभिन्न अंचल

स्थापना दिवस की झलकियां: विभिन्न अंचल

भोपाल

दिल्ली

हैदराबाद

रायपुर

पुणे

पटना

खाना खजाना

गुजराती कढ़ी

सामग्री : 1 कप दही, 3 टेबल स्पून बेसन, ½ टी स्पून अदरक पेस्ट, 1टी स्पून शक्कर, 2 कप पानी, 1 टेबल स्पून घी, ½ टी स्पून राई, ½ टी स्पून, जीरा, ¼ टी स्पून मेथी 2-3 लौंग, 1 छोटी दालचीनी का तुकडा, 1 सूखी लाल मिर्च, हींग, कढ़ी पत्ता, 2 हरी मिर्च बीच में से कट करके, नमक स्वादानुसार, 2 टेबल स्पून हरा धनिया बारीक कटा हुआ.

विधि : सबसे पहले एक बर्तन में 1 कप दही लेना है उसमें 3 टेवलस्पून बेसन और अदरक पेस्ट तथा शक्कर डाल देना है. 2 कप पानी डालकर मिक्स करना है. कहीं भी गांठ न रहने पाए . फिर एक कड़ाही में घी गर्म करके उसमें राई, जीरा, मेथी, लौंग, दालचीनी, लाल मिर्च, हींग, कढ़ीपत्ता और हरी मिर्च डाल दें फिर इसमें दही और बेसन का जो मिश्रण हमने बनाया था वह डाल कर अच्छी तरह से मिला लें. धीमी आंच पर 15 मिनट तक पकने दें और उसे हिलाते रहें. फिर इसमें नमक डालें और 2 मिनट तक उबाल आने दें. हरी धनिया डाल दें. फिर इस कढ़ी को गरम-गरम चावल के साथ परोसें.

लाल कद्दू की मीठी पुरी

सामग्री: 1 कटोरी लाल भोपला यानि लाल कद्दू , आधा कप गुड़, इलायची पावडर , 2 कप गेहूँ का आटा, नमक, बेकिंग सोडा, सौंफ

विधि: पहले कद्दू को छोटे-छोटे टुकड़े में काट लें और बाद में उसे अच्छे से उबाल लें. ठंडा होने पर उसे मसलकर अच्छी पेस्ट बना लें. गुड़ को भी अच्छे से ग्रेट कर लें और गुड़ को घुलने दें. गुड़ को कद्दू के पेस्ट के साथ मिला लें उसमें चुटकीभर नमक डालें और सौंफ तथा इलायची पावडर डालकर मिला लें. आटा डालकर सख्त गूंथ लें और उसे थोड़ी देर के लिए ढक कर रख दें. आटे की छोटी छोटी लोई बनाकर पुरी की तरह बेल लें. फिर इसे फ्राइंग पैन में डालकर तल लें.

यह पुरी नाश्ते के समय या चाय के साथ खाई जाती है.

व्हाइट ढोकला हरी चटनी के साथ

सामग्री: 1 कप सूजी, ½ कप दही, स्वादानुसार नमक, ½ टीस्पून इनो, थोड़ी राई, थोड़ी लाल मिर्च, 1 इंच अदरक, 1 हरी मिर्च , 2 टीस्पून तेल.

विधि: सूजी में दही मिलाकर मिक्स कर लें. थोड़ा सा पानी डालकर स्मूथ बैटर बना लिजिए. फिर इसमें अदरक और हरी मिर्च एकदम बारीक करके मिला लें. नमक डालें. इनो डालकर इसे मिक्स करें. प्लेट को तेल लगाकर ग्रीस कर लें और यह बैटर प्लेट में डाल दें. अब इसके उपर थोड़ा सा लाल मिर्च का पावडर छिड़क दें और स्टीमर में 15 मिनट के लिए रख दें. चाकू या टूथपिक की सहायता से देख लें की बैटर पक गया है या नहीं. पकने के बाद एक पैन में तेल गरम करके राई और कढ़ी पत्ते का तड़का देकर चटनी के साथ परोसें.

सुश्री दिव्या दोशी
वरिष्ठ प्रबंधक
एसपीबीटी महाविद्यालय

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे बैंक के निरीक्षण

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

अब ज़िंदगी आसान

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सुपर ऐप के साथ!

आसान बैंकिंग
डिपॉजिट, लोन और भुगतान कभी भी, कहीं भी करें.

शॉपिंग पर खास फायदे
यात्रा, शॉपिंग और मनोरंजन पर शानदार छूट पाएं.

स्मार्ट निवेश
म्युचुअल फण्ड आईपीओ और बेहतरीन निवेश विकल्प अपनाएं.

सुरक्षित भविष्य
जीवन और अन्य बीमा कवर से निश्चिंत रहें.

Ventures

अपनी सुरक्षा के लिए सावधानी बरतें, Cent eeZ ऐप सिर्फ इन आधिकारिक स्रोतों से डाउनलोड करें

GET IT ON Google Play
Download on the App Store

किसी अनजान लिंक पर क्लिक न करें और व्हॉट्सऐप किसी भी अनजान स्रोत से APK फाइल डाउनलोड न करें.

अपनी डेबिट/क्रेडिट कार्ड की सीवीवी, पिन जैसी गोपनीय जानकारी किसी से साझा न करें.

हमारी वेबसाइट पर डिजिटल माध्यम से बचत खाता खोलें – www.centralbankofindia.co.in

टोल-फ्री नंबर – **1800 30 30**